बरवाला बड़ी मस्जिद के इमाम से बने आर्य उनके विचार व मनोव्यथा

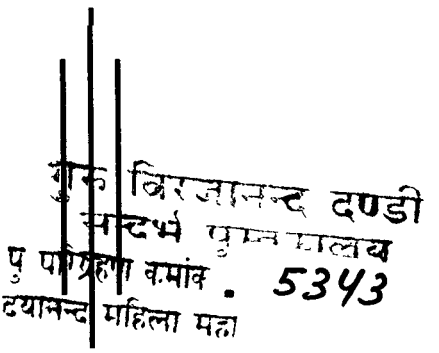

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु. परिग्रहण क्रमांक . 5343
दयानन्द महिला महा

-: लेखक :-

पं. महेन्द्र पाल आर्य (पूर्व मौलवी महबूब अली)

इमाम बड़ी मस्जिद, बरवाला, जिला-बागपत, उत्तर प्रदेश

वर्तमान पता

26-ए, मीठा पानी, अग्र नगर प्रेम नगर-III,

नांगलोई, दिल्ली - 110086

सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक

पं. महेन्द्र पाल आर्य ;पूर्व मौलवी महबूब अली

इमाम बड़ी मस्जिद, बरवाला, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश

स्थायी पता - २६–ए, मीठा पानी, अग्र नगर प्रेम नगर–III नांगलोई, दिल्ली–८६

E-mail : mahendrapalarya@hotmail.com,

Mob.No. 9810797056,9810879056

Printed at : Samrat Printer & Binder II/1606, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002, Phone : 23274880, 9312547568 (M)

लेजर टाइप सैटिंग

वैदिक प्रकाशन

१३०१, बाजार संगतराशान, पहाड़गंज, नई दिल्ली–११००५५

दूरभाष : ०११–६५३६५३१२, ४१५४११३२

संस्करण:

द्वितीय २२०० प्रतियाँ

विक्रमी नव संवत्सर २०६५ एवं आर्य समाज स्थापना दिवस

पुस्तक प्राप्ति स्थान

वैदिक प्रकाशन

१३०१, बाजार संगतराशान, पहाड़गंज, नई दिल्ली–११००५५

दूरभाष : ०११–६५३६५३१२, ४१५४११३२

आर्य समाज

आर्य नगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली–११००५५

दूरभाष : ०११–२३५१४५१७, मो. ६३१२५६६१६६

मूल्य

६०/– साठ रूपये

पुस्तक सहयोग में आभार

*****

मैं ईश्वर की कृपा से 22-23 वर्ष पहले ही विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से अपने विचार समग्र आर्य जगत को देता रहा। ऋषि सिद्धान्त रक्षक पत्रिका मासिक का मैं पांच वर्ष तक सम्पादन करता रहा आर्य जगत में स्पष्ट वक्ता व लेखक के रूप में लोग मुझे जानते हैं।

इस काम में आज सफलता हाथ लगी है। मुझे लेखन कार्य व इस लेखनी को समस्त नर-नारियों तक पहुँचाने का दायित्व श्री बाबू पितृ तुल्य मदन लाल जी सैनी तथा भाई ई. सुरेश सैनी जी, भाई श्री नरेश सैनी जी का रहा। यह परिवार वैदिक मान्यता के लिए अपना सर्वस्व त्यागने को तत्पर रहे हैं। मुझे हमेशा समग्र परिवार से प्रेरणा व हर प्रकार की मदद मिलती रही। बल्कि इस पुस्तक को प्रकाशित करने का श्रेय मैं पितृवत बाबू मदन लाल जी सैनी को देता हूँ।

इस पुस्तक को छपवाने में पहला सहयोग नेदरलण्ड, रोटरदाम आर्य सभा के संचालक आचार्य पं. वीम जयपाल जी का रहा। दूसरा सहयोग श्री आचार्य नरदेव जी यजुर्वेदी तथा उनके सम्बन्धी श्री मुकेश बिहारी, हेरमन कोस्तर स्तात, 370 व 375, 2571 पी.एन. देनहाक होलैण्ड वासी का रहा उनके समग्र परिवार जो ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त तथा वैदिक मर्यादा का अक्षर स: पालन करने वाले व ऋषि दयानन्द के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए जो परिवार प्रतिज्ञाबद्ध हैं समस्त परिवार का सहयोग मिला है। श्री आचार्य नरदेव जी का सहयोग सराहनीय है और आचार्य पं. बिसेश्वर जी, वैदिक सविता संस्थान रोटरदाम के सौजन्य से जो विलेजर स्टेट 54-ए, रोटरदाम का सहयोग रहा। काफी दिनों से लोगों की मांग थी कि मैं अपने विचार पुस्तक के माध्यम से जनता को दूँ।

बहन समृद्धि जी (सोनिया) को जो कम्प्यूटर पर हाथ रखकर कुरान के अरबी अक्षरों का ध्यानपूर्वक टाइप करती रहीं और अपनी जिम्मेदारी के साथ मेरी पुस्तक को निकालने में मदद की। मैं सभी सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आचार्य भवभूति जी का भी भरपूर सहयोग मिला।

यदि पुस्तक में किसी प्रकार की त्रुटि हो तो कृपया नि:संकोच सुझाव देकर कृतार्थ करें और इन त्रुटियों के लिए मुझे क्षमा करें।

विषय सूची

✧ कुछ हक परस्त की बातें 5-9
✧ ऋषि दयानन्द की दृष्टि में कुरान 10-15
✧ महजब के नाम पर शूल 16-19
✧ मजहबी शिक्षा ही कट्टरवाद 20-24
✧ कोई भी मजहबी ग्रन्थ ईश्वरीय नहीं 25-30
✧ आर्यो के कर्मकाण्ड में एकरूपता न होने के लिए दोषी कौन 31-36
✧ अब देखें वैदिक मान्यता क्या है? 37-42
✧ दुष्कर्म निवारण व पाप मोचन का रक्षा कवच 43-49
✧ आखिर आर्य समाज ही क्यों बनाया ऋषि ने 50-54
✧ आर्य समाज ही क्यों? 55-58
✧ आर्य समाज में हावी कौन? 59-63
✧ घर को आग लगी घर के चिराग से 64-68
✧ संन्यास के नाम पर वैदिक मर्यादा पर कुठाराघात 69-73
✧ अग्निवेश डॉट कॉम में आखिर क्या है? 74-78
✧ लाल वस्त्रधारी को साथ लिए फिर रहे लाल बुझक्कड़ 79-84
✧ आर्य समाज में वह आग लगी जिसमें धुंआ नहीं 85-89
✧ अग्निवेश के बयान में कितना झूठ कितना सच? 90-94
✧ टंकारा भी राजघाट बनने के कगार पर 95-99
✧ यह फरियाद मैं किससे करूं 100-105
✧ लाल पगड़ी में सर्वधर्मी चेतना का स्वांग 106-110
✧ ऐष्णाओं की तृष्णा की बुझाने की दौड़ में अग्निवेश। 111-115
✧ अग्निवेश न तो मार्क्सवादी है न ही समाजवादी 116-120
✧ अरे गाफिलों एक हो जाओ अगर मार गैरों की खानी नहीं 121-126
✧ इन बेजुबानों को काटने से पहले अल्लाह से डरे 127-130
✧ हिन्दू मन्दिरों के ढाक-ढोल एक-एक कर खोली सभी पोल 131-134
✧ आखिर किनके लिए हैं यह सभी योजनाएं? 134-139
✧ किस बात की आजादी? 140-146
✧ परमात्मा का एक ही उपदेश अपनी सन्तानों के लिए पर्याप्त है 147-150
✧ तथाकथित आर्य समाजी बनाम रट्टू तोता 151-157

कुछ हक परस्त की बातें

*****

मैं आर्य समाज में आने से पहले, इस समय जिला बागपत बड़ौत के पास बरवाला में बड़ी मस्जिद का इमाम था। उन दिनों मैं मानवता का प्रचार करता था कुरान के आधार पर। बचपन से उस समय तक मैं यह समझता था कि शायद यह उपदेश किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं है। मैं प्रातः और सायं दोनों समय ग्रामवासियों को सुनाया करता था। कि नादान पक्षी भी चहचहा रहे है, और मानव होकर बिस्तर में पड़े रहे, यह शोभायमान नहीं है। हमें बिस्तर छोड़कर अल्लाह की इबादत करनी चाहिए। हिन्दू मन्दिर में जायें, मुसलमान मस्जिद में आवें, लोग बड़े प्रसन्न थे।

दरअसल कुरान में अल्लाह ने फरमाया, कुन तुम खैरा उम्मतिन उख रिजत लिन्नासे ता मुरूना बिल मारूफ व तन हावना अनिल मुनकर = सुरा = बकर...

अर्थ :- तुम में से अच्छे लोग वहीं हैं जो औरों को बुराइयों से रोके अच्छे कांमों की तरफ ध्यान दिलावें, वही मानव उत्कृष्ट हैं। अर्थात् मेरा उपदेश मात्र मुसलमानों के लिए नहीं था, मानव मात्र के लिए था। अतः लोगों का प्रसन्न होना स्वाभाविक ही था।

उसी बरवाला के मास्टर श्री कृष्ण पाल सिंह जो उन दिनों में गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ में विज्ञान के अध्यापक थे। वे मेरे उपदेश को सुनकर एक दिन मुझे गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ में आने का निमन्त्रण दिया। मैं बंगाल का रहने वाला हूँ जातीयता भेदभाव हम मानते ही नहीं । मैं एक दिन गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ पहुंचा। शाम का समय था मुझे एक कमरे में ठहराया गया । मैंने पहले वजू बनाकर मगरिब की नमाज अदा की फिर निकल कर घूमने लगा । यज्ञशाला में सभी बच्चे, अध्यापक अधिकारी बैठे थे । संध्या कर रहे थे, मैं घूम-घूम कर देखने लगा। फिर बैठकर उपदेश सुनने लगा उसके बाद भोजन की घन्टी लगी। मैंने श्री कृष्ण पाल जी के साथ भोजन किया। अपने कमरे में गया नमाज़ ईशा अदा की। कृष्ण पाल जी ने इतने में मेरे पास आकर कहा मौलवी साहब चलिये

अपने लोगों से आपका परिचय कराते हैं, मैं चल पड़ा। गुरूकुल के मंत्री धर्मवीर जी से मिलाया, स्वामी शक्तिवेश जी से मिलाया गया। स्वामी जी ने मुझसे पूछा आपका उद्देश्य क्या है? मैंने कहा दुनिया वालों को बुराई से रोकना और अच्छाई की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देना। स्वामी शक्तिवेश जी बड़े सन्तुष्ट होकर कहने लगे। हम लोग भी इसी प्रयास में लगे है। समग्र आर्य जनों का उद्देश्य यही है। जब दोनों का मकसद एक है फिर हम दोनों अलग क्यों रहते हैं? मैंने कहा सोच कर बताऊंगा, अब तक रात काफी हो चुकी थी, मैं अपने कमरे में जा कर सो गया।

प्रात: 4 बजे मैं भी उठा नमाज फजर की अदा की, निकलकर बच्चों का व्यायामादि देखा। यज्ञ और संध्या भी देखा। प्रात:राश लिया और अध्यापकों से परिचय हुआ, चर्चायें होती रही। मैं अब तक जानता था जो कुछ भी है वह कुरान है और इस्लाम है इसके अतिरिक्त बाहर किसी के पास कुछ भी नहीं है। क्योंकि बचपन से अब तक हमें तालीम ही यही मिली थी। मुझे क्या पता था? कि इससे बाहर भी दुनिया हैं। बाद में मुझे पता चला कि स्वामी विवेकानन्द को शायद इसीलिए ही कहना पड़ा होगा, कुएं में रहने वाले मेंढक को समुद्र का पता नहीं। खैर मैं जब गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ से जाने लगा तो श्री धर्मवीर जी ने मुझे उर्दू वाली सत्यार्थ प्रकाश भेंट की।

मैं बड़ौत के लिए बस में बैठकर किताब को देखने लगा तो अन्तिम समुल्लास में कुरान की आयात पढ़ने को मिली। मैं आश्चर्यचकित हुआ, क्योंकि टाइटल पृष्ठ में एक सन्यासी काफिर का चित्र और उसकी लिखी किताब में आयतें कुरान ? कौतुहल वश उसी को पढ़ना चाहा। स्वामी जी के जो तर्क हैं, उसने हमें अंधकार से निकाल प्रकाश में ला खड़ा किया।

उसे आधार बनाकर मैंने पच्चीस जगह बड़े-बड़े मदरसों के मुफतियों को सवाल भेजां। ऊपर लिखा मैं कौन लिख रहा हूँ यह न देखें, मैं क्या लिख रहा हूँ उस पर विचार कर मुझे सही जवाब दें। अगर कुरान पूर्ण है तो जवाब भी आना चाहिये। सात जगह से उत्तर मिला मौलाना आप इस काबिल नहीं कि सवालों का जवाब दिया जावे। आप ईमान से हाथ धो बैठे हैं, आप मुरतिद हो गये हैं आदि।

जिस दिन मैंने वैदिक धर्म को स्वीकार किया। शुद्धि यज्ञ के पश्चात् स्वामी शक्ति वेश जी ने जनता को सम्बोधित करने को कहा। हजारों की संख्या में नर-नारी, हिन्दू-मुस्लिम जनों के सामने मैंने कहा, मैं धर्म नहीं बदल रहा हूँ क्योंकि धर्म का बदलना सम्भव नहीं। धर्म मानव मात्र के लिए एक है, मैं समाज बदल रहा हूँ। मुस्लिम समाज अनपढ़ व अंधविश्वासियों का समाज है, आर्य समाज पढ़े लिखे बुद्धिजीवियों का समाज है। मैं बाकी जिन्दगी पढ़े लिखे अंधविश्वास मुक्त नेक लोगों के साथ गुजारना चाहता हूँ। मैं गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ में रहने लगा। मुझे एक पक्ष का तो ज्ञान था ही, अर्थात् कुरान व बाईबिल की पढ़ाई मैंने की थी, पर वेद व वैदिक सिद्धान्त के बारे में मैं अनभिज्ञ था।

स्वामी शक्तिवेश जी ने चाहा मैं दोनों पक्ष का ज्ञाता बनूं। आर्य जगत में एक विद्वान के रूप में निखरूं, तुलनात्मक अध्ययन मेरा हो, विश्व के सभी मत मतान्तरों का मैं जानकार बनूं।

स्वामी जी मुझे आर्य जगत के जाने माने विद्वानों के सानिध्य में ले जाने लगे। सबसे पहले अमर स्वामी जी से मिलाया, अमर स्वामी जी ने कहा मौलाना कुछ सुनायें - मैंने कहा अल्लाह का फरमान है, वल जा रिजिल कुरबा, वलजा रिल जुनुब, वस्साहिबे बिल जम्बे वब निस्साबील, इसमें अल्लाह ने पड़ोसी को तीन हिस्सों में बांटा, एक वो जिसके साथ खून का रिश्ता है। दूसरा वह जो मात्र पड़ोसी है। तीसरा वह साथ पढ़ने वाले साथी, काम काज करने वाले साथी, सफर करने वाले साथी जो मुस्लिम और गैर मुस्लिम में भेद नहीं एक दूसरे के हमदर्द बने, कोई तखसीस न करे अर्थात् भेदभाव न करे।

इतना सुनते ही स्वामी जी ने कहा, मौलाना अल्लाह ने कहा-लायत्ता खिजिलमोमेनुनलकाफेरीना आऊ लिया आ मिन दू निल मुमेनीन, का-लफजी मानी क्या है ?

मैंने कहा दोस्ती न रक्खो मोमीनों को छोड़ कर काफीरों से, क्योंकि अल्लाह तुम से दोस्ती नहीं रक्खेंगे। अर्थात् मुसलमान मुसलमानों को छोड़ काफिरों को दोस्त न बनाओ।

स्वामी जी ने यही आयत और भी सुनाकर कहने लगे, अब किस आयत को माना जाये? जहां मुस्लिम गैर मुस्लिम में भेद नहीं किया उसे? या गैर मुस्लिमों से दोस्ती न रक्खे उसे?

मैंने अमर स्वामी जी से निरन्तर अपना सम्पर्क बनाये रक्खा। गुरू भी उन्हें बनाया। स्वामी शक्ति वेश जी पीठ थपथपाते रहे। मैं स्वामी शक्ति वेश जी के साथ 7 नम्बर, जंतर मंतर रोड, दिल्ली में स्वामी अग्निवेश जिन्होंने जनता दल कार्यालय को कब्जा किया हुआ है, से मिलने को गया। मेरा परिचय पाकर अग्निवेश जी ने कहा नाम बदलने की कोई जरूरत नहीं आप मौलवी महबूब अली बनकर ही काम करेगें मुसलमानों में मुसलमान बनकर प्रचार करेगें।

पुन: मैंने अमर स्वामी जी को बताया। अमर स्वामी जी ने मुझे कहा बेटा अग्निवेश तो वैदिक संस्कृति को जानता ही नहीं उनके पास मत जाना। आप भारत में हैं, आपका नाम भारतीय होना चाहिए न कि अराबियन? शक्ति वेश जी ने आप का नाम अच्छा चुना है। स्वामी अग्निवेश जी वाम मार्ग के पक्षधर है अन्यों के संस्था को कब्जा करना ही इनकी प्रवृत्ति है। जैसा जनता दल के कार्यालय को कब्जा किया, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में भी जबरन कुछ हिस्से को कब्जा करने का प्रयास किया था। शक्तिवेश जी ने उनके बोर्ड को इन्द्रप्रस्थ से उखाड़ कर फेंक दिया था और अब सार्वदेशिक पर भी अवैध कब्जा है। गाजियाबाद संन्यास आश्रम में अमरस्वामी जी के अतिरिक्त पं. उदय वीर जी शास्त्री दर्शनाचार्य, स्वामी प्रेमानन्द जी, स्वामी मुनिश्वरानन्द जी, जो इस समय हापुड़ आर्य समाज में हैं, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी भीष्म जी घरोण्डा, स्वामी रामेश्वरानन्द जी आदि, पं. युधिष्टिर मीमांसक जी आचार्य विश्वबन्धु जी, पं. शान्ति प्रकाश जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी अर्थात् उन दिनों के चोटी के विद्वानों के सानिध्य में ले जाना स्वामी शक्ति वेश जी का प्रयास रहा। सार्वदेशिक सभा प्रधान लाला राम गोपाल जी, शाल वाले व श्री ओम प्रकाश जी त्यागी ने सार्वदेशिक सभा में मुझे अपनी सभा का प्रचारक नियुक्त किया, उन दिनों में श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी भी मेरे साथ सभा के प्रचारक थे सार्वदेशिक सभा ने मुझे 10

जनवरी 1985 को आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल भेज दिया। मैं छः वर्ष तक निरन्तर बंगाल में प्रचार कार्य करता रहा परन्तु आर्य समाज में मेरा उतना उपयोग नहीं हुआ जितना कि अन्य हिन्दू संगठनों ने किया।

आसाम, नागालैण्ड, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, बंगाल में विश्व हिन्दू परिषद् वनवासी कल्याण आश्रम, भारत सेवाश्रम संघ, विद्यार्थी परिषद, सीमान्त शान्ति सुरक्षा समिति आदि ने उपयोग किया, परावर्त्तनादि का खूब काम होता रहा आदि।

एक के आश्वासन पर कलकत्ता छोड़ कानपुर आये। वह व्यक्ति कानपुर विकास प्राधिकरण के चीफ इंजीनियर थे, मुझे ही नहीं, मंच से जनता को भी दिक भ्रमित करते रहे, महेन्द्र पाल जी का मकान बनाऐंगे आदि। परन्तु चार वर्ष मैं किराये के मकान में रहा। किराया भी अपने आप देता रहा, आवासीय व्यवस्था कुछ भी नहीं हो पाई।

इतने में गाजियाबाद से स्वामी शिवानन्द जी का पत्र मिला यहां आ जायें सारी व्यवस्था मेरी है। मैं फिर कानपुर से गाजियाबाद आ गया। यहां आश्रम काण्ड के बाद फिर दिल्ली आ गया। यह मैंने अपनी यात्रा का वर्णन किया है।

ऋषि दयानन्द के दृष्टि में कुरान और उसकी समीक्षा को पढ़कर सत्य को ग्रहण करने में देर न किया

*****

विश्व के आंगन में मानव समाज जाति, सम्प्रदाय, वर्ग, उपवर्ग, उच्चवर्ग, निम्न वर्ग, में मात्र बंटे नहीं है, अपितु धर्म के नाम भी मानव समाज बंटा हुआ है। इन धर्म के जन्म दाताओं ने मानव मात्र को एक सुत्र में पिरोने के बजाय, मानव मात्र को कई टुकड़ों में विभाजित किया। यहां तक कि धर्म के नाम से एक दुसरे के जानी दुशमन बना दिये गये और एक दूसरे के खुन के प्यासे भी। मात्र अपनी-अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए विश्व में धर्म के नाम से मानवता विरोधी कार्य चल रहा है। अपनी मनघड़न्त बातों को और विज्ञान विरुद्ध, बुद्धि विरुद्ध, सृष्टि नियम विरुद्ध, ज्ञान विरुद्ध बातों को मनमानी ढंग से सुना कर या फिर फंसे लोकाचार से निकलने के लिए ईश्वर का नाम ले कर उसे दैवीय, अथवा ईश्वरीय ग्रन्थ कह कर मानव समाज को दिग्भ्रमित किया। ईश्वरीय ग्रन्थ के जो कसौटी हैं, मानव कृत ग्रन्थ को उसपर खरा उतरना कदापि सम्भव नहीं।

विशेष कर कुरान, पुराण, बाईबिल, त्रिपिटक, जिन्दाविस्ता, गुरुग्रन्थ आदि मानव कृत होने का अनेक प्रमाण उन्हीं ग्रन्थों से सिद्ध होता है, यहां मैं कुरान, जो मुसलमान, या इस्लाम जगत जिसे कलामुल्लाह, अर्थात अल्लाह का कलाम, या अल्लाह का दिया ज्ञान, अथवा उतरा हुआ ज्ञान या भेजा हुआ ज्ञान मानते हैं। उस पर आर्य समाज के संस्थापक देव दयानन्द की दृष्टिकोण क्या थे और अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवां सम्मुल्लास में जो समीक्षा उन्होंने लिखी है उसे जन-जन तक पहुंचा ने हेतु मेरा प्रयास है।

मैं अपने पाठक वृन्दों के समझने व पढ़ने की सुविधा के लिए कुरान की भाषा अरबी में हिन्दी अक्षरों में सही-सही उच्चारण लिखुंगा तथा ऋषि दयानन्द कुरान के मोटी-मोटी बातों का संकेत मात्र किया है मैं उसे थोड़ा स्पष्ट करना चाहुंगा, साथ-साथ प्रकरणानुसार सत्यार्थ प्रकाश में दिए गए

प्रमाण के अतिरिक्त कुरान से और भी प्रमाण देने का प्रयास करुंगा। पाठक वृन्दों से प्रार्थना है कि आप यह न समझें, कि मैं ऋषि पर कलम चलाना चाह रहा हूँ, या ऋषि कृत सत्यार्थ प्रकाश में कोई विकृति लाना चाहता हूँ। मेरा यह उद्देश्य कदापि नहीं और न ही ऐसा किसी का होना चाहिये। जैसा कुछ विद्वानों ने सत्यार्थ प्रकाश में संसोधक व सम्वर्धक लिखा है, मेरा अभिप्राय मात्र कुरान के भाषा को हिन्दी में यथावत् उच्चारण और अधिक से अधिक प्रमाण कुरान से देने का है। क्योंकि अनेक विद्वानों ने कुरान पर बहुत कुछ लिखा है पर उन्हें-अरबी भाषा का ज्ञान न होने से अनेक स्थानों पर अक्षरों का उलटफेर हुआ है। उस से अर्थ का अनर्थ हो गया, क्योंकि अक्षरों के घटने, बढ़ने पर अर्थ बदल जाता है। विशेष कर हमारे विद्वानों ने उसपर ध्यान नहीं दिया। इसका मूल कारण है कुछ विद्वानों का अनाधिकार चेष्टा भी है क्योंकि अरबी के एक अक्षर भी पढ़े बिना ही मोटी-मोटी पुस्तकों का लिखना है,

अत: मैं अरबी भाषा तथा अरबी व्याकरण का जानकार होने हेतु सभी बातों को ध्यान में रखकर ऋषिवर देव दयानन्द के विचारों का उजागर करना अपना लक्ष्य माना और प्राय: आज तेइस वर्षों से कष्ट व मुसीबतों को सहन करते हुये भी वैदिक मिशन का प्रचार व प्रसार कर रहा हूँ और मृत्यु पर्यन्त तक करता ही रहूँगा। ऋषि ऋण से उऋण होने का ही लक्ष्य है। ऋषि दयानन्द चतुर्थदस समुल्लास के अनुभूमिका में स्पष्ट लिखा है मात्र सत्यासत्य का निर्णय हेतु लिख रहा हूं, भलाई-बुराई सबको विदित हो। कोई किसी पर झूठ न चला सके, भलाई का वर्णन और बुराई का खण्डन अपने पराये पन को त्याग पक्षपात से दूर, दोषों को त्याग और गुणों का धारण, सज्जनों की रीति है। मात्र इतना ही नहीं अपितु ऋषि लिख रहे हैं इस सत्य के लिए चाहे कितना ही दारुण कष्ट उठाना ही क्यों न पड़े, यहां तक कि अपना प्राण भी गंवाना पड़े फिर भी इस मनुष्य पन से अलग न हो। इस्लाम मत विषय को सज्जनों के सामने निवेदन करता हूँ विचार कर सत्य का ग्रहण असत्य का त्याग कीजिये।

जिस कुरान को इस्लाम जगत कलामुल्लाह अर्थात अल्लाह का कलाम मानते हैं अल्लाह ने उसे आरम्भ किया इन शब्दों से अर्थात कुरान शुरु

हुआ इन वाक्यों से, विस मिल्ला हिर रहमा निर्रहीम, सत्यार्थ प्रकाश में -1-1-1- अर्थ = आरम्भ साथ नाम अल्लाह के क्षमा करने वाला दयालु।

समीक्षा = ऋषि दयानन्द का, मुसलमान लोग ऐसा कहते हैं कि, यह कुरान खुदा का कहा है, परन्तु इस वचन से विदित होता है कि इसका बनाने वाला कोई दूसरा है क्योंकि जो परमेश्वर का बनाया होता, तो आरम्भ साथ नाम अल्लाह के, ऐसा न कहता। किन्तु आरम्भ वास्ते उपदेश मनुष्यों को ऐसा कहता, यदि मनुष्यों को शिक्षा करता है, कि तुम ऐसा कहो तो भी ठीक नहीं। क्योंकि इससे पाप का आरम्भ भी खुदा के नाम से होकर उस का नाम दूषित हो जायगा।

जो वह क्षमा और दया करनेहारा है, तो उसने अपनी सृष्टि में मनुष्यों के सुखार्थ अन्य प्रणियों को मार, दारुण पीड़ा दिलाकर मुसलमानों को माँस खाने की आज्ञा क्यों दी? क्या वे प्राणी अनपराधी, और परमेश्वर के बनाये हुए नहीं हैं? और यह भी कहना था कि "परमेश्वर के नाम पर अच्छी बातों का आरम्भ बुरी-बातों का नहीं, इस कथन में गोलमाल (गड़बड़) है, क्या चोरी, जारी, मिथ्या-भाषणादि अधर्म का भी आरम्भ परमेश्वर के नाम पर किया जाय?

इसी से देखलो कसाई आदि मुसलमान, गाय के गले काटने में भी, बिसमिल्लाह अर्थ = शुरु अल्लाह के नाम, का उच्चारण किया करता है तो बुराईयों का आरम्भ भी अल्लाह के नाम पर मुसलमान करते हैं फिर मुसलमानों के खुदा दयालु भी न रहेगा। क्योंकि उसकी दया उन पशुओं पर न रही, उसका नाम लेकर जिसके गले में छुरी चलाई गई, और जो मुसलमान लोग इस विसमिल्ला का अर्थ नहीं जानते, तो बोलना ही व्यर्थ हैं और कहीं इसका अर्थ कुछ और है तो क्या अर्थ है बिसमिल्ला हिर रहमा निर रहीम का?

यहाँ स्पष्टीकरण देना जरूरी है, कि हमें कैसे पता लगेगा कि यही बिसमिल्लाह शब्द से कुरान आरम्भ हुआ जो सत्यार्थ प्रकाश में दिया है-मंजिल 1 - सिपारा 1 - तथा सुरत 1 ।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में इसका स्पष्टीकरण नहीं दिया। यहाँ उल्लेख करना या इसका खुलासा करना अति आवश्यक है जिससे कि

आसानी से लोगों की समझ में बात आ जावे जो सत्यार्थ प्रकाश में नहीं है। दरअसल कुरान में सात मंजिल है-अर्थात (पड़ाव) तीस सिपारा है, एक सौ चौदह सुरते हैं, और छःह हजार, छःह सौ, छयासट आयतें हैं। एक सौ तेराह सुरा के प्रथम में बिस मिल्ला हिर रहमा निर रहीम कंहा है एक सुरा अर्थात सुरा तौबा को बिस मिल्लाह से आरम्भ नहीं किया पर बिसमिल्लाहिर रहमा निर रहीम, सुरा नमल आयत-30 पर आया है ताकि कोई यह न समझें कि यह आयत कुरान का नहीं है।

मात्र इतना ही नहीं रमज़ान के महिने में रात्री कालीन नमाज़ ईशा के बाद एक विशेष नमाज तराबी के नाम से होती है। उसमें अर्थात उस बीस रकात के नमाज़ में रोजाना कुरान का कुछ हिस्सा सुनाना जरुरी है, अब तराबी नमाज़ रोज़ाना बीस रकात का है पुरी कुरान बीस दिन में उस बीस रकात में सुनावे, दस दिन में या तीन दिन या एक ही दिन में क्यों न सुनाये। जब एक सुरा को खत्म करके दूसरी सुरा आरम्भ करते हैं तो बिस मिल्ला हिर रहमा निर रहीम, को पढ़ना ही पड़ता है क्योंकि कोई यह न समझें कि यह वाक्य कुरान का नहीं या यह कुरान का आयत नहीं। जब यह वाक्य ही कुरान का है और इस्लाम जगत इसे कलामुल्लाह, यानी अल्लाह का कलाम मानते हैं तो सीधी सी बात है कि एक अल्लाह दूसरे अल्लाह के नाम से आरम्भ किया और कहा शुरू करता हूं मैं अल्लाह के नाम जो दया करने वाला मेहरबान है ।

इससे स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि कुरान का बिसमिल्लाह ही गलत है तो समुचे कुरान का हाल क्या है वह तो पाठक गण ही आसानी से जान गये होंगे? सुरा फातेहा को अल्लाह ने यहीं से आरम्भ किया-सुरा1-आयत-1+2 अलहमदु लिल्ला हे रब्बिल आ लमीन, अर रहमा निर रहीम।

अर्थ सब स्तुति परमेश्वर के वास्ते है जो परवरदिगार अर्थात पालन करने हारा है संसार का, क्षमा करने वाला दयालु है।

समीक्षा - सत्यार्थ प्रकाश से, जो कुरान का खुदा संसार का पालन करने हारा होता और सब पर क्षमा और दया करता होता तो अन्य मत् वाले और पशु आदि को भी मुसलमानों के हाथ से मार कर खाने का हुक्म न देता।

जो क्षमा करने हारा हैं, तो क्या पापियों को भी क्षमा करेगा? और आगे लिखा कि "काफिरों को कतल करो" अर्थात जो कुरान और पैगम्बर को न मानें व काफिर है, ऐसा क्यों कहता? इसलिये कुरान ईश्वरीय नहीं दीखता।।

नोट :- सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने लिखा है काफिरों को कत्ल करो जो कुरान पैगम्बर को न मानें व काफिर है। परन्तु स्वामी जी ने प्रमाण नहीं दिया। पाठकों की आसानी से जानकारी के लिए मैं यहां कुरान का प्रमाण कुरानी भाषा में देना उचित समझ रहा हूँ आगे भी इसी प्रकार सभी प्रमाण प्रस्तुत करूंगा। व कातेलू हुम हत्ता ला तकना फितना तुई व या कुनद्दिनों लिल्लाह - सुरा - इमरान 141

अर्थ = और कत्ल करो काफिरों को जब तक फितना वाकी न रहे। कुरान में अनेक प्रमाण है, वले यो महहिसल लाहुल्लाजीना आमनू व यम हक् कल काफेरीन = सुरा= अनफाल 12

अर्थ = जब तक अल्लाह का दीन न फैल जावे काफिरों को कत्ल करो उस वक्त तक। पूरी कुरान में अनेक आयातें इस प्रकार की हैं। जो मानव-मानव में ईमानदार व गैर मुस्लिमों अर्थात् कुरान की भाषा में काफिर कह कर भेद भाव किया है, गैर मुस्लिमों को मारो काटो लूटो की बातें कुरान में अनेको बार कहा है। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने लिखा काफिरों को कत्ल करो, जो कुरान और पैगम्बर को न मानें वह काफिर है। परन्तु कोई प्रमाण नहीं दिया। यहाँ मैं कुरान से प्रमाण देना युक्तियुक्त समझता हूँ। मन काना अदुवल लिल्लाहे व मला इकातिही व रूसू लिही व जिबरीला व मीकाईला फइन्नालल्ला हा अदू उल्लिल काफेरीन = सुरा बकर = आ. 98

अर्थ = और जो कोई दुश्मन है अल्लाह का, और फरिश्तों को, और रसुलों का, जिबरील, और मिकाईल का, तो अल्लाह दुश्मन हैं ऐसे काफिरों का।

अर्थात = जो अल्लाह, व रसुलों, तथा फरिश्तों को, जिबरील, व मीकाईल नामी दुतों को नहीं मानता वह काफिर है। और ऐसे काफिरों को कत्ल करने की चर्चा ऊपर की गई है, यही प्रमाण सत्यार्थ प्रकाश में नहीं लिखा। मैंने प्रसंग के साथ प्रमाण प्रस्तुत किया है। सत्यार्थ प्रकाश से -

मालिक दीन न्याय का, तुझ ही की हम भक्ति करते हैं, और तुझ ही से सहायता चाहते हैं। दिखा हमको सीधा रास्ता, सुरा-फातिहा=आयात= 3-4-5=उच्चारण मालिकि याव मिद्दीन-इयाका नयबुदू व ईईया का नस्ताईन-एह देनस्सिरा तल मुस्ताकीम -

समीक्षा = क्या खुदा नित्य न्याय नहीं करता? किसी एक दिन न्याय करता है? इससे तो अंधेर विदित होता है उसी की भक्ति करना और उसी से सहायता चाहना तो ठीक, परन्तु क्या बुरी बात का भी सहाय चाहना? और सीधा मार्ग एक मुसलमानों का है वा दूसरे का भी? सीधे मार्ग को मुसलमान क्यों नहीं ग्रहण करते? क्या सीधा रास्ता बुराई की ओर का तो नहीं चाहते? यदि भलाई सब की एक है तो फिर मुसलमानों ही में विशेष कुछ न रहा, और दूसरों की भलाई नहीं मानते तो पक्षपाती है?

4 उन लोगो का रास्ता कि जिन पर तूने नियामत की "और उनका मार्ग मत हमको दिखा" सुरा = फातिहा = आयात - 6 - 7 = उच्चारण सिरा तल्लाजीना अन यमता आलई हिम-गैरिल मग़ज़ूबे अलईहिम व लज्जाल्लीन।

समीक्षा = जब मुसलमान लोग पूर्व जन्म और पूर्व कृत पाप पुण्य नहीं मानते तो किन्हीं पर नियामत अर्थात फज़ल वा दया करने और किन्हीं पर न करने से खुदा पक्षपाती हो जायेगा क्योंकि बिना पाप पुण्य सुख-दुःख देना केवल अन्याय की बात है। बिना कारण किसी पर दया और किसी पर क्रोध दृष्टि करना भी स्वभाव से वही है क्योंकि बिना भलाई-बुराई के वह दया अथवा क्रोध नहीं कर सकता और जब उनके पूर्व संचित पुण्य-पाप ही नहीं तो किसी पर दया और किसी पर क्रोध करना नहीं हो सकता।

नोट :- माँ के गर्भ से अंधा लंग्ड़ा या अपाहिज का पैदा होना अगर कर्मानुसार नहीं तो अल्लाह का ऐसा पैदा करना कैसा न्याय है?

यह मान्यता इस्लाम मजहब वालों का है और मजहबी शिक्षा कैसा है वह आगे देखते जायें।

मजहब के नाम पर बनाया गया शूल कहीं है त्रिशूल, फिर कहीं पंच शूल

*****

शूल को विद्या जगत् में कष्ट, मुसीबत, तकलीफ या वेदना के अर्थो में लिया है। आज इसे वितरित कर लोग अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं या अपनी शान या मर्यादा ही समझ रहे हैं, वह भी धर्म के नाम से और तीन तथा पाच में विभाजित होकर। सृष्टि के आदि से अब तक वैदिक संस्कृति के आधार पर शूल तीन ही माना गया है। जैसे सांख्य के रचयिता कपिल ऋषि अपने दर्शन को यहीं से प्रारम्भ किया है। **त्रिविददु:खम अत्यन्त: निवृति: रत्यन्तत: पुरूषार्थ:।** अर्थात् दु:ख तीन प्रकार का है मानव मात्र के लिए। उन तीनों दु:खों से छुटकारा पाने का प्रयास मानव मात्र को करना चाहिए। प्रयास जो करता है वही पुरुषार्थी कहलाता है। मूल रूप में यहाँ शूल को दु:ख के अर्थो में लिया और वह दु:ख तीन प्रकार के बताये गये - **आध्यात्मिक, आदि भौतिक, आदि दैविक,** जिसे आज लोग हथियार मान रहे है। ऋषि का उपदेश था मानव को धार्मिक बनाना, परमात्मा का ज्ञान कराना, परमात्मा के बताये गये कर्त्तव्यों का बोध कराना। किन्तु आज ठीक इसका उल्टा आचरण हो रहा है। ईश्वर नियम के विरूद्ध आचरण कर भी धर्म का नाम लेना चाहते हैं, क्या आप इसे धर्म कह सकते हैं?

सही पूछिए तो यह धर्म नही, इसी का नाम मजहब है और इसी मजहब के मानने वाले उस पर चलने वालों में मजहबी जुनून भर दिया है। फिर भी लोग कहते हैं मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना। बेशक अल्लामा इकबाल ने कहा होगा । जो स्वयं मजहबी जुनून से ग्रस्त था, या मजहब परस्त था। आज विश्व भर में मजहब के नाम पर इन्सान-इन्सान का दुश्मन और गले की हड्डी बन चुका है। हिन्दू अपने खून को खून और मुसलमानों के खून को पानी मानने लगे हैं। या फिर मुस्लिम अपने व हिन्दूओं के खून में फर्क मानने लगे हैं। जिसका प्रमाण सामने आ रहा है, त्रिशूल व पंच शूल वितरण का। सच तो यह है कि मानव को विभिन्न मजहबों का चौकीदार बनाकर उसमें भौंकने

और काटने की प्रवृत्ति पैदा करने के पीछे जो भी ताकतें काम कर रही हैं, वह सभी मानव विरोधी हैं। यहाँ तक कि मानव समाज को विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग, उपवर्ग, उच्चवर्ग, निम्नवर्ग और सवर्ण तथा अवर्ण में विभाजित कर दिया हैं। जिससे मानव जाति आपसी फूट का शिकार होकर अपने विनाश का कारण खुद रच सके या कर सके। इन परम्पराओं ने मानव को इतना संकीर्ण तथा विवेकहीन बना दिया है कि आज मानव विभिन्न मतों का चौकीदार बन चुका है। जिसका मात्र एक ही कर्त्तव्य था मानवता का प्रचार करना। समझदार कहलाने वाले व योग्य होकर भी मानव अन्य मतों के खूटों पर बन्धे हुए हैं। और अन्यों को अपना शत्रु समझकर उन्हें साम्प्रदायिक युद्ध के लिए ललकारता है या साम्प्रदायिक दंगे भड़का कर समाज में खून खराबा करता है। अगर इन्सान को किसी मतों के खूटों में बंधना ही है तो मानव के लिए मानवता से बढ़कर कोई धर्म ही नहीं हो सकता। मानवता और इन्सानियत का सार यही है कि मानव और जीवों को अपने बराबर व समान समझना। ईश्वर आदेश है 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' समस्त आत्माओं को अपनी आत्मा के समान जानना। वैदिक विचार धारा यही सिखाती है। मानव मात्र को ऐसा काम करना चाहिए, जिससे मानव समाज को मानसिक व शारीरिक हानि या ठेस न पहुंचे।

आज धरती पर हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई मतों का नाम देकर मानव समाज टुकड़ों में बंट गया है, धर्म के नाम पर यह कलंक है। धर्म तभी होते जब एक होकर मानवता की रक्षा या मानव मात्र के चहुंमुखी विकास के लिए कार्य करते। पर ये आपस में फूट डालने का आधार बना हुआ है। धर्म तो मानव के साथ मानव को जोड़ता है और मजहब एक दूसरे के साथ जुदा व तोड़ने का काम करता है। एक मजहब दूसरें मजहबों से अलग होकर भी अच्छाई का श्रेय लेना चाहा। मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना कह कर। यही कारण बना विश्व में मजहब तथा फिरके के नाम से झगड़ा हो रहा है। चाहे वह शिया-सुन्नी का हो, हनफी कादयानी का हों, देववन्दी और बरेलवियों का हो, हिन्दु और मुस्लिम का हो, सिक्ख और बौद्धों का हो, जैनी तथा ईसाइयों का हो, या फिर राम मन्दिर और बाबरी मजिस्द का ही क्यों न हो। इतना सब कुछ होने के बावजूद भी विद्वान जन यही कह रहे हैं, मजहब

नही सिखाता आपस में बैर रखना। कुरान में ऐसी अनेक आयतें हैं गैर मुस्लिमों को लूटो, मारों, काटों, पीटो, की बातें लिखी गई हैं। जिसे आधार मानकर ओसामा विन लादेन या सद्दाम हुसैन तथा मुशर्रफ और मुशर्रफ के पालतू पाकिस्तानी आतंकवादी कुरान की आयतों को चरितार्थ कर रहे हैं और त्रिशूल वालों को पाँच शूल दिखा रहे हैं।

त्रिशूल वालों ने भी धर्म की दुहाई तो दिया, किन्तु धर्म को जानने का प्रयास ही नही किया। क्योंकि त्रिशूल का आधार वैदिक धर्म ही है जो ऊपर दर्शाया गया है। जिन तीन दु:खों को हथियार बनाकर बल्लम और भाला का रूप दिया गया। यह विचारधारा वेद का कदापि नहीं हो सकता। क्योंकि वेद में वसुधैव कुटुम्बकम का उपदेश ईश ने मानव मात्र को दिया है। अगर ये धार्मिक होते तो अपने घर से बिछुड़े हुये को गले लगाते। तथा अपने घर लौटाने का प्रयास करते जिससे सारी शंकाओं का समाधान होता। घर लौटाने का प्रयास प्यार से होना चाहिए न कि त्रिशूल और डंडा दिखा कर? किसी पर डंडा बजाना उसे मार नही कहा जाता, अगर मारना ही है चरित्र से मारना चाहिए, अखलाक से तथा व्यवहार से मारना चाहिए। जिसे देखकर लोग स्वयं अपने आप प्रभावित हो। अगर मारना ही है सिद्धान्त से तथा ज्ञान से मारना चाहिए, अज्ञानता से नहीं। धरती पर मानव मात्र के लिए वैदिक सिद्धान्त ही सर्वोपरि है। वैदिक सिद्धान्त का मुकाबला आज तक धरती वालों के पास न है और न आना ही सम्भव है। उसे जब तक हम चरितार्थ नहीं करते या अपनी मान्यता को दूसरों तक नहीं पहुचाते औरों को पता लगना भी सम्भव नहीं हैं। किन्तु परेशानी की बात यह है, पंचशूल हो या त्रिशूल के वितरण करने वाले दोनों ही अनभिज्ञ हैं। यही कारण बना एक दूसरे को जबाव देने लगे। अगर यह दोनों कौम के लोग समझदार होते तो सभी अन्धविश्वास को छोड़कर ईश्वर का सानिध्य लाभ करने का प्रयत्न करते पर दोनों ही अन्धविश्वास में जकड़े हुए हैं। त्रिशूल वाले तो मूर्ति पूजा को ही धर्म माना और पंचशूल वाले कबर पूजा को ही धर्म जाना। भले ही भारत में न पूजते हों किन्तु मक्का और मदीना में या अरब जाकर अवश्य पूजना ही पड़ता है। चाहे कोई रौजा का तवाफ करे या संगे असवद को बोसा लगावें । या फिर शैतान को कंकड़ मारे ये सब के सब अंधविश्वास का ही परिचायक है। जबकि हदीस में आया है

अंइयज्सासलकबरे अंईयक यदा अलई हे व अंई यबनी अलई हे। तात्पर्य कबर को पक्का न बनाओ और न चद्दर चढ़ाओ और न बैठो इसके पास। पर हम करें तो क्या? पंचशूल वाले तो अमल करते ही नहीं इस पर और न ही त्रिशूल वाले जानते इन बातों को। चाहे वह प्रधानमंत्री हो या गृहमंत्री हो, चाहे राष्ट्रपति । क्योंकि प्रधानमंत्री व गृह मंत्री मक्का मदीना तो नही जा सकते पर अजमेर में अवश्य चादर चढ़ाते हैं। यह सारा काम त्रिशूल और पंचशूल वालो का ही है। जभी तो डंडा लेकर एकत्रित होते है उनका उद्देश्य भी सिद्धान्त का प्रचार नहीं अपितु अपने गणवेश का ही प्रचार करना है। तो क्या ऐसे विचारों से मानव समाज को दिशा दिया जा सकता है?

आज मानव मात्र को चाहिए एकजुट होकर वेद के आधार पर राष्ट्रीयता का प्रचार व प्रसार करना तथा मत-मतान्तरों में फँसे लोगों को वेद के शरण में लाते हुए ईश्वरीय आज्ञा का पालन कर शारीरिक, आत्मिक तथा समाजिक उन्नति के लिए कार्य करना। जिससे अपना पराया का भेद या हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई का भेद काला और गोरा का भेद, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र का भेद न करते हुए अगर अपने कर्तव्यों का पालन किया जाए या उन्हें कर्तव्य बोध कराया जाये, तभी हम राष्ट्र को समृद्धशाली बना सकते हैं। आज अगर आवश्यकता है, सभी प्रकार के विषमता से या तो शूलों से निवृत्ति पाना, तो हमें कर्तव्य पारायण बनना पड़ेगा। त्रिशूल बांटना कोई कर्त्तव्य नही, अपितु यह मानवता से परे की बात है। जो लोग यह समझते है कि त्रिशूल बांटकर भारतीय हिन्दुओं को एकजुट करें तो यह दिवास्वप्न ही है। क्योंकि इन हिन्दुओं के गुरू चार शंकराचार्य आपस में ही मतभेद रखते हैं। पिछले दिन कुंभ के मेले में एक शंकराचार्य ने सोनिया जैसे एक कैथलिक ईसाई महिला को सीता की उपाधि देकर वैदिक मर्यादा पर आंच लगा दिया। गुरु कहलाने वाले भी वैदिक सिद्धान्त से कोसों दूर हैं। विश्व में शान्ति की स्थापना एक मात्र वैदिक विचार धारा से ही सम्भव है, क्यों कि वेद का भी उपदेश यही है 'नान्य:पन्था विद्यतेअनाय' अनेक मत और पन्थ सही नही है सही और सच्चा रास्ता केवल एक ही है आज ही संकल्प लीजिए वैदिक सिद्धान्त को जन जन तक पहुँचाकर अपनी कर्तव्य परायणता का परिचय दें। ताकि हम अपने को मानव कहला सकें । ❁❁❁

मजहबी शिक्षा ही कट्टरवाद, मदरसा पर ही विवाद क्यों ?

*****

पिछले कुछ दिनों से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने वे समाचारों में सुनने को मिल रहा है मदरसा प्रकरण। माननीय गृहमन्त्री जी भी मदरसा की चर्चा पंजाब के चुनाव प्रचार में कर रहे थे और बंगाल में विभिन्न मुस्लिम संगठन के कार्यकर्ताओं से कई बार बैठक कर रहे उस समय आडवानी गृहमंत्री थे, आखिर मदरसा पर ही विवाद क्यों? प्रायः लोगों को पता है कि मदरसा विद्या के केन्द्र को कहा जाता है अर्थात् जहाँ बैठकर बच्चें को तालीम दी जाती है उस जगह को मदरसा कहा जाता है। पर यह बात समझ में नहीं आती कि जहाँ बच्चों को तालीम यानी विद्या दान या शिक्षा दी जा रही हो उस पर विवाद होना, यह अचम्भे की बात है क्योंकि धरती पर रहने वाला कोई ऐसा समाज नहीं जो अपने बच्चों को तालीम देना नहीं चाहता। मानव समाज में हर व्यक्ति अपने बच्चों को शिक्षित बनाने हेतु, मदरसा, स्कूल, विद्यालय, पाठशाला आदि बनाते तथा उन में पढ़ने को भेजते है, पर प्रश्न है, कि अन्य शिक्षा संस्थानों को छोड़, मदरसा पर ही विवाद क्यों? विशेषकर भारतियों के सामने यह एक अहम सवाल है।

नोट :- मदरसा पर विवाद बी.जे.पी. सरकार के समय और आज एन.डी.ए. सरकार में भी है।

भारतवर्ष के कई प्रान्तों में मदरसा मात्र दो या तीन प्रकार के है, जैसा जहाँ मात्र कुरान कंठस्थ कराया जाता है जिसे मदरसातुल हुप्फाज़ कहते हैं। और दूसरा है दरसे निजामी, जो कुरान, हदीस से लेकर अरवी भाषा व्याकरण, साहित्य सही-सही इस्लाम का ज्ञान कराया जाता है। तथा पूर्ण इस्लाम में पारंगत कराकर सम्पूर्ण इस्लाम जगत के आलिम (विद्वान्) बनाया जाता है। यह मदरसा सरकार के कोई अनुदान से नहीं, अपितु अपने ही बलबूते पर अपनों से चंदा कर तथा जकात, फितरा, के दान से वह कुछ सम्पर्क सूत्र के माध्यम से पोंड, डालर आदि के अनुदान से चलाया जाता है इस मदरसे पर

सरकार का कोई नियन्त्रण नहीं है और न सरकार अपने नियन्त्रण में ले सकती है, यहां इस मदरसे को इस्लाम का आधार शिला कहा जाये तो कोई गलत न होगा। इसका कोर्स 7 से 9 वर्ष का है। तीसरा जो मदरसा है, उसे दरसे आलिया कहा जाता है। यहां की पढ़ाई कुरान व हदीसों के साथ-साथ भारत के सभी प्रान्तों में अपनी प्रान्तीय भाषा भी पढ़ाई जाती है, क्योंकि यह मदरसा सरकारी मान्यता प्राप्त है तथा सरकारी खर्चे से ही इसका संचालन होता है, यह सरकारी बोर्ड की मान्यतानुसार इसकी व्यवस्था हेतु मदरसा बोर्ड के नाम से एक संस्था बनी हुई है, पूरा नियन्त्रण इस बोर्ड का ही है, प्रान्तीय भाषा व सामान्य अंग्रेजी का ज्ञान भी कराया जाता है। सरकारी मान्यता होने हेतु यहां से पढ़ने के बाद सरकारी विद्यालय में नौकरी देने तथा दिलाने का तरीका है। अवश्य ध्यान रहे यहाँ भी पढ़ाई वही कुरान तथा हदीसों की है, जो पूर्ण इस्लामिक ही है। इस मदरसे को बंगाल में दो भागों में जूनियर कक्षा-8 तथा सीनियर कक्षा-10 तक बाँट रखा है तथा यहाँ सम्पूर्ण कोर्स 12 वर्ष का है। मुम ता जुल मुहद्देसीन की डिर्गी है।

इस सन्दर्भ में मैं अवश्य याद दिलाना चाहूँगा। कि सरकारी खर्चे से जो मदरसा आलिया नेसाब में पढ़ाया गया जो एक कट्टर मुसलमान बनाने के लिए, क्योंकि उसे जो शिक्षा मिली है, मात्र इस्लाम के सन्दर्भ में ही है। दुनियाँदारी की, भूगोल, खगोल, विज्ञान, गणित, इतिहास की कुछ भी जानकारी नहीं दी गई। यानी भारत सरकार के खर्चे में आसानी से देश के नागरिक नहीं, अपितु मरूप्रान्त का सारा दृश्य सामने रखकर भारत का नहीं अपितु अरब का मानचित्र मस्तिष्क में बना दिया जाता है। पर जान लेना यह गलती उन लोगों की नहीं, अपितु भारत के कर्णधारों की है क्योंकि सरकार ने यह अवसर उनको दिया या दिलवाया आजादी के समय से।

यही मदरसा में बैठकर कुरान तथा हदीसों के माध्यम से जब बाल्यावस्था से कोई विद्यार्थी अपने दिमाग में अरब का नक्शा जमा लेता है और फिर अरब तथा अराबियन कल्चर का प्रचार प्रसार हेतु भारत विरोधी गतिविधि को उजागर करता है, फिर उस समय भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकार चिल्लाती है और फिर परेशान होकर उसी मदरसा पर प्रतिबन्ध लगाना चाहती है कि

जिस मदरसे को पनपने हेतु सरकार अनुदान दे रही थी और सरकार चिल्लाती भी तब, जब आंतकवादी हवाई जहाज को उड़ाकर अपने कब्जे में कर लेते है जब तक प्लेन रूकी थी तो सरकार ने टायर पिंचर तक न कर सकी। या फिर चिल्लाती तब है जब लाल किले में आंतकवादी घुस जाते हैं या फिर चिल्लाती तब जब सांसद भवन पर गोली चल जाती है।

अवश्य मदरसा और उस में जो शिक्षा दी जा रही है, वह आज से नहीं अपितु अंग्रेजी काल से यह काम प्रारम्भ किया था 1905 में तैयब जी व सर सैयद अहमद खाँ द्वारा अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय बनाया गया था। और अब तक उस विद्यालय में भारत विरोधी कार्य होता आया है। आज तक रोकथाम नहीं हुई। जहाँ मदरसे में वाल्यावस्था से ही बच्चों को यही शिक्षा दी जा रही हो वहां राष्ट्र भक्त क्यों और कैसे बनेंगे भला?

अभी दो प्रमाण आँखों देखी भारत वासी ले सकते है। पिछले 2001 में गाजियाबाद जिला उ. प्र. के हापुड़ में एक मदरसे से पुलिस बड़े ही सावधानी से एक आंतकवादी को निकाला और उ.प्र. के सहारनपुर मदरसा दारूल उलुम के चार शिक्षार्थियों ने बागपत के पास रेल में बम्ब कांड किया था। पिछले दिन लखनऊ के पास मदरसा नदवातुल मुस्लेमीन के अध्यक्ष अलिमियां ने स्कूल में सरस्वती वन्दना का विरोध किया। जबकि मदरसा में वन्दना का प्रश्न ही नहीं है। अलीमियां के घर उ.प्र. रायबरेली में कुछ नकाबपोश लोग गए थे। उन दिनों उ.प्र. के मुख्यमन्त्री श्री कल्याण सिंह पर दबाव डाला गया आदि। अब रही मदरसा में आधुनिक विषय पढ़ाने की बात तो यह सरासर भारत सरकार तथा बंगाल सरकार की ना समझी है। क्योंकि मदरसों में जो इस्लामिक पढ़ाई है वह अपरिवर्तनीय है, उसमें परिवर्तन लाना तो दूर की बात अपने मन में तक नहीं ला सकते, और ना हीं उस शिक्षा पर संदेह ही कर सकते । क्योंकि कुरान में पहला शब्द यही है 'जालिकल किताबो ला रईबफीहे' अर्थात् कोई शक नहीं इस किताब में अर्थात् कुरान में यही कारण बना अपरिवर्तनीय का हदीस भी ठीक इसी प्रकार का ही है। अगर कोई उस पर सन्देह करे-फिर मुसलमान से उसे खारिज होना पड़ेगा।

मदरसा में जितना भी आधुनिकता लाने का प्रयास क्यों न किया जाए,

कुरान उससे सहमत नहीं, जैसा आधुनिक विज्ञान की खोज है पृथ्वी घूमती है पर कुरान का मानना तथा अल्लाह का कहना है कि सूरज तथा चन्द्रमा धरती की परिक्रमा करता है, मात्र इतना ही नहीं, विज्ञान का मानना है सूरज डूबता नहीं, क्योंकि जिस समय हम डूबता देख रहे है दूसरे मुल्क वाले निकलता देख रहे है। अत: सूरज का निकलना तथा डूबना अवैज्ञानिक है (देखें सुरा कहाफ आयात-86 में) इधर कुरान का मानना है और अल्लाह का कहना है कि सूरज कीचड़ वाले तालाब में डूबता है। इस सन्दर्भ में मदरसा की पढ़ाई में आधुनिकता लाने वाले माननीय राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमन्त्री आडवाणी जी तथा बंगाल के मुख्यमन्त्री जी से मेरा प्रश्न है कि इस दशा में आप लोग किस प्रकार की आधुनिकता को मदरसा में लाना चाहते है? क्या वह सम्भव है? प्रश्न है कि यह बैठक और प्रान्तों में न होकर बंगाल में क्यों? दर असल पश्चिम बंगाल एक ऐसा प्रान्त है जहाँ मदरसा को सरकार ने कई भागों में तथा पढ़ाई की पद्धति में बाँट रखा है जैसे हाई मदरसा के नाम से बंगाल में ही संचालित है बंगाल शिक्षा बोर्ड की पढ़ाई होती है।

सरकारी नौकरी पाने हेतु बंगाल शिक्षा बोर्ड द्वारा मनोनित बंगला साहित्य, कुछ गणित आदि की भी शिक्षाएं हैं, इसे ही हाई मदरसा कहा जाता है। यह मात्र बंगाल में ही है। पाठ्यक्रम अन्य प्रान्तों में नहीं है। इस हाई मदरसे में बंगाल शिक्षा बोर्ड के सिलेबस को अधिकतर रखा गया है पर याद रखना यहाँ भी कई कक्षा अरबी की है, अरबी भाषा पढ़ाई जाती है, मात्रभाषा ही सिखाई जाती है। यहाँ कुरान व हदीस की कक्षाएं नहीं है। परन्तु इस्लाम के बारे में जानकारी कराना आवश्यक है। इस प्रकार बंगाल सरकार अपने सरकारी खर्चे से ही इस्लामिक शिक्षा को बढ़ावा देती आई है और वर्तमान में बंगाल के कम्युनिष्ट सरकार ने इसे 1977 से 2000 तक 23 वर्षो में 238 से 507 तक पहुँचा दिया। यह बंगाल सरकार के आंकड़े है, (कालान्तर पत्रिका 11/2/2002 से) अवश्य एक बात है इस हाई मदरसा बंगाल बोर्ड अन्तर्गत होने हेतु यहां पढ़ने वाले कुछ अध्यापक तथा छात्र हिन्दू भी है, इन लोगों के लिए अरबी कक्षा की छूट है यानी जितने मुस्लिम छात्र है उनके लिए अरबी विषय है।

अरबी अदब की पुस्तकें पढ़ाई जाती है। उसमें इस्लाम की पूरी जानकारी कराई जाती है। बंगाल के मुस्लिम छात्रों के लिए एक समस्या अवश्य है, क्योंकि हाई मदरसों में पढ़ने वाले विद्यार्थी पशो पेश में हैं क्योंकि इस्लाम से सम्बन्ध रखने हेतु कुरान पर पूरी उसकी आस्था है जहाँ सूर्य धरती की परिक्रमा करती है बताया और बच्चे कुरान पर सन्देह भी नहीं कर सकते। पर ध्यान रहे, इस विद्यालय को मदरसा कहना भी इस्लाम की खिलवाड़ ही है, क्योंकि हदीस में मदरसा को रसूल का घर कहा गया है। जैसा मस्जिद को अल्लाह का घर मदरसा वह जगह है जहाँ बैठकर कुरानी शिक्षा तथा पूरी इस्लाम की जानकारी दी जाती हो, मात्र कट्टर वाद की शिक्षा है क्यों कि इस्लाम की दृष्टि में एक इस्लाम को छोड़ कर धरती पर और कोई संप्रदाय को जीने का हक नहीं। इसी शिक्षा स्थल को मदरसा कहा जाता है।

यही मदरसा मात्र भारत में नहीं अपितु विश्व में आंतकवाद का जाल बिछाकर पूरी धरती पर ही इस्लामिक राज़्य स्थापित करना चाहता है, क्योंकि इस्लामिक शिक्षा यही हैं शायद आप लोगों को याद हो कि पिछले 1928 में रशियावालों ने भी मदरसा पर प्रतिबंध लगाया था उसे देखकर भी भारतियों को शिक्षा लेनी थी।

समय रहते अगर भारत तथा विश्व वासी आंतकवाद से मुक्ति पाना चाहते हैं तो आंतकवाद का जन्मदाता मदरसा को धरती से समाप्त करने का आज ही संकल्प लें, वरना अमेरिका तथा भारत काण्ड से विश्व अछूता नहीं रह सकता। विश्व के सभी देशों में आंतकवाद बढ़ रहा है, अफगानिस्तान तो एक नमूना मात्र था। वर्त्तमान प्रधान मंत्री श्री मनमोहन सिंह ने भी दिल्ली में कई मदरसों का दौरा किया, तथा आधुनिकता लाने की बात की है जो सम्भेव नहीं, उपर लिख आया हूँ।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 5343
दयानन्द महिला महा

कोई भी मजहबी ग्रन्थ ईश्वरीय नहीं हो सकता
ईश्वरीय ज्ञान मात्र वेद है

*****

अभी 2004 के प्रथम सप्ताह में इस्लामिक रिसर्च फांउडेशन 56/58 टेन्डल स्ट्रीट डोंगरी मुम्बई 400009 से मेरे नाम एक परिचय पत्र डॉ. जाकिर नाईक साहब का आया, डॉ. नाईक विभिन्न देशों में हिन्दूइज्म व इस्लाम पर अपना वक्तव्य दिया करते हैं। मूल विषय तुलनात्मक अध्ययन है, जो कुरान को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करते हैं। डॉ. जाकिर नाईक ने अपना परिचय पत्र मुझे क्यों भेजा उसमें कुछ लिखा नहीं मेरा पता उन्हें किसने दिया यह भी मुझे मालूम नहीं। नाईक का परिचय पत्र मुझे मिलते ही मैंने 09.01.2004 शुक्रवार को कुरान पर एक प्रश्नावली भेज दिया । आप जवाब देकर अपनी संख्या वृद्धि करें, जवाब न देने की दशा में वैदिक धर्म स्वीकारने के लिए लिखा।

मात्र डॉ. नाईक ही नहीं अपितु विश्व के सभी मुसलमान कुरान शरीफ को कलामुल्लाह या खुदा का कलाम मानते हैं।

परन्तु कुरान को समझदारी से पढ़ने या ध्यान देने पर नित्यान्त उलटा ही मालूम पड़ता है। क्योंकि वहाँ कुरान के उतरने के विषय में ही शंका होती है, कि कुरान का कुल आयतें या पूरा हिस्सा एक ही बार में उतरा या कालान्तर में ? यदि यह मान लिया जाए कि पूरी कूरान एक ही बार उतरा, तो इसका विरोध कुरान से ही होता है, क्योंकि प्रत्येक सुरा के प्रथम में लिखा है यह मक्का में उतरी और यह मदीना में ।

जब सूरतें पृथक्-पृथक् स्थानों पर उतरी तो उनका एक ही स्थान एक ही बार उतरना सम्भव नहीं। और यह मान लें कि कुरान पृथक्-पृथक् सूरतों को अलग-अलग स्थानों पर अल्लाह ने उतारा जो इस्लाम वालों की मान्यता है तो कुरान की आयतों से यह सिद्ध होना सम्भव नहीं क्योंकि अल्लाह ने 25 पारा सुरा दुखानआयात 2 तथा 3 पर कहा ईन्नाअनजलनाहू फी लई लतिम मुबारकातिन इन्ना कुन्ना मुर सलीन।

अर्थ:- कसम है किताब बयान करने वाले की, तहकीक उतारा हमने इस कुरान को बीच रात बरकत वाली के जरूर हैं हम डराने वाले।

विचाारणीय विषय है खुदा कसम या सौगन्ध खाकर कह रहे हैं कि मैंने कुरान को बरकत वाली रात में उतारा, और डराने के लिए, अब मुसलमानों की हिम्मत देखिये कि अल्लाह से डरते नहीं और मानते हैं कि अल्लाह ने अलग-अलग आयतों को अलग-अलग स्थानों पर उतारा जब कि अल्लाह ने कसम खाकर कुरान उतारने की बात कही। स्पष्ट यह हुआ कि अल्लाह में व मुसलमानों में मतभेद है, इन दोनों में कौन सही है? अल्लाह या बन्दा? कुरान के प्रत्येक सूरत के ऊपर लिखा है यह आयात मक्का में यह आयात मदीना में उतारी गई । कहीं ऐसा तो नहीं कि संग्रह कर्ता ने अपने मन से ही लिख दिया हो? क्योंकि अल्लाह ने कसम खाकर कहा कुरान को मैंने बरकत वाली रात को उतारा। इससे यह भी प्रमाण मिला कि शायद अल्लाह को पता था कि तेरे बन्दे तुझ पर विश्वास नहीं करेगें कसम खाने पर भी। और हुआ भी ठीक यही क्योंकि कसम खाने की नौबत तब आती है जब कोई यकीन या बात पर भरोसा न करे उस दशा में।

अब धरती पर जो कुरान है उसमें मिलावट होने का संदेह हो गया, यानी प्रत्येक दशा में ईश्वरीय ज्ञान या कलामुल्लाह सिद्ध करना उतना ही कठिन है जितना की अंधकार में प्रकाश।

कुरान का एक रात में उतरने का प्रमाण कुरान के और सुरा से भी मिलता है। सुरा कद्र को अल्लाह ने यहीं से शुरु किया ईन्ना अनजल ना हूँ फी लई लतिल कद्रे।

अर्थ :- बेशक हमने कुरान को शबे कदर में उतारा । सुरा बकर आयात 185 में अल्लाह ने कहा, शहरो रमजानल्लाजी उनजिला फी हिल कुरान

अर्थ:- कुरान को उतारा हमने रमजान महीने में, कुरान नाजिल हुआ कुरान का नाजिल होना, आना या उतरने का एक रात में कई प्रमाण कुरान में ही मिलते हैं। तो फिर यह कहना या मानना कि कुरान का कुछ आयत मक्का में और मदीना में और कई वर्ष तक उतरना परस्पर विरोधी वाक्य है, तथा इसे ईश्वरीय ज्ञान कहकर ईश्वर पर भी आरोप लगाना सिद्ध होता है।

सही पूछिये तो यह किसी पढ़ लिख लोगों का भी वाक्य होना सम्भव नहीं । यहां तक कि कुरान में बुद्धि विरुद्ध बातों की भी गुञ्जाइश है। ईश्वरीय ज्ञान में बुद्धि विरुद्ध, विज्ञान विरुद्ध बातों का होना सरासर अल्लाह पर इल्जाम है।

कुरान को पढ़ने पर यह बात आसानी से समझ में आ जाती है कि कुरान का कर्ता कोई अरब निवासी अपनी भाषा को मनोहर ढंग से बोलने वाला है। यही कारण है कि कुरान में कहा गया-व इन कुनतुम फी रई बिम मिम मा नज जलना अला अब देना फातु वेसुरतिम मिम मिसलेही वद यू शुहादा आ कुममिन दु निल्लाहे इन कुन तुम सादेकीन। सुरा बकर-23

अर्थ :- अगर झुठलाते हो कुरान को तो कुरान के सुरातों में कोई सुरा नकल ले आओ अगर सच बोलने वाले हो तो। अगर नहीं ला सकते तो तुम्हारा ठिकाना होगा जहन्नुम का आग, जिस आग का ईधन पत्थर और काफिर है।

इससे यह स्पष्ट हो गया कि कुरान को न मानने वाला काफिर है जो कि दोजख के आग का जलावन है। किन्तु आगे वाला शब्द पर कुरानकर्ता ने बुद्धि का प्रयोग नहीं किया और पत्थर को भी उसी आग का ईधन कह दिया। अगर यह मान लिया जाए कि जो कुरान को नहीं मानता वह काफिर है किन्तु है तो वह मानव और मानव बुद्धिमान या बुद्धि परख होने हेतु कुरान का मानना न मानना यह तो सम्भव भी है और कुरान को न मानने पर अल्लाह ने नर्क का ईधन बना दिया। किन्तु पत्थरों को किस गलती की सजा दी जाएगी? आग का ईधन बना कर, क्या यह पत्थर का जलावन बनना बुद्धि परख मानव का मानना सम्भव है?

इसके अतिरिक्त कुरान में कई लोगों की मनोहर कहानियाँ भी हैं, जैसे नाटकों में, नोवलों में होता है। और कईयों की वंशावली भी। जैसा यूसुफ जुलेखा का किस्सा बड़ा मनोरम है। नहनो नकुस्सो अलईकाअहसनल कसस- अल्लाह ने कहा मनोरम किस्सा है। बादशाह अजीज की पत्नी से यूयुफ का रोमांस और उसमें अल्लाह की गवाही देना लिखा है। बनी इसराइल का किस्सा व उनकी वंशावली, लूत का किस्सा भी मनोरम ही है, जिसमें इगलामबाजी और अपना वंश चलाने के लिए परिपाटी कैसी हो वह भी बड़ा ही अजूबा है। हूद का किस्सा, सुलेमान का किस्सा, लुकमान का किस्सा व इमरान का

किस्सा, ईसा और मरियम का किस्सा भी बड़ा जबरदस्त है क्योंकि मरियम कुवांरी अवस्था में पुत्र को जन्म दिया। और यहां भी अल्लाह स्वयं गवाह है। मरियम से कोई पाप नहीं हुआ आदि।

और कई किस्से कुरान में मौजूद है। यहां तक कि हजरत मुहम्मद साहब का भी किस्सा है। जब-जब मुहम्मद साहब पर विपत्ति आई तो, अल्लाह ने उन्हें उस विपत्ति से बचाया । मैं दो विपत्ति का प्रमाण दे रहा हूँ।

प्रमाण 1 - हजरत मुहम्मद साहब की कमसिन तीसरे नम्बर की पत्नी उम्मुल मोमेनीन हजरत आयशा जो अबु बकर की लड़की थी, उन पर व्यभिचार का शक लगा, काफिले में जाते समय हाजत को गई काफिला आगे निकल गया पीछे एक साहाबी नियुक्त थे कि कोई सामान गिर जाने पर उंठा लावे आदि, पर सामान तो नहीं मिला उन्हें हजरत आयशा मिली तो उस बेचारे ने अपनी सवारी पर बिठा लिया और काफिला तक पहुँचाया। किन्तु साथ चलने वालों ने चरित्र पर शक किया। यहाँ तक कि हजरत मुहम्मद साहब भी शक करने लगे। आयशा को पता चलने पर जार-जार रोती रही। अल्लाह ने देखा पति-पत्नी में अशान्ति, अल्लाह को गवाही कुरानी आयतों के रूप में देनी पड़ी। और कहा - वल्ला जीना यर मुना अजवा जहूम व लम या कुल्ला हूम शुहादा ओ इल्ला अन फुसोहुम फ शह दतो अहादिहिम अरवयो शहादतिम विल्ला हे इन्ना हू ल मिनस्सादेकीन, सुरा नूर आयत-6

अर्थ:- और जो लोग तोहमत (आरोप) लगाते अपने जोरुओं (पत्नियों) पर जिनाह का तो उनको चार गवाह पेश करने चाहिए और अल्लाह की कसम खाकर कहें तो वह शख्स अलवता सच्चा है।

अगर यह बात अल्लाह गवाह के बतौर न कहते कुरान में तो मेरे विचार से हजरत आयशा का तलाक हो गया होता । साथ ही विचारणीय बात यह है कि नवी पत्नी बद चलन है या नहीं उसकी गवाही अल्लाह को अपने कलाम में देना पड़ा और जो अल्लाह अदृश्य, निराकार है। मैं ऊपर लिख आया हूँ कि कुरानकर्ता अपनी भाषा में अपनी बुराई को छिपाने कि लिए अल्लाह का सहारा लेकर अथवा अल्लाह का नाम लेकर बच निकलने का पूरा प्रयास किया। इसे कलामुल्लहा कहना बुद्धि के परे की बात है।

नोटः हजरत मुहम्मद साहब 52 वर्ष की आयु में 6 वर्ष की आयशा से शादी की थी।

प्रमाण 2 - अरब का रहने वाला हारिस बिन जैद को विरोधियों ने पकड़ लिया, हजरत मुहम्मद साहब ने मक्का शहर से जैद को खरीदा। कई वर्ष के बाद जैद के पिता व भाई वापिस लेने आये। परन्तु जैद ने अपने घर जाने से मना किया और हजरत मुहम्मद साहब के पास ही रहने लगा। हजरत साहब ने उस जैद को अपना बेटा बना लिया और लोग उसे जैद विन मुहम्मद कहते रहे। हजरत ने उसी जैद की शादी अपनी फुफी जाद बहन जैनब से करा दी। वह ऊँचे घराने की होने से गुंलाम जैद पर प्रसन्न न थी तो ज्यादा दिन तक घर निभाना सम्भव न हुआ। तलाक देना चाहा तो रसूल ने मना किया। पर आखिर तलाक हो ही गया, रसूल ने उस जैनव को निकाह किए बिना अपने घर रख लिया। लोगों में कानाफूंसी होने लगी तो फोरन अल्लाह ने कुरान में गवाही दे डाली और कहा-फलम्मा कजा जैदुम मिनहा बतारन जऊवज नकाहा ले कईला यकुना अलल मोमेमीन-सुरा अहजाब आयात - 37

अर्थ :- फिर जब जैद का जी भर गया जैनव से तलाक दिया उसे तो मैंने (अर्थात् अल्लाह ने) निकाह करा दिया अपने नवी से जैनव का ताकि और मोमीन भी समझ लें कि पालक बेटे के तलाक शुदा पत्नी से भी निकाह करना जायज है।

यहाँ मेरा प्रश्न उलामाये दीन से है कि अल्लाह ने निकाह कराया अपने नवी से जैनव का तो गवाह कौन-कौन थे? और मेहर कितना रखा गया था? क्योकि इसी सुरा में अल्लाह ने कहा - या अई योहन्नीवीयों इन्ना अहललना लका अजवाजकल्लती आ तई ता उजुरा हुन्ना। अर्थात् ऐ नवी हलाल किया हमने तेरे वास्ते तेरी बीबिओं को जिसे दिया है, तू ने मेहर उस का । यानी मेहर दिए विना उस पत्नी का उपभोग करना सम्भव नहीं, कुरान में ऐसी बातों का ही प्रतिपादन किया गया है। अहजाब आ. 50

नोटः- नवी का निकाह अल्लाह को कराना क्यों पड़ा? वह भी जैनब से-ओरों से तो कभी नहीं कराई।

अल्लाह का अर्श जहां है फरिश्तों को वहां तक पहुँचने में 50 हजार वर्ष लगते है, तो कितने वर्षो में कुरान का पूर्ण होना सम्भव है।

तोरैत, जबूर, इनजील में कौन सी बात की कमी रह गई थी जिसे अल्लाह ने कुरान में पूरा किया अगर कमी रह गई हो उन किताबों में तो अल्लाह का ज्ञान भी अधूरा हुआ उन किताबों को मानें बिना कोई मुसलमान भी नहीं हो सकता। ईश्वरीय ज्ञान किसी मुल्क वालों की भाषा में होना सम्भव नहीं। यहीं कारण है विश्व के किसी कोने में भी बच्चा पैदा होता है रोने की, हंसने की चिल्लाने की आवाज़ एक ही होती है। किसी मुल्क वालों की भाषा में कोई भी बच्चा नहीं रोता क्योंकि वही परमात्मा का ज्ञान है और वह है 'वेद' जो ईश्वरीय ज्ञान है आदि सृष्टि से है और अन्त तक रहेगा।

आर्यो के कर्म काण्ड में एकरूपता न होने के लिए दोषी कौन ?

*****

विश्वभर में अनेक मत् मतान्तर सम्प्रदाय का जन्म हुआ। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध व जैनियों के नाम से जाना जाता है। इन मतवादियों में अनेक गुट भी है, किन्तु संस्थापक इनके एक ही है, इन मतवादियों में सिद्धांतिक मतभेद है और आपस में एक दूसरे के साथ भी मेल नही खाता, किन्तु इन सभी मतवादियों का कर्मकाण्ड एक ही है कर्मकाण्ड में एक दूसरे से मतभेद है।

उदाहरणार्थ ईसाईयत का प्रचार हुआ जरुजालिम के वैतुल मुकदद्स से इन ईसाई में कैथलिक और प्रोटेस्टन, इन में विवाद हजरत ईसा मसीह के मरने व न मरने को लेकर है तथा प्रलय से पहले ईसामसीह का पृथ्वी पर आने तथा न. आने को लेकर है पर उपासना पद्धति में कोई मतभेद नहीं।

अर्थात वैतुल मुकदद्स में ईसाई जिस प्रकार से प्रेयर करते हैं भारत में रहने वाला ईसाई भी उसी पद्धति से प्रेयर करता है। नेपाल जैसे हिन्दू राष्ट्र में रहने वाला ईसाई भी उसी तरीके से प्रेयर करता है।

इसी प्रकार अरब से इस्लाम का प्रचार हुआ। अरब का रहने वाला जिस प्रकार से नमाज पढ़ता है, भारत का रहने वाला मुसलमान हो या नेपाल जैसे हिन्दू राष्ट्र में रहने वाला मुसलमान का नमाज पढ़ने का तरीका एक ही है, यद्यपि इस्लाम में अनेक गुट है, जो एक दूसरे से काफी कुछ मतभेद रखते हैं।

जैसे शिया और सुन्नी में मतभेद है, हनफी, कादयानी में मतभेद, सुन्नी में ही कई फिर के हैं। देव बन्दी और बरेलवी में मतभेद है, यहाँ तक की इस्लाम जगत में कर्मकाण्ड को दर्शाने वाले चार ईमाम हुए है। उन चारों में भी मतभेद हैं, ईमाम अबु हनीफा, ईमाम शायफी, ईमाम हम्बल तथा ईमाम मलिक के नाम से प्रख्यात है इनमें ईमाम अबुहनीफा को मानने वालों की संख्या अधिक है और इसी में ही बहत्तर फिरके माने जाते है या कयामत तक बहत्तर फिरके हो जायेंगे आदि।

और हिन्दुओं में भी यही बात है कहीं कही पूजा व पूजनालय के नाम से मतभेद है। इतना सब कुछ होने के बाद भी पूजा करते समय आरती उतारते समय सभी एक ही पुस्तक को अमल में लाते है, इसमें किसी का कोई मतभेद नही और कोई यह भी नहीं कहता कि मै अलग ढंग से देवी पर प्रसाद चढ़ाऊँगा या अलग और कुछ करता रहूँ आदि।

नमाज में भी तरीका ठीक वैसा ही है कि मैं अलग प्रकार से नमाज अदा करूंगा या अलग आयत का पाठ करूंगा। कुरान न पढ़कर नमाज में हदीसों को पढ़ूँगा आदि। चाहे कितना मतभेद क्यों न हो और बातों पर किन्तु कर्मकाण्ड चाहे शादी में हो या जनाजे में सबका नियत एक ही है, तरीका भी एक ही है।

किन्तु आर्य समाज इन जैसे मत पंथ नहीं हैं, विशुद्ध सत्य सनातन वैदिक धर्म है वेद पर आधारित है ईश्वर प्रदत्त धर्म है व्यक्ति विशेष द्वारा चलाया गया नहीं है। आदि सृष्टि से है और प्रलय तक ही रहेगा, इसमें कोई परिवर्तन न आया न ही आना संभव है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जब आगमन नही हुआ था, उससे पहले यह धर्म था आज भी है और आगे भी रहेगा। योगीराज कृष्ण जब नही थे उससे पहले भी यह धर्म था आज भी है और प्रलय तक रहेगा। इस धर्म के कर्म काण्ड भी शाश्वत रहा। कालान्तर में ऋषि दयानन्द ने भी माना है महाभारत काल के कुछ पहले ही इस धर्म का ह्रास हुआ था और युद्ध में अनेक विद्वान मारे गए और जो बचे भी उन्होने अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं किया यहाँ तक कि दयानन्द के कार्य काल में वेद को भी जर्मनी से मंगाना पड़ा।

पुन: नये ढ़ग से ऋषि दयानन्द को वैदिक धर्म के प्रचार हेतु अनेक बार विष पान भी करना पड़ा। दयानन्द ने साफ शब्दों में कहा अलग कोई मत चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है सत्य का प्रतिपादन करना अपना उद्देश्य समझता हूँ। ब्रह्मा से लेकर जैमनी पर्यन्त ऋषि मुनियों के जो विचार है उसी का उजागर करना अपना कर्त्तव्य मानता हूँ।

अत: यह स्पष्ट हो गया आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द अलग कोई मत न चलाकर ईश्वर प्रदत्व सनातन वैदिक धर्म का उजागर करते हुए

आर्य शब्द को वेद तथा ईश्वर से जोड़कर वेद से ही प्रमाण दिया। आर्य नाम वेद का है। अहम् भूमिम् आद्दाम आर्यः और आर्य नाम ईश्वर पुत्रः भी वेद में आया है। परन्तु कुछ मूढ़ व न समझ लोग इस वैदिक नाम को तथा ईश्वर के दिए गये नाम को छोड़ मुसलमानों द्वारा दिये गये 'हिन्दू' नाम को स्वीकार करने में भी संकोच नहीं करते और 'गर्व से कहो हम हिन्दू हैं' कहकर अपने कर्त्तव्य का पालन छोड़ दिया और जब से ईश्वर पुत्र आर्य के बजाय हिन्दू बन गये तो अपना क्रियाकलाप उपासना पद्धति और कर्मकाण्ड भी वैदिक होने के बजाय पौराणिकता को अपनाया, जो कर्म काण्ड सत्य पर आधारित था उसमें मिलावट हो गया।

आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द को सत्य का प्रतिपादन करने हेतु और वैदिक ऋषियों की मान्यता की स्थापना हेतु अनेक यातना व मान-अपमान और ईटें व पत्थर खाकर भी ईश्वर पुत्र आर्यों में एक रूपता लाने हेतु न मालूम किन-किन ग्रन्थों का अवलोकन किया, और सभी आर्यो को एक वेद रूपी धागा में पिरो कर सत्यार्थ प्रकाश से लेकर वेद भाष्य तथा छोटी छोटी पुस्तकों को लिखते हुए आर्यो का कर्म काण्ड कैसा हो इस पर दो पुस्तके पंचमहायज्ञविधि व अन्तिम पुस्तक संस्कार विधि को लिखा, यद्यपि लिखने वाले विद्वानों ने मनमानी किया जिसके दूसरे संस्करण में सुधार किया गया आदि।

मूल रूप से आर्यो को बताया पांच महायज्ञ है, आर्य लोगो इसे जीवन में उतारना। वैसा ही यज्ञ तो प्रत्येक श्रेष्ठ कार्य को ही कहा गया, किन्तु उन यज्ञों में पांच ही महायज्ञ हैं -1. ब्रह्मयज्ञ; 2. देवयज्ञ; 3. पितृयज्ञ; 4. बलिवैश्व देव यज्ञ और 5. वा अतिथि यज्ञ जैसा इन यज्ञों के नाम अलग अलग हैं, ठीक इसी प्रकार इसमें आहुति डालने के मन्त्र भी अलग ही दर्शाया है। देव यज्ञ को ऋषि ने दो भागों में बांटा है एक सामान्य प्रकरण और दूसरा वृहद के नाम से, सामान्य यज्ञ को नित्यप्रति प्रातः सांय सोलह आहुति देने को लिखा है, क्योंकि सामान्य प्रकरण नित्य दोनों समय करने का हैं और वृहद प्रकरण किसी शुभ कार्य के अवसर में करने को लिखा हैं। और वृहद यज्ञ में ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना, स्वस्ति वाचन, शान्ति करण, पश्चात अग्न्याधान, और नित्य में सामान्य प्रकरण के सभी मंत्रों से आहुति देने के बाद ही वृहद प्रकरण के

आहुति डालने हेतु दर्शाया गया। व्याहृति 4 (चार) आज्याहुति मंत्र 12 (बारह) फिर गायत्री और अंत में स्विष्टिकृत आहुति लिखा है। इसके अतिरिक्त आहुति के लिए मात्र दो मंत्र का चयन किया है गायत्री व विश्वानि देव मंत्रों से हजार आहुति देने की बात ऋषि दयानन्द ने लिखी है।

मुझे आर्य समाज का प्रचार करते प्राय: 24 वर्ष हो गया है आर्य समाज के कर्म काण्ड में एक रूपता नही देखी न मालूम क्यों? कुछ विद्वान जन तर्क देते हैं, कि यह अन्तिम किताब है संस्कार विधि इसमें विद्वानों ने मिलावट किया है। अत: मैं जो कह रहा हूँ यही ठीक है।

आर्य समाज में विद्वान जन ऋषि दयानन्द को मानने के बजाय अपने विद्वता का प्रदर्शन अधिक करते हैं, यहाँ तक मैंने देखा सत्यार्थ प्रकाश में लोगों ने अपने को संसोधक व सम्वर्धक लिखा। आचार्य प्रियदर्शन जी ने बंगला सत्यार्थ प्रकाश में यही शब्द लिखे है, स्वामी जगदीश्वरानन्द जी की भी मान्यता कुछ इस प्रकार है कि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में कुछ अशुद्ध ही लिखा मैं शुद्ध कर रहा हूँ।

मैं लिख रहा था यज्ञादि विषय, माहात्मा प्रभु आश्रित जी की मान्यता अलग। आचार्य विश्वेश्रवा जी की मान्यता अलग। पं. श्री युधिष्ठर मिमांसक जी की मान्यता अलग। स्वामी मुनीश्वरानन्द जी की मान्यता अलग। स्वामी इन्द्रदेव यति पीली भीत वाले की मान्यता अलग और कई विद्वान् अलग मान्यता रखते हैं।

सबसे बड़ी बात यह है कि विभिन्न प्रकाशन वालों ने भी अपनी मन मानी की है जिनको जो भाया अपने विद्वत्ता का प्रदर्शन किया, यहाँ तक की मर्यादा को भी ताक पर उठाकर रखा, बुद्धि पर भी ताला डाल दिया, मैं सुनता हूँ कि इस उलझे हुई मसले को सुलझाने हेतु धर्मार्य सभा नाम की संस्था काम करती है। यह सभा सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत है, परन्तु सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित कर्मकाण्ड के तीन पुस्तकें हैं और तीनों एक दूसरे से मेल नही खाता।

पिछले दिन आर्य जनों ने देखा, सुना और पढ़े भी हैं आर्य समाज एक सौ पच्चीस वाँ महा सम्मेलन मुम्बई में मनाया यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सत्यम जी

थे और उन्होंने प्रत्येक आहुति को ओम् स्वाहा कहकर डलवाने हेतु विरोध हुआ। सबसे पहले आचार्या सूर्या पाणिनी कन्या विद्यालय वाराणसी प्रोफेसर ज्वलन्त कुमार जी डॉ सोमदेव आदि कमर बांध कर विरोध किया और शास्त्रों का प्रमाण आर्य समाज व दयानन्द भी ओम् स्वाहा के घेरे में लेख पर लेख विभिन्न पत्रिकाओं में निकालते रहे, पुस्तक भी निकाली गयी आदि । और यह आरोप मात्र स्वामी सत्यम जी पर ही नही अपितु सार्वदेशिक सभा प्रधान माननीय कैप्टन साहब पर भी लगाया गया। उनके परिधान की भी आलोचना सूर्या जी के लेखनी के माध्यम से हुआ आदि, धर्मार्य सभा की निष्क्रियता उजागर हो गई। कोई भी बयान नही आया, और न ही सार्वदेशिक सभा की ओर से कोई निर्णय। ओम् स्वाहा के पक्ष में। शास्त्रीय पक्ष को ध्यान में न रखकर आचार्य सत्यानन्द वेद वागीश जी का लेख कई पत्रिकाओं में निकलता रहा और दोनों पक्षों के लेखनी निरन्तर विभिन्न पत्रिकाओं में आरोप, प्रत्यारोप, प्राय: प्रश्नोत्तोरी के रूप में निकलते रहे।

परन्तु कोई समाधान आर्य जनों को नहीं दिया गया। साधारण आर्य जनता आज भी दिग्भ्रमित हैं। मैं ऋषि सिद्धान्त रक्षिणी सभाध्यक्ष जी से अनुमति लेकर दोनो पक्ष के विद्वानों को लिखा। आप दोनों पक्ष के विद्वान समय दीजिये हमारी सभा आप दोनो पक्ष के विद्वानों का शास्त्रार्थ कराकर साधारण आर्य जनता के सामने दोनों के शास्त्रार्थ में दिये निर्णय को सामने लाकर दिग्भ्रमित होने से बचाते हुए आर्यों के कर्मकाण्ड में एकरूपता लाना चाहती हैं।

आर्य जनों का दुर्भाग्य रहा अपने को कर्मकाण्डी विद्वान सिद्ध करने वाले दोनों पक्ष के विद्वानों ने मौन साध लिया मात्र एक बहन का उत्तर आया हमें माफ करें हमें अपने हाल में छोड़े अब आर्य जनता स्वयं ही निर्णय ले सकते हैं, कि आर्यों के कर्म काण्ड में मत भेद के दोषी कौन?

इधर विभिन्न प्रकाशन वालों ने भी अपने को ऋषि दयानन्द से अधिक ज्ञाता होने या दिखलाने की होड़ में प्रतियोगिता में जुटे हैं और दयानन्द ने नित्य को पहले लिखा विशेष को बाद में पर अकल के दुश्मनों ने विशेष को पहले करके नित्य को बाद में कर दिया, इन लोगों से कोई यह पूछे कि प्रात: उठकर

शौच स्नानादि धौत क्रिया पहले करते हैं या भोजनादि? यहाँ पर भी बात ठीक यही हो रही है।

ऋषि दयानन्द ने स्विष्टकृद को प्रायश्चित आहुति लिखा है घृत अथवा भात से दें कहा। किन्तु दयानन्द की मान्यता को ताक पर रखते हुये प्रथम चार व्याहृति आहुति के बाद ही यदस्य कर्म वाला मंत्र लिख व छाप रखा है, और उसमें भी पाण्डा पुरोहित घृत व भात छोड़ लड्डू, बरफी, हलवा, खीर की पूछते हैं डालने को।

इन लोगों से यह पूछा जाय कि प्रायश्चित पहले हो गया और गलती बाद में हो जाय तो? यही कारण है ऋषि ने अन्त में लिखा। मीमांसक जी भी यही मानते हैं।

ऋषि दयानन्द कर्म काण्ड की दोनों पुस्तको में किसी भी प्रकरण में त्र्यम्बकं मंत्र को नही लिखा और न ही स्तुता मया को लिखा, पर दयानन्द का अपमान या अनभिज्ञता को दर्शाया गया इन मन्त्रों को लिख तथा बोलकर, जनता को क्या दर्शाना चाहते हैं ईश्वर जाने? इस प्रकार कर्म काण्ड को मनमानी बनाकर आर्य जनता को गलत फहमी का शिकार बनाया जा रहा है इस पर नियंत्रण कौन रखे यह जिम्मेदारी किसकी है? ऋषि दयानन्द ने संस्कार सोलह लिखा है और महायज्ञ पाँच। और आज नित्य प्रति आर्य समाजियों द्वारा इससे हटकर न मालूम कितने संस्कार कराने लगें हैं और कितने ही महायज्ञ करवाया जा रहा है। ऋषि दयानन्द ने उपनयन संस्कार का एक अलग प्रकरण लिखा है किन्तु आज सामान्य यज्ञ में केवल यज्ञोपवीत मन्त्र से उपनयन दिया जा रहा है इसमें यज्ञोपवीत संस्कार को ही समाप्त कर दिया, क्योंकि जब यज्ञशाला में बैठे-बैठे उपनयन मिल ही जाता है तो उसका संस्कार कौन करावें?

यही हाल बलिवैश्व देव यज्ञ का है। सामान्य यज्ञ में ही बलिवैश्व देव यज्ञ के मन्त्रों से आहुति डलवाया जा रहा है, जबकि बलिवैश्व देव यज्ञ एक महायज्ञ है उसे भी समाप्त कर दिया। इसके लिये दोषी कौन?

अब देखें वैदिक मान्यता क्या हैं ?

*****

ऋषि दयानन्द के आगमन से समाज को एक नई रोशनी मिली, जिससे लोग वंचित थे। ईश्वर के नाम पर धोखा धड़ी एक दूसरे को वरगलाना वैसा आज भी है। ईश्वर के नाम से लूट खसोट तो खूब साधारण सी बात हैं यहां तक कि ईश्वर के नाम से ही मानव-मानव का दुश्मन व गले की हड्डी बन चुका है, जिसका जीता जागता स्वरुप आज गुजरात व यत्र-तत्र देखने को मिल रहा है। इन सभी प्रश्नों का समाधान ऋषि दयानन्द के विचारों से हो सकता है। स्वामी जी की दृष्टि में ईश्वर के नाम से झगड़ा करने वाले ईश्वर के सन्दर्भ में अनभिज्ञ है और यही कारण बना झगड़े का। दरअसल धरती पर रहने वाले ईश्वर को अपनी-अपनी सुविधानुसार बांट लिया और मानने लगे। जैसे कुछ लोग है जो ईश्वर को मानते है पर जानते नहीं। जिसमें कुरान तथा बाईबिल के मानने वाले यह लोग विना जाने ही मानने लगे, क्योंकि कुरान तथा बाईबिल के अनेक स्थानों में अल्लाह एक व्यक्ति विशेष को माना गया है जो सातवां तथा चौथा आसमान पर अपने सिहासन लगाकर बैठे है। कुरान-सुरा युनुस-आयत=3 का अर्थ निश्चय तुम्हारा परवर दिगार अल्लाह है जिसने पैदा किया आसमानों व जमीनों को छः दिन में फिर करार पकड़ा ऊपर अरश को।

सुराहूद = आयत 7 का अर्थ = और जिसने पैदा किया आसमानों और जमीन को छः दिन में और है तख्त उसका पानी पर, अल्लाह का तख्त कितना ऊँचा है देखें कुरान सुरा मयारिज = आयत 4 का अर्थ चढ़ते है फरिश्ते और रुह तरफ उसकी मिकदार है पचास हजार साल यही मान्यता बाईबिल की है।

इन आयतों पर विचार करने से लगता है ईश्वर के बारे में इन सबकी धारणा ही गलत हैं क्योंकि अल्लाह इतने ऊँचे पर है जो फरिश्तों को उस तक पहुँचने में पचास हजार साल लगता है जो कुरान में कहा गया है। तो पूरी कुरान मात्र ग्यारह साल में क्यों और कैसे अल्लाह के पास से जमी पर आना सम्भव हो सकता है?

कुरान तथा वाईविल में इस प्रकार की अनेक बातें है जो विज्ञान विरुद्ध, बुद्धि के विरुद्ध भी। जैसा एक तरफ तो अल्लाह को जर्रे-जर्रे (कण-कण) में मानते है तथा दूसरी ओर अल्लाह को जहन्नुम से अलग मानते है और यह एक दूसरे शब्द के विरोधी है। इससे स्पष्ट होता है कि ईश्वर को अपने मनमानी तरीके से बना लिया गया तथा मानने लगे है।

मात्र इतना ही नहीं कुरान व वाईबिल को पढ़ने पर मालूम होता है कि अल्लाह व गॉड नाम का एक व्यक्ति विशेष का है तथा एक जादूगर जैसे देखें कुरान सुरा बकर आयत 65+66 में अल्लाह ने इन्सान को बन्दर बना दिया। यहाँ एक बात याद आना स्वाभाविक है कि डारविन की मान्यता थी कि बन्दर से इन्सान बना। पर अल्लाह ने उल्टा करार दिया न मालूम किसके आगे किसके पीछे है? देखें कुरान सुरा बकर आयत 73 मुरदा बोल उठा वही सुरा बकर पत्थर मूसा का कपड़ा ले भागा। सुरा आयराफ आयत 106+107 मुसा की छड़ी अजदहा हो गया फिर सुरा नमल आयत 10 मुसा की लाठी जब मुसा ने देखा कि लाठी दौड़ रही है। जैसा पतला सांप कुरान सुरा आयराफ 132+133 का अर्थ = हम कभी यकीन न करेंगे यह कहना था मुसा के जमाने के लोगों का और न ईमान लायेगे तो मुसा ने उन पर पानी का तुफान भेजा, कि सात दिनों तक उनके घरों में भरा रहा जो बैठे हुये लोगों में उनके हलक तक पहुँचा और भेजा टिडडियों को जो सात दिन उनके खेतों को खा गया, फिर भेजा कीड़ों को उसने बचा हुआ अनाज खा गया और भेजा मेढ़क को जो उनके खाने में तथा घर में भर गया। यह सब करामात अल्लाह की है कुरान सुरा आयराफ आयत 136 अर्थ डुबो दिया उनको दरिया ये शोर में क्यों कि वह हमारे हुकमों को झुठलाते थे, और हमारी आयतों से वह बेखवर थे। इसी सुरा के आगे आयत में अल्लाह ने दरिया को चीर कर दुश्मनों के हाथ से तुम्हें बचाया और फिरायून को उसमें हलाक कर दिया बताया।

कुरान सुरा बकर आयत 87 का अर्थ ईसा मरियम के बेटे को मोयजजा (चमत्कार) जिन्दा करना मुर्दो को, अन्धों को अच्छा करना यानी आँख दान करना यह वरदान अल्लाह ने हजरत ईसा को दी थी, मेरे विचार से ईसाईयों को जन्म से ही आँख का डाक्टर हो जाना चाहिये था, यह सारा करामात

कुरान तथा बाइबिल के है, यही कारण है बगैर बाप के बेटे की पैदाइश ईसा का। कुरान सुरा अलइमरान आयत 39 तथा सुरा मरियम के कई आयतों में कहा गया है। 12-13-14-15 इस प्रकार कुरान तथा बाईबिल में ईश्वर के बारे में लोगों की धारणा ही गलत है, और यह सब बातें इसलिए हुई कि ईश्वर को ना लोग अनजान में ही मानने लगे। अगर जान कर मानते तो इस प्रकार ईश्वर के साथ ईश्वर के नाम आरोप लगाने वाली बातें न करते। मात्र ईसाई व मुस्लिमों की नहीं। यही दशा अन्य सम्प्रदायों में भी है, जैसा शंकराचार्य का मानना है अहम् ब्रह्मास्मि मैं ब्रह्म हूँ यह सब शब्द भी ठीक उसी प्रकार है जैसे अन्य लोगों का है, क्योंकि सही और निष्पक्ष तरीका वेद का है, ईश्वर, प्रकृति, जीव यह तीनों अलग-अलग है। और यह तीनों अनादि तथा समकालीन है।

अगर मान लें जीवात्मा ईश्वर का अंश है तो दोनों में गुण एक होना चाहिए पर एक सर्वज्ञ है और दूसरा अल्पज्ञ फिर। अंश होने का प्रश्न ही समाप्त, और अगर अंश निकाला जाये तो उसमें अंश की कमी आना स्वाभाविक है, इससे बात अपने आप कट जाती है। इसका सही और सच्चा निष्कर्ष है कि शरीर मेरा है, मैं शरीर नहीं। कपड़ा मेरा है मैं कपड़ा नहीं, आँख मेरी है मैं आँख नहीं, प्रत्येक अंग ही मेरा है मैं अंग नहीं, ठीक इसी प्रकार हम सबमें ब्रह्म है पर हम सब ब्रह्म नहीं, इतनी सी बात शंकराचार्य के कहने पर तुलसी ने भी इसी का सहारा लिया, और कहा ईश्वर अंश जीव अविनाशी, मात्र शंकराचार्य के कहने पर ही स्वामी विवेकानन्द जी ने भी इसका सहारा लिया यह सब हिन्दू मानसिकता की बात है और सभी हिन्दूओं ने शंकराचार्य को गुरु माना है। अवश्य यह ख्याल रहे कि, मात्र हिन्दू में ही यह गलती सम्भव है, अन्य सम्प्रदायों में नहीं, न ईसाई इस मान्यता को स्वीकार करते और न हीं मुसलमान, क्योंकि इन हिन्दुओं से उन लोगों की धारणा ईश्वर के प्रति अलग है, और ईसाई तथा मुसलमान में भी ईश्वर को मानने का तरीका अलग है। जैसे ईसाई हजरत ईसा मसीह को अल्लाह का एकलौता बेटा मानता है, इस्लाम इस से सहमत नहीं है। क्योंकि इस्लाम की मान्यता है कि अल्लाह का कोई बेटा नहीं, और न उसका कोई पिता, नहीं उसका मां और नहीं कोई भाई। यही करण था ईश्वर अंश जीव को कहने पर इस्लाम वालों ने मनसूर हिल्लाज

को मार डाला, मात्र इतना ही कहा था उसने-अनल हक = मैं वही हूँ । मेरे विचार से शंकराचार्य के इस विचार पर अहं ब्रह्मास्मी पर प्रतिबंध लग जाता तो शायद परमात्मा के नाम से जो आज खिलवाड़ कर तथा चल रहा हैं वह तो न होता कम से कम, यह सरासर वैदिक सिद्धान्त के साथ मजाक किया गया।

यही कारण बना हिन्दू मानसिकता वालों की राम को तथा कृष्ण को भी ईश्वर मानने लगे सिर्फ ईश्वर को न समझने के कारण वह बखेड़ा जगत में हैं।

कुछ लोग और है जो प्रकृति को मानते है परमात्मा को नहीं, जबकि प्रकृति अपने आप में जड़ है ज्ञान शून्य भी, चेयर, टेबल, कुर्सी आदि न अपने आप बन सकती है और न कुछ कर सकती है। प्रकृति को सब कुछ मान लेना मूर्खता से खाली नहीं, अगर कोई कहे कि प्रकृति दिखाई देती है, और परमात्मा दिखाई नहीं देता इसलिए नहीं मनना चाहिए। तो इस का सीधा जवाब है हवा का रंग, पानी का रंग, आपके अन्दर जो आत्मा काम कर रही है उसका रंग तथा आपके आत्मा को कब और कहां देखा? जब परमात्मा को बिना देखे नहीं मानना चाहिए, तो आत्मा को बिना देखे क्यों मानते है? जैनी भी परमात्मा को नहीं मानते और उनका तर्क है शराब पीने पर अपने आप नशा होता है नशे को देने के लिये किसी बिचौलिया की आवश्यकता नहीं है। तो जीवात्मा अपने आप आता जाता है फिर परमात्मा रूपी विचौलिया की क्या आवश्यकता? ध्यान देने योग्य बात है, जब जीवात्मा आता है कर्म करने के लिए और फिर कर्म करके चला जाता है। अगर परमात्मा न हो तो उसे कर्म फल कौन दे भला? क्यों कि जीवात्मा अपने पापों का दण्ड भोगना ही नहीं चाहेगा जीवात्मा को कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र छोड़ा है, फल जीवात्मा अपने आप लेना नहीं चाहेगा और न अपने पापों को स्वीकार करना चाहेगा।

अत: परमात्मा का न मानना पागलपन ही है और यह कुछ है भी ऐसा, जैसा हम और आप शरीर के वस्त्र को त्यागे तो लोग हमें पागल कहेगें। और दूसरे लोग उसे महात्मा कह रहे है तथा ऐसे जैन मुनि को ही परमात्मा मानते है।

प्रजापिता ब्रह्मकुमारी की मान्यता को देखें यह लोग ईश्वर, प्रकृति, जीव तीनों को ही मानते है किन्तु ईश्वर को सर्वव्यापक नहीं मानते आनन्दधाम में मानते है क्योंकि उनकी मान्यता है जहां परमात्मा का वास है वहां बुराई नहीं

होती है अगर परमात्मा सर्वव्यापक है तो धरती पर बुराई क्यों हो? इसका समाधान बड़ा आसान है ईश्वर अगर एक जगह रहता है तो अन्य जगहों की बातों को वह कैसा जानता होगा? और यही मान्यता कुरान वालों की भी है तो जब दोनों की मान्यता एक है तो लेखराज जी को अलग संस्था क्यों बनानी पड़ी? उनके साथ मिलकर ही काम करना चाहिए था। अगर परमात्मा सर्वव्यापक न होता तो मानव मात्र को हर बुराई से बचाने हेतु भय, लज्जा, शंका कौन उत्पन्न कराता? और मानव को अच्छे कार्य में प्रेरणा कौन देता? लेखराज के अनुयायी उन्हें प्रजापिता मानते हैं, तो प्रश्न होगा जब लेखराज जी धरती पर नहीं आये थे तब प्रजापिता कौन थे? जब लेखराज जी ही माता पिता के घर में जन्म लिए तो लेखराज के पिता को दादा कहना चाहिए। फिर लेखराज पिता कैसे?

इसी प्रकार धरती पर परमात्मा के नाम से लोग अपनी मन मानी दुकान लगा कर जनता को धोखे में डाल रहे है। और जनता भी अकल के अन्धे और गांठ के पूरे हो रहे है। क्योंकि बुद्धि को सब जगह प्रयोग करते तो है, किन्तु परमात्मा के नाम से बुद्धि का प्रयोग करना नहीं चाहते। जैसा हम नित्यप्रति देखते है सड़क पर बैठ कर एक दूसरे का हाथ देख कर उसका भाग्य बताता है और प्राय: पढ़े लिखे लोग ही अपना हाथ दिखा कर भाग्य की जानकारी लेना चाहते है। परन्तु हाथ देखने वाले से आज तक किसी ने यह नहीं पूछा कि आप अपने बारे में क्या जानते है? क्या आप का भाग्य यही है कि कड़ाके की धूप में बैठ कर कुछ मुद्रा के लालच में लागों के दिये गये भिक्षा पर ही आपको निर्भर रहना है, इसका समाधान आज तक नहीं आया। और यह सब ईश्वर को न जानने के कारण ही हो रहा है। ठीक इसी प्रकार आचार्य रजनीश ने दुनियाँवालों को धोखा दिया है, पढ़े लिखे लोग इस में फसते गए। पर विदेश से अपनी दुकान छोड़ कर ही भागा। दरअसल ईश्वर के नाम से जितने भी लोग दुकान चलाये, अगर उन्हें ईश्वर के बारे में सही जानकारी होती तो सब लोगों को अलग-अलग मान्यताएं रखनी नहीं पड़ती। अपितु सब एक साथ मिलकर ही ईश्वर के नाम से मानव मात्र को सही और सच्चा रास्ता दिखाते। परेशानी की बात यह है कि दुनियां के लोग आलसी और प्रमादी होने हेतु

ईश्वर को भी मुफ्त में पाना चाहा इसी मानसिकता ने समाज में ईश्वर के नाम से दुकानदारी करने वालों को बढ़ावा दिया ।

ऋषि दयानन्द ने भलीभाँति सभी मान्यताओं को नजदीक से देख तथा समझ कर आदि सृष्टि से ऋषि और मुनियों की जो परम्परा थी उसी को उजागर किया। और कहा ईश्वर को जाने बिना मानना अपने आप में धोखा है। अत: ईश्वर को पाने का सीधा व सरल तरीका है योग।

योग अर्थात् जोड़ आत्मा + परमात्मा का मेल दोनों को जोड़ने का नाम योग है जोड़ने का तरीका आठ अंगों में निहित है। दोनों को जोड़ने के लिए भी दोनों का जानना आवश्यक है, क्योंकि किसको किसके साथ जोड़ना है अगर यह जानकारी न हो? तो प्राय: लोगों को पता है कि बिजली की तार परस्पर विरोधी जुड़ जाने से पूरी तार को जला देती है। मानव समाज में भी ठीक वही दशा है परमात्मा को जाने बिना ही जोड़ कर मानव शरीर के नस नाड़ी रूपी तार को भी फूंक दिया है। अत: पाठक वृन्दों से प्रार्थना है कि परमात्मा को पाने का रास्ता मात्र पातञ्जलि ऋषि के योगदर्शन ही बताया है। हम सबको प्रयास करना चाहिए परमात्मा को पाने हेतु यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समधि को अपना कर ही हम परमात्मा को पा सकते है। परमात्मा को पाने पर ही दुनियाँ का सारा वितन्डा सामाप्त हो सकता है और सभी परमात्मा के सन्तान बन कर हम सुखी बन सकते है।

दुष्कर्म निवारण व पाप मोचन का रक्षा कवच, आर्यों की मुख्य पत्रिका सार्वदेशिक

*****

पिछले 10 अगस्त 2003 में सार्वदेशिक पत्रिका पृष्ठ 7 पर बड़े अक्षरों में लिखा - दुष्कर्मों के प्रायश्चित का पर्व है श्रावणी। लेखक है श्री प्रो. वाचस्पति उपाध्याय कुलपति लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ । लेखक महोदय ने पूरा जोर दिया है और लिखा है श्रावण की पूर्णिमा को प्रातः स्नान आदि कृत्य करे, यह आत्म शोधन का पुण्य पर्व है, सावधानी के साथ रहने वाले व्यक्तियों से भी प्रमादवश कुछ न कुछ भूल हो जाती है। इन दोषों को दूर करने और पाप से मुक्त के लिए ही श्रावणी का संकल्प कर्मकाण्ड का सबसे बड़ा संकल्प है।

लेखक महोदय ने अपने लेख से यह सिद्ध किया कि, पाप से मुक्ति पायी जा सकती है, बिना भोगे ही स्नानादि के द्वारा जबकि वैदिक सिद्धांतानुसार बिना भोगे पाप क्षमा नहीं होता अर्थात पाप का फल अवश्य ही भोगना पड़ेगा। अवश्यमेव भोगतव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्, शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना ही पड़ेगा। अगर वैदिक मान्यता है कि पाप स्नानादि कृतों से क्षमा हो जाती है तो पौराणिकों के गंगा-स्नान, कुम्भ स्नानादि का विरोध आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने क्यों और कैसे किया?

लेखक ने यहाँ तक लिखा है कि ज्ञात-अज्ञात अनेक पापों का नामोल्लेख कर उनसे मुक्ति पाने की कामना की गई है। आर्यजनों का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि आर्य समाज जन्मकाल से अब तक पाप से बिना भोगे मुक्ति नहीं होती, का प्रचार तकरीर व तहरीर से करते आ रहे थे और आर्य विद्वानों का शास्त्रार्थ होता रहा पौराणिकों से। ईसाई तथा इस्लाम जगत के आलिमों से भी। मात्र इतना ही नही आर्य जगत के शिरोमणी विद्वान शास्त्रार्थ महारथी उस काल के उपाध्याय स्व. श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय जी ने अपनी पुस्तक उर्दू फलसफा आयमाल (हिन्दी कर्मफल सिद्धान्त) नामी पुस्तक में इस विषय का बड़ा स्पष्टीकरण दिया है और आर्यजनों को बताया है कि पाप

करोगे तो भोगना पड़ेगा परमात्मा पाप क्षमा करके तुम पर दया नहीं करते अपितु सजा देकर तुम पर दया करते है।

क्योंकि अगर परमात्मा पाप को क्षमा कर देंगे, तो दूसरा पाप का अवसर मिल जायगा। और अगर परमात्मा सजा दें, तो जीवात्मा पुनः उस पाप को नहीं करेगा। अर्थात् परमात्मा की दया जीवात्मा के पाप क्षमा करके नहीं अपितु सजा देकर जीवात्मा पर दया करते हैं कि मेरे सन्तान से पुनः पाप न हो यानी दोबारा पाप न होने से बचाकर परमात्मा जीवात्मा पर दया करते है। अगर परमात्मा अपने सन्तानों को दण्ड न दें तो जीवात्मा की उन्नति रूक जायेगी, जीवात्मा की उन्नति तब है जब परमात्मा क्षमा कर दे तो परमात्मा न्यायकारी नही हो सकते।

एक बात मैं श्री प्रो. वाचस्पति जी से पूछना चाहूँगा कि स्व. उपाध्याय जी ने तो साफ लिखा है पाप क्षमा नहीं होता और आपकी मान्यता है कि स्नानादि कर्मों से पाप क्षमा हो जाता है, तो महोदय को यह भी चाहिये था कि कौन-कौन से पाप स्नानादि से क्षमा होते हैं उनका उल्लेख करते। जिससे जनता-जनार्दनों का बड़ा उपकार होता आसानी से दुनिया पाप मुक्त हो जाते।

आर्य समाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द अपनी पुस्तक पञ्चमहायज्ञ विधि के प्रथम पृष्ठ में मनु के श्लोक १०९ का प्रमाण दे कर लिखा - अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति। विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।। मनु. अ. ५ श्लोक १०९ स्नानादि से शरीर की शुद्धि-मन की शुद्धि सत्य से-जीवात्मा शुद्ध होता है विद्या तप से और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

ऋषि दयानन्द ने भी माना है कि नहाने तथा स्नानादि कर्मो से शरीर का मैल धुलता है पाप नहीं। आर्यजनों के लिये परेशानी है कि ऋषि की शिरोमणि संस्था के मुख्य पत्रिका आज प्रचार कर रही है। स्नानादि कर्मों से पाप मुक्त होते हैं। लग रहा है सार्वदेशिक सभा अधिकारी मानव समाज को पाप से मुक्ति दिलाने का ठेका ले लिया हो। लेखक तथा लेख के प्रकाशक को शायद यह मालूम नहीं कि, बेशक आप पाप से स्नानादि द्वारा मानव समाज को भले ही मुक्ति दिलाना चाहते हों, परन्तु कुरान, बाईबिल वाले गंगा नहाना हीं पाप समझते हैं। और उन लोगों की मान्यता, पाप से मुक्त होने का तरीका

अलग-अलग है। ईसाई बपतिस्मा लेने पर तथा बैतुल मुकद्दस का परिक्रमा करने पर पाप से मुक्ति मिलती है मानते है।

और मुसलमान, अल्लाह तथा रसुलों पर विश्वास, कुरान व तौरात-जबुर और इन्जिल पर विश्वास, आखेरत के दिन पर तथा अच्छे बुरे का किस्मत और कयामत के दिन सबको एक साथ हिसाब-किताब के लिए उठना, जन्नत व जुहन्नुम में जाना। मक्का मदीना का परिक्रमा संग, असवद का बोसा लेना शैतान को कंकड़ मारना, सफा, मरवा, पहाड़ पर दौड़ लगाकर पाप से मुक्त समझते हैं। मेरा प्रश्न होगा आप जैसे मुक्तिदाताओं से आप लोगों में किनका कहना सही है? ईसाई, मुसलमानों का या फिर आप लोगों का? आप लोगों में से असली मुक्तिदाता कौन है? जबकि एक दूसरे के विरोधी भी है आप सभी।

मनु महाराज ने स्नान से शरीर की शुद्धि लिखा है परन्तु माननीय पाण्डा जी ने लिखा, कि श्रावणी पूर्णिमा पर मिट्टी, गोबर, भस्म, पँचगव्य, अपामार्ग, कुशयुक्त जल आदि द्वारा स्नान से पाप से मुक्ति पाने का साधन माना है। श्री उपाध्याय जी नामी पाण्डा ने आगे लिखा जल के सामने खड़े होकर भगवान सूर्य की स्तुति करते हुए जल से प्रार्थना की जाती है।

आर्य जन लेखक व प्रकाशक महोदय से यह पूछें कि ऋषि दयानन्द ने एक परमात्मा को छोड़ और किसकी स्तुति करने को लिखा है? तथा जल से प्रार्थना करने का क्या अभिप्राय है? जल जड़ है या चेतन? प्रार्थना चेतन से की जाती है या जड़ से? लेखक ने और भी लिखा। यह रक्षा सूत्र समस्त रोगों को दूर करता व समस्त विघ्नों को नष्ट करने वाला है। यह रक्षा सूत्र पूरे एक वर्ष तक सभी रोगों और व्याधियों से सुरक्षित रखता है। अर्थात् रक्षाबन्धन श्रावणी उपाकर्म दोनों कार्य एक साथ सम्बद्ध है। लेखक से कोई यह पूछे कि रक्षाबन्धन अगर सभी रोगों का निदान सूत्र है तो आज इतने वर्षो से हिन्दू मानते आ रहे हैं। फिर यह हिन्दू रोग ग्रस्त क्यों और कैसे? भले ही हमारे महापात्र जी औरों को रोगी न माने, पर भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री माननीय श्री अटल जी को अभी-अभी दोनों घुटने बदलने पड़े या नहीं? श्री अटल जी इतने वर्षों से रक्षाबन्धन बधवाते रहे फिर रोग ग्रस्त क्यों होना पड़ा? दूसरी बात है कि रक्षा सूत्र अगर निरोग होने की या रहने की दवा है? फिर तो कोई किसी को भी

बांधना था? पर हिन्दुओं में बहन ही भाई को क्यों बांधती है? भाई को अगर रक्षा बांधकर बहन रोगों से मुक्ति दिलाती है तो अविवाहिता के लिये तो मान भी लें किन्तु अगर विवाहिता बहन भाई को रक्षा बांधकर रोग से मुक्ति दिलाई, तो क्या पति के साथ अन्याय नहीं होगा?

जबकि विवाहिता महिलाओं को चाहिये कि अपने पति देव को निरोग रखने का प्रयास करना। क्या यह धर्म है या अधर्म? अगर यह धर्म है फिर अधर्म क्या है? जब रक्षाबन्धन वालों को पता ही नहीं कि किसी बहन का रक्षक भाई नहीं। विवाह से पूर्व पिता और विवाह के बाद पति ही रक्षक होते हैं। भाई की कोई भूमिका नहीं, अगर है तो मात्र विवाह संस्कार में।

माननीय पाण्डा जी ने लेखनी के अन्त में बड़ी बुद्धिमानी के साथ अपनी पौराणिंक गाथा को भी सिद्ध किया है। भविष्य पुराण में इन्द्र तथा इन्द्र पत्नी शची के रक्षा सूत्र बांधने का उल्लेख किया है जबकि वैदिक सिद्धान्त में पुराणों को महागप्प माना गया है। पुराणों को धर्म ग्रन्थ नहीं माना आर्य विचारधारा में। आज पुराणों की गाथा का सार्वदेशिक पत्रिका में प्रमाण दिया जा रहा है। यहाँ पाठकगण एक बात को अवश्य ध्यान में रखें कि मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि महिला पति को ही रक्षक मानती है - शची ने पति इन्द्र को रक्षा सूत्र हाथ में बांधने की बात पुराण का प्रमाण माननीय प्रो. उपाध्याय जी ने दिया है और लिखा है हिन्दू जाति लाखों वर्षों से इस पर्व को मनाती आ रही है। फिर बहिन भाई के हाथ में रक्षा सूत्र क्यों बांधती?

आर्य जनों को चाहिये कि प्रो. साहब से यह पूछे कि आप हिन्दू जाति को लाखों वर्षों से कैसे मानते हैं? हिन्दू नाम कब से और किसने दिया? हिन्दू की परिभाषा क्या है? मेरे विचार से इसका उत्तर सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों के पास भी नहीं है और न ही ये लोग वैदिक सिद्धान्त को जानते है। क्योंकि इससे पहले भी कई बार सार्वदेशिक पत्रिका में वैदिक सिद्धान्त के विरूद्ध लेख निकलते रहे हैं यहाँ तक कि ईश्वर अंश जीव हैं को भी सार्वदेशिक पत्रिका में छापा - जवाब स्वामी वेद मुनि परिव्राजक ने तथा डॉ. श्री भवानी लाल भारतीय जी ने भी दिया। मैंने भी लिखा था घर को आग लगी घर के ही चिराग से शीर्षक पर। और व्यक्तिगत पत्र श्री सभा प्रधान कैप्टन

साहब तथा उप प्रधान श्री वधावन जी को भी लिखा था। उत्तर प्रधान जी का मिला था। आगे से कोई वैदिक सिद्धान्त के विरूद्ध सार्वदेशिक पत्रिका में नहीं निकालेंगे। अवश्य ध्यान रखा जायेगा न मालूम श्री प्रधान जी इस लेख को वैदिक सिद्धान्त के विरूद्ध मानते हैं या नहीं? श्री उप प्रधान जी का पत्र आया मेरे पत्र के जवाब में आपके बातों पर अवश्य ध्यान दिया जायेगा। आप समय निकालकर मेरे से मिलें कुछ समय दें तो संयुक्त रूप से कार्य करें। यद्यपि मैं कई बार फोन से सम्पर्क करने पर भी समय नहीं मिला, मिलने का।

आर्य सन्देश में भी इसी प्रकार वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध लेख छापा जाता रहा है। मैं लेखक व सम्पादक दोनों को ही लिखा - लेखक ने साफ कहा यह लेख मेरा नहीं है। मुझे पता भी नहीं यह लेख मेरे नाम से कैसे छापे मुझे पत्रिका भी नहीं मिली, सम्पादक मौन हो गये। वह लेख मनुदेव अभय जी का था?

जहाँ तक सार्वदेशिक पत्रिका की बात है तो 10 अगस्त 2003 के प्रकाशित पत्रिका में कई लेखकों के सिद्धान्त के विरूद्ध लेख हैं। लेखकों ने रक्षाबन्धन के रक्षा सूत्र को सभी प्रकार से रक्षा कवच माना है। सार्वदेशिक 10 अगस्त 2003 के पृष्ठ 6 पर लेखक आकाश शुक्ल ने तो यहाँ तक लिखा कि आज रक्षाबन्धन पर्व व्यापक रूप से मनाने की आवश्यकता है और आगे लिखा है, पाकिस्तानी हमलावर निर्दोष जनता की हत्या कर रहे हैं कहीं कट्टरपंथी ईसाई, मुसलमान, हिन्दुओं का धर्मान्तरण व दंगा लूटपाट हो रहा है, इस हेतु रक्षाबन्धन का व्यापक प्रचार होना चाहिये। लेखक व सम्पादक सार्वदेशिक साप्ताहिक से प्रश्न है कि इस रक्षाबन्धन से और पाकिस्तानी आतंकवादी तथा ईसाई व मुसलमानों के धर्मान्तरण से क्या सम्पर्क है?

क्या रक्षा सूत्र आतंकवाद रोकने की औषधी है या फिर धर्मान्तरण को भगाने का उपाय? कोई भी स्वस्थ दिमाग वाला इसे गले के नीचे उतार सकता है? अगर हाँ तो क्यों और कैसे?

अगर रक्षा सूत्र रक्षा कवच था, फिर भारत का आधा पाकिस्तान क्यों और कैसे बना? सोमनाथ मन्दिर, राम मन्दिर, काशी विश्वनाथ मन्दिर, कृष्ण जन्म स्थान को रक्षा सूत्र के द्वारा क्यों नहीं बचा पाया? पुरानी बातों को अगर

छोड़ भी दें शायद रक्षा बन्धन का प्रचार उस समय इतना न रहा हो, परन्तु आज आये दिन काण्ड पर काण्ड होता जा रहा है फिर रक्षा सूत्र उन काण्डों को क्यों नहीं रोक पाया?

दिल्ली के लाल किला में आतंकवादी प्रवेश कर गये भारत का प्लेन हाई जैक कर लिया और उसमें बैठे यात्री के हाथ में भी रक्षा सूत्र बंधे हुए थे। यहाँ तक कि उस प्लेन के हाई जैक करवाने का अधिनायक मौलाना मसूद अजहर को उसके घर तक छोड़ते समय यशवन्त सिंह का रक्षा सूत्र काम नहीं आया?

रघुनाथ मन्दिर में रक्षा सूत्र वालों का छक्का छुड़ा दिया। अमरनाथ यात्री भी रक्षा सूत्र बांधकर ही गयें उन यात्रियों के सन्तानों को अनाथ होने से रक्षा सूत्र नहीं बचा सके?

जिस अन्धविश्वास और रूढ़ीवाद से बचाने के लिए ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज बनाया था। आज उसी रूढ़ीवाद को आर्यजनों के मुख्य पत्रिका सार्वदेशिक साप्ताहिक द्वारा हीं प्रचार किया जा रहा है। जिस वैदिक सिद्धान्त का प्रतिपादन ही आर्यों का एकमात्र लक्ष्य था आज आर्यों का शिरोमणि सभाधिकारी द्वारा ही सिद्धान्तों का गला घोटा जा रहा है। अब आर्य समाज व वैदिक सिद्धान्त की मान्यता और पौराणिक मान्यता में या ईसाई और मुसलमानों की मान्यता में क्या अन्तर रह गया है? जिस मान्यता के बल पर आर्य जगत के विद्वान शास्त्रार्थ किया करते थे, आज उसी अन्धविश्वास में आर्य समाज को आर्य समाज के कार्यकर्त्ता छोटे से लेकर सर्वोच्च अधिकारी तक गर्त में ले जाने के प्रयास में लगे हैं।

दयानन्द ने सत्य के सामने राजा महाराजा के सम्पत्ति को ठोकर मारी थी और आज लोभ-लालच के वशीभूत होकर विभिन्न प्रान्तों में दो तीन सभा बनवांने में जुटे हैं। समाज में पनपे वैमनष्यता समाप्त करने के बजाय मोटी रकम ले ले कर आर्यों को विभाजित करने में लगे हैं। मात्र स्वार्थ के आधार पर, जो थैली दे सकते हैं प्रान्तीय सभा उसी की है, की नीति का उजागर हो रहा है।

हम जैसे वैदिक सिद्धान्त से प्रभावित होकर परिवार को दांव पर लगाते हुए। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में परिवार सहित जुटने वालों के लिए तो मात्र यही है। न खुदा ही मिला, न विसाले सनम, न इधर के रहे हैं और न उधर के।

नोट - पाठकगण इलाहाबाद के उपाध्याय स्व. गंगाप्रसाद जी व सुल्तानपुरी उपाध्याय वाचस्पति जी के विचारों में क्या अन्तर है। अवश्य देख लिया होगा। क्योंकि यह महोदय महेश योगी संस्था के साथ भी जुड़े हैं।

आखिर आर्य समाज ही क्यों बनाया ऋषि ने ?

*****

परमपिता परमात्मा आदि सृष्टि में ही मानव मात्र को अपना ज्ञान दिया। जो वेद के नाम से प्रसिद्ध है और वेद का अर्थ ही ज्ञान है। परमात्मा अपना ज्ञान देने में मानवों के साथ भेद भाव भी नहीं किया। यथे माम् वाचम् कल्याणी आवदानी। अगर परमात्मा अपना ज्ञान देने में भेद-भाव रखते तो परमात्मा पर पक्षपात का आरोप लगता। यही कारण है कि मानव जब कभी गलती करता है। और इस कार्य में परमात्मा आर्य-अनार्य, हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख-ईसाई, जैन-बौद्ध तथा बहाई के साथ समान रूप से भय, लज्जा, शंका देकर हर बुराई से मानव मात्र को बचाना चाहता है। यही गुण होने हेतु ही वह परमपिता है।

क्योंकि लोकाचार में देखा जाता है, पिता अपने पुत्र को दु:खी देखना नहीं चाहता, तो वह संसार का पिता होने हेतु अपने संतानों को पाप कर्मों से बचाता है। किन्तु कालान्तर में मानव स्वार्थ के वशीभूत होकर अपनी प्रसिद्धि के लिए स्वयं सिद्ध परमात्मा कहलाया, किसी ने। या फिर परमात्मा का ऐजेन्ट बताकर किसी ने पैगम्बर कहा अपने को तो किसी ने अवतार बताया या तो धर्म चलाया।

धार्मिक सम्प्रदायों में इस समय हिन्दू, मुसलमान, पारसी, यहूदी, ईसाई, प्रधान है, शेष जितने मत-मतान्तर है सब इन्हीं का शाखा, प्रशाखा अथवा मिश्रण है। सही में मनुष्य जाति यदि धर्म, शासन और सामाजिक बन्धनों से सीधा सम्पर्क न रखें या न रख सके तो मानव पतित होकर अनाचार को प्राप्त होता है तथा अनाचारी ही कहलाता है।

जब मानव अपने धर्म और अनाचार को अपना कर्त्तव्य तथा मोक्ष मानने लग जाते हैं, तो ऐसी दशा में उत्तम मनुष्यों को बिगड़ने में देर नहीं लगती, उत्तम मनुष्यों को बिगाड़ने वाले दुष्ट मनुष्य पहले दिखाने को स्वयं उत्तम बनते

हैं। और फिर धीरे-धीरे अपना दुष्ट स्वभाव उत्तम मनुष्यों में दाखिल करा देते हैं, जैसा आज दुनिया में हो रहा है।

नवीन सिद्धान्त के प्रचार करने वालों ने हमेशा से इसी रीति को अपनाया है। उनका सिद्धान्त है कि जिस जाति को अपने सिद्धान्त सिखलाना हो उसकी भाषा में ऐसे-ऐसे ग्रन्थ लिखे जायें, जिनमें तीन बातों को सम्मिश्रण हो। पहली बात यह हो कि उस जाति के जो सिद्धान्त अपने प्रचार में बाधक न हों। वह सब मान लिये जायें। उनकी प्रशंसा की जाये। और विस्तार से उनका वर्णन किया जाये। दूसरी बात यह हो कि उस धर्म की सूक्ष्म बातें जो सर्व साधारण की समझ में न आती हों। उनका अभिप्राय बदलकर उसमें अपने मत की आवश्यक बातें मिश्रण करके गूढ़ भाषा में वर्णित की जाये। और तीसरी बात यह हो कि साधारण बातों का खण्डन करके उनके स्थान पर अपनी उन समस्त मनमानी या मन घड़न्त बातों को भर दिया जाये। इस प्रकार का बन्दोबस्त करने पर एक जाति दूसरी जाति में, अपने सिद्धान्तों का प्रचार कर सकती है। आर्यों के दार्शनिक विषयों को देखने तथा अवलोकन से भली-भांति पता चल जाता है। उन अनार्य विचारों में जो विचार दर्शन शास्त्र से सम्बन्ध रखती है वही आसुर उपनिषद् कहलाए। जैसा असुराणां ह्वेषा उपनिषद् अर्थात् यह असुरों का उपनिषद् है। इससे यह स्पष्ट है कि उपनिषदों में आसुर उपनिषद का समावेश है। और यह मात्र उपनिषदों में ही नहीं अपितु गीता, मनुस्मृति, ब्रह्मसूत्रों में भी उन चाटुकारों ने मिश्रित कर दिया है। या तो यूँ कहिये, उपनिषद्, वेदान्त दर्शन और गीता जिन्हें प्रस्थानत्रयी कहा जाता है, कुछ अंशों में आसुरी विचारों से भरे हुए हैं।

और यह प्रस्थानत्रयी नाम बौद्धों के त्रिपिटक नाम की नकल है। जैसा कि बौद्धों ने तीन प्रकार के साहित्यों को त्रिपिटक कहा है। उसी प्रकार वेदान्त से सम्बन्ध रखने वाले तीन प्रकार के साहित्य को प्रस्थानत्रयी कहते हैं, जिस प्रकार आसुर धर्म को हटाने के लिए त्रिपिटक की योजना हुई थी उसी प्रकार आसुर धर्म की पुनः प्रतिष्ठा के लिए प्रस्थानत्रयी की योजना हुई है। त्रिपिटक बौद्ध साहित्य है पर वह साहित्य जिस प्राचीन साहित्य के आधार पर तैयार हुआ है वह चारवाक का बार्हस्पत्य साहित्य है। आसुरी आचार का सबसे प्रथम खण्डन करने वाला चारवाक ही हैं।

पशुश्चेन्निहितः स्वर्ग ज्योतिष्टोमे गमिष्यति, स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते।। अर्थात् यदि यज्ञ में मारा हुआ पशु स्वर्ग को जाता है तो यजमान अपने पिता को मारकर स्वर्ग को क्यों नहीं भेज देता। (सत्यार्थप्रकाश) बृहस्पति का कहना है, मांसानां खादनं तद्वन्निशाचरसमीरितम्, अर्थात् वेदों में मांसाहार निशाचरों का मिलाया हुआ है। इसलिए वह कहते हैं, त्रयो वेदस्य कर्तारों भण्ड धूर्त निशाचराः, अर्थात् उपयुक्त प्रकार के मांसमद्य विधानयुक्त तीनों वेदों का नाम धूर्त और निशाचरों के बनाए हुए हैं। चारवाक ने मात्र कहा ही नहीं, अपितु वेदों के नाम से लीला बताने वालों का विरोध करते हुए उन लोगों से अलग होकर अपना अलग एक मत ही खड़ा कर दिया जिसके द्वारा आसुर धर्म का खण्डन होता रहा। इस सम्प्रदाय के उपदेशों ने बौद्ध तथा जैन मतों को आगे बढ़ने दिंया। इससे समस्त भारत में बौद्ध मत फैल गया। इस बीच जो कुछ साहित्य तैयार हुआ उसे तीन हिस्सों में बांटा गया और उसी का नाम त्रिपिटक रखा गया। एक गोष्ठी और भी है जो आसुर धर्म का फिर से प्रचार करना चाहती थी। इसी गोष्ठी का मूल प्रचारक का नाम बादरायण। उसी के वंश परम्परा में आदि शंकराचार्य का जन्म हुआ था। आगे चलकर इसी परम्परागत अवसरवादियों ने उपनिषद् आदि ग्रन्थों में मिलावट की।

अब शंकराचार्य को प्रचार हेतु यही मिश्रित् साहित्य मिला। उनके प्रचार से प्रभावित होकर कई राजाओं ने बौद्धों को नष्ट कर दिया। माधवाचार्य कृत शंकर दिग्विजय में लिखा है कि उस काल में राजाओं का हुक्म था कि हिमालय से लेकर समुद्र पर्यन्त बसे हुए आवाल वृद्ध बौद्धों को जो न मारे वह मृत्यु दण्ड के योग्य हैं। इस सख्ती का फल यह हुआ कि भारत वर्ष में बौद्धों की कमी हो गई । इस प्रचार में सुविधा उत्पन्न करने के लिए शंकराचार्य ने पूर्व रचित साहित्य के तीनों भागों का भाष्य कर दिया। अतः उक्त भाष्य-उपनिषद् ब्रह्म सूत्र व गीता ही प्रस्थानत्रयी के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

यदि वेदों का कोई विरोधी है और आर्य सभ्यता का कोई नाश करने वाला है तथा आसुरी भाव को फैला कर जाति का कोई पतन करने वाला है तो यही प्रस्थानत्रयी नामी मिश्रण भाष्य ही है। और इसी की आड़ में देशभर

अनेकों सम्प्रदाय अनेकों अनाचार तथा भ्रम फैला है। आज तक श्रुति, स्मृति और दर्शन आदि गम्भीर शब्दों से प्रभावित होकर असली वृतान्त को जानते हुए भी किसी ने इन ग्रन्थों के प्रति कलम नहीं उठाई। एक ऋषि दयानन्द को छोड़कर सबने अर्थ बदल-बदल कर अपनी बातों को सिद्ध करने का मिथ्या प्रयास किया है।

यही कारण बना मुगल काल में मुसलमानों ने हिन्दुओं को नोटों के बल से अल्लोपनिषद् आदि ग्रन्थों को लिखवाया।

ऋषि दयानन्द ने भली-भांति इन सबका अवलोकन किया तथा मानव मात्र को ईश्वर प्रदत्त वेदों की ओर तथा ऋषि-मुनि कृत ग्रन्थों की ओर ले जाना चाहा। जिन्हें लोग अब तक छोड़ चुके थे। या फिर वह चाटूकार जो मानव समाज को सत्य से असत्य की ओर व प्रकाश से अन्धकार की ओर ले चले थे। सही पूछिये तो आर्य समाज नामी संस्था बनाने का उद्देश्य ऋषि दयानन्द का यही था जो कि भारत भ्रमण कर दयानन्द ने भली प्रकार से देखा और विशेषकर कर 1872 में जब दयानन्द बंगाल पहुँचे, तो राजा महाराजाओं से मिले तथा लोगों को असलियत बताने का प्रयास किया। परन्तु स्वार्थ में डूबे लोगों ने दयानन्द के विरोध में जुलूस भी निकाले। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ही स्वामी जी के पक्षधर रहे और कहा स्वामी जी अलग संगठन बनाकर ही हमें काम करना चाहिए। ऋषि दयानन्द ने आर्ष ग्रन्थों में या वैदिक ग्रन्थों में जिस प्रकार स्वार्थी लोगों द्वारा मिलावट की बात कही। ठीक उसी प्रकार धरती पर चल रहे सभी मत-मतान्तरों को गुरुडमवाद तथा पाखण्डियों की जालसाजी को दर्शाया। यहाँ तक कि कुरान, पुराण, बाईबिल, दादुपंथ और नानक पंथों के बारे में भी प्रकाश डाला और मानव समाज को वेद रूपी धागे में पिरोकर संसार का उपकार चाहते हुए 1875 में आर्य समाज नामी संस्था को कायम किया। ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज बनाकर आर्यजनों को कर्त्तव्य दर्शाया और वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहकर पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना परमधर्म लिखा। यहाँ तक कि अपनी उन्नति से सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति को अपनी उन्नति लिखा। साथ ही आर्य जनों को उपदेश दिया। सामाजिक सर्वहितकारी नियम में सब परतन्त्र रहे और हितकारी नियम में स्वतन्त्र रहने को

लिखा। इधर आर्य समाज में इसका सारा उल्टा ही आचरण हो रहा है। यह मानें कि दयानन्द का गला घोंटा जा रहा हो।

आज आर्य समाज के मंच से मत-मतान्तरों पर प्रकाश डालने हेतु विद्वानों को मना कर दिया जाता है। कहीं आर्य जनों के गुरुकुलों में अल्लाहु अकबर के नारे को गुंजायमान किया जा रहा है और कहीं आर्ष ग्रन्थों को पढ़ने का विरोध किया जा रहा है। स्वामी चेतना नन्द द्वारा वेदा लोक संस्कार दर्पण में आर्ष ग्रन्थों का विरोध लिखा। दयानन्द जिस आर्ष ग्रन्थ का प्रतिपादन किया और यही स्वामी चेतना नन्द को आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का अधिकारी बना रखा। आनन्द कुमार ने। जो संन्यासी अग्निवेश से भी खतरनाक है और ऋषि दयानन्द के विरोधी हैं।

दयानन्द को एक राजा ने कहा, महाराज आप अगर देवी पूजा का विरोध न करें तो मैं अपने राज पाठ का आधा हिस्सा आपके नाम कर दूंगा। जवाब में स्वामी जी ने कहा इसे तो मैं सांस रोक कर पार कर जाऊंगा, राजा ने कहा देखना इतना बड़ा दानी आपको नहीं मिलेगा। जवाब मिला इतना बड़ा त्यागी भी आपको नहीं मिलेगा। आज उसी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज में आर्य समाजी का मुखौटा लगाकर कोई संस्था की जमीन बेच रहे हैं, तो कोई समाज तथा सभा में कब्जा जमाये बैठे हैं। कहीं महिलाओं के सिर पर कलश रखकर जुलूस निकाल रहे हैं। कोई ईसाई व मुसलमानों के वकील बनकर आर्यो को वरगला रहे हैं। और कहीं शव पर माला चढ़ा रहे हैं तो कही दाह संस्कार के बाद गंगा में फूल बहा रहे हैं। तथा कोई मर जाने पर तेरहवीं मना रहे हैं, या अपना सर छिलवा कर घूंम रहे हैं। और अपने को आर्य समाजी तथा आर्य नेता कहलवाने में आतुर है। इन्हीं पाखण्डों से बचाने हेतु ऋषि ने आर्य समाज बनाया था।

नोट :- उड़ीसा में स्वामी धर्मानन्द जी ने महिलाओं के सिर पर कलश रखवाकर जुलुस निकाले थे। बाकि प्रमाण सुरक्षित है।

आर्य समाज ही क्यों ?

*****

प्राय: लोगों को पता है 1875 में महाराष्ट्र प्रान्त, मुम्बई गिरगाँव मुहल्ला, डॉ. माणिक राव के घर ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। आखिर आर्य समाज नाम दयानन्द ने क्यों रखा? जवाब बड़ा सीधा है, ऋषि ने अपने गुरु विरजानन्द के शरण में रहकर जाना। वेद, वैदिक धर्म तथा परमात्मा को अब तक लोग भूल चुके थे। वैदिक धर्म व परमात्मा को जानने की बात कहाँथी।

ऋषि दयानन्द का मात्र उद्देश्य था आर्य समाज नामी संस्था के माध्यम से धरती पर मानव मात्र को वेद की सच्चाई को बताना। विशेषकर भारत के लोग जिस सत्य से विमुख हो चुके थे। मिट्टी के खिलौनों को ईश्वर मान रहे थे। रामायण, महाभारत, गीता, पुराणों को तथा कुरान, बाईबिल आदि ग्रन्थों को धर्म ग्रन्थ और उस पर अमल करने वालों को धार्मिक या धर्म मानने लगे थे। ऋषि दयानन्द ने अपने काल में डंके की चोट से कहा कि इन ग्रन्थों को जाली ग्रन्थ कहना चाहिए। इस पर चलने वाले कभी धार्मिक नहीं बन सकते। और न ही यह अपने आप में कोई धर्म है। धर्म अगर है तो सत्यसनातन वैदिक धर्म है। धर्म ग्रन्थ अगर है तो मात्र वेद ही हैं, इसी के ही प्रचार-प्रसार के लिए आर्य समाजियों को जिम्मेदारी ऋषि दयानन्द ने सौंपी। अब समाजी अपनी जिम्मेदारी को कौन कितना निभा रहे हें वह तो दुनिया देख रही हैं आर्य समाज ऋषि दयानन्द का सच्चा स्मारक है क्योंकि इसकी रीति-नीति, पूजा पद्धति, सिद्धान्त, दार्शनिक मान्यतायें आदि सभी मत्-मतान्तरों के विचारधाराओं से बिल्कुल अलग है।

क्योंकि इसका मूल आधार ही सत्य है, यथार्थ है, तर्क पूर्ण है, अन्धविश्वास, ढोंग पाखण्ड आदि के लिए आर्य समाज में कोई भी जगह नहीं। सही पूछिये तो आर्य समाज सत्य सनातन वैदिक धर्म का उद्धारक व प्रचारक है। इसी कारण यह संगठन, मत, पंथ मजहब या कोई सम्प्रदाय नहीं है। यह समाज वैचारिक चिन्तन और वैचारिक क्रान्ति का अग्रदूत है। इसमें पीर पैगम्बर, देवदूत, अवतारवाद तथा मूर्तिपूजा के लिए कोई स्थान नहीं है। किन्तु

परमात्मा की बनाई मूर्ति तथा चेतन की पूजा करने की अनुमति है। साथ ही वैदिक विचार, चिन्तन, धर्म, भक्ति और परमात्मा का सीधा और सच्चा मार्ग मात्र आर्य समाज के माध्यम से धरती पर रहने वाले मानव मात्र को बताया जाता है। संसार की सर्वोत्तम विचारधारा केवल आर्य समाज के पास है। इसके सिद्धान्त, आदर्श एवं मन्तव्य सदैव प्रासंगिक रहे हैं और रहेंगे।

आर्य समाज की स्थापना दिवस के पावन पर्व पर आर्य लोगों को ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए ऋषि दयानन्द का अनुगामी बनने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये। पहले अपने को बनाए फिर कृण्वन्तों विश्वमार्यम् वेद के अनुसार अपने को आर्य एवं अपने परिवार को आर्य बनाना पड़ेगा। फिर कहीं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाना सफल हो सकता है क्योंकि स्वयं अपने परिवार को आर्य बनाये बिना ओरों को बनाना या कहना अपने आप में धोखा है। परिवार को आर्य बनने को कहना या आर्य समाज स्थापना दिवस मनाना अपने आप में धोखा है।

आर्य समाज स्थापना दिवस हम लोगों के लिए जागृति का हेतु बने। सब आर्यजनों को आत्मचिन्तन कर परस्पर, मतभेदों को; विवादों को, स्वार्थ परता और अधिकारों की दौड़ को तिलांजलि देकर ऋषि मिशन के लिए सेवक बन उठ खड़ा होना चाहिए। जिस उद्देश्य के लिए ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थीं

वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा करना, उन्हें प्रचारित व प्रसारित करना हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है। क्योंकि आज संसार को इस विचारधारा की बड़ी जरूरत है। आज प्रगति के नाम से ढोंग, पाखण्ड, अंधविश्वास, अश्लीलता, अनैतिकता और धर्म के नाम से हिंसा आदि कुकृत्य निरन्तर बढ़ते ही जा रहे हैं। अगर इसे रोकने की क्षमता है तो मात्र ऋषि दयानन्द की ही विचारधारा के प्रचार-प्रसार के माध्यम से ही रोकना सम्भव है। आज नाना पन्थ, सम्प्रदाय व मजहब बढ़ते जा रहे हैं। सन्त, महन्त, महाराज, ज्ञानी और गुरुओं की भीड़ फैल रही है। धर्म, भक्ति और परमात्मा के नाम पर व्यापार हो रहा है। भक्ति के नाम तथा योग के नाम पर ढोंग व प्रदर्शन बढ़ रहा है और सच्ची भक्ति घट रही है। धर्म के नाम पर सम्प्रदाय हावी हो रहे हैं। शब्दों से तो धर्म का

प्रचार खूब हो रहा है। परन्तु आचरण, व्यवहारिक जीवन से धर्म घट रहा है। और देश की जो अपनी विशिष्ट पहचान थी उसे तोड़ा-मरोड़ा और विकृत किया जा रहा है। वैचारिक प्रदूषण का जहर समूची भारतीय जीवन पद्धति को विषाक्त व विकृत करता जा रहा है। शायद दयानन्द के कार्यकाल में इतना भयावह स्थिति न रही हो जितनी कि आज है।

ऐसी दशा में अगर समाधान है तो केवल आर्य समाज के पास ही हैं। क्योंकि आर्य समाज मानवता वादी, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का प्रचार आर्य समाज के जन्मकाल से ऋषि दयानन्द ने किया है। और यही जिम्मेदारी आर्य समाजियों पर देव दयानन्द ने दी है। क्योंकि इसके जो सिद्धान्त हैं और आदर्श हैं इनमें तर्क है, प्रमाण है, युक्ति है, व्यवहार है, यथार्थता है क्योंकि यह विज्ञान सम्मत है, सृष्टि क्रम के अनुकूल है। आज विश्व में देश, धर्म, संस्कृति, परम्पराओं का सही स्वरूप कोई दे सकता है, तो मात्र आर्य समाज ही है। किन्तु दु:ख के साथ हमें लिखना पड़ रहा है कि दयानन्द के अनुयायी ही वैदिक सिद्धान्तों को अपने अमल में नहीं लाते। आज यत्र-तत्र दल गत राजनीति आर्य समाज में भी होने लगी है। आर्य समाज में अब योग्यता के बल पर नहीं किन्तु रूपयों के बल पर अधिकारी बनाए जा रहे हैं। भले ही उन्हें वैदिक सिद्धान्तों का एक अक्षर भी न आता हो, मात्र वोट की राजनीति है। किसी ने खूब कहा है :-

'बड़े शौक से सुन रहा था जमाना । हम ही सो गये दासताँ कहते-कहते।'

आज आर्य कहलाने वाले अपने उद्देश्य तथा कर्त्तव्य से भटक रहे हैं। मात्र विवाद व स्वार्थ में आर्य समाज की शाख को मिट्टी में मिलाया जा रहा है।

आर्य समाज का जो मुख्य कार्य वेद प्रचार तथा पाखण्ड के खिलाफ आवाज उठाना था। अज्ञान अंधकार को लोगों से दूर करने के लिए शास्त्रार्थ के माध्यम से सत्यासत्य का निर्णय करना था। राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार करना था। इस्लाम मत्-ईसाई मतों से लोहा लेने का था। वे सब गौण हो गये। और जो गौण कार्य था उसे ही अपनाया गया है जैसे दवाखाना चलाना, स्कूल

खोलना, शादी विवाह में बारात टिकाना, अनैतिक तरीके से आर्य समाज भवन को किराया पर चलाना आदि ही मुख्य कार्य हो गया है। शायद ही कोई समाज हो जहाँ विवाह के बाराती शराब न पीते हों। आर्य समाज में अगर यह काम बन्द होता, तो मेरे विचार से शराब बन्दी कार्य को बल मिलता।

पद लोलुपता एवं परिवार वाद के कारण प्रायः आर्य समाजों में झगड़ा और विवाद बना रहता है। शायद ही कोई आर्य समाज ऐसा हो जहाँ विवाद न हो। कुछ प्रान्तीय सभाओं की ओर दृष्टिपात करने से पता चल सकता है। कुछ प्रान्तों में सभा की सम्पत्ति का ही विवाद चल रहा है। कहीं-कहीं नोटों के बल पर प्रान्तीय सभाओं पर लोग काबिज हैं।

बड़े अधिकारियों को प्रचार-प्रसार की कोई चिन्ता ही नहीं। वे तो मात्र बनी बनाई मंच पर फूलमाला पहनने के लिए पहुंचना ही अपना कर्त्तव्य मानते हैं। कुछ ही लोग हैं जो वैदिक धर्म प्रचार को या आर्य समाज के उद्देश्य पूरा करने के लिए आर्य समाज के प्रचारकों, उपदेशकों को पाल रहे हैं। जो आर्य समाज के छोटे-छोटे कार्यकर्ता हैं लोगों से सम्पर्क बनाकर कुछ संग्रह करते हैं, और आर्य समाज के उपदेशकों व प्रचारकों को बुलाते हैं सिर पर कफन बाँधकर प्रचारक-उपदेशक होली दीवाली का भी ख्याल न रखकर कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु चल पड़ते हैं।

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में वृद्धि हो तभी लोग आर्य समाज को जान पायेंगे। भारत में अभी ऐसे भी प्रान्त हैं जहाँ के लोग आर्य समाज को जानते तक नहीं। जहाँ आर्य समाज को लोग नहीं जानते वहाँ जाकर आर्य समाज का प्रचार करने से ही देव दयानन्द का संपना साकार हो सकता है एवं कृण्वन्तों विश्वमार्यम् उदघोष साकार हो सकता है। इसी उद्देश्य से ऋषि ने आर्य समाज की स्थापना की थी। इन उद्देश्यों की पूर्ति हम लोग उस समय कर सकेंगे जब मिल बैठकर ऋषि की भावना को हृदय में रखकर अपने स्वार्थ, अहंकार एवं पद लोलुपता को छोड़ निष्काम भाव से प्रचार-प्रसार में संलग्न हो जायेंगे।

हम सबके सामने इस समय बड़ी चुनौती हैं। आर्य समाज की विचारधारा, आदर्श, सिद्धान्त तथा अस्तित्व की रक्षा करना। ❁❁❁

आर्य समाज में आज हावी कौन ?

संन्यास आश्रम को कलंकित कर रहे हैं अग्निवेश

*****

मैं आर्य समाज में आया स्वामी शक्तिवेश जी के प्रयास से। उन दिनों में स्वामी शक्तिवेश जी गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ के संचालक थे। उनके सानिध्य में रहकर आर्य समाज के बारे में मुझे बहुत कुछ जानकारी मिली, विशेषकर स्वामी जी अपने साथी संगियों के बारे में जो बताते थे वह अक्षरस: सही निकला।

स्वामी शक्तिवेश जी ने कहा पहले तो सन्यास लिया स्वामी इन्द्रवेश जी ने, और फिर हम तीन जुड़े उनके साथ। स्वामी अग्निवेश जी, मेरा नाम शक्तिवेश पड़ा हमारे एक साथी आदित्यवेश हैं। हम चारों ने मिलकर समूचे हरियाणा में विशेषकर आर्यसमाज में गति लाने में परिश्रम किया। बड़ी अच्छी सफलता मिली हमें। और हम लोगों के कार्य से लोग बड़े प्रभावित थे। और समग्र हरियाणा के नर-नारियों ने हमें भरपूर सहयोग दिया। पण्डित जी शायद आप विश्वास भी नहीं करेंगे, माताओं का तो इतना सहायोग था कि मात्र हमें दान के लिए कहने की देर थी। माताओं ने अपने हाथ, कान, पांव गले से भी जेवर (गहने) उतारकर देती थी। और हम चारों सन्यासी तो थे ही अब तक हम अनेक शिष्य मण्डलियाँ बना चुके थे। नैष्टिक ब्रह्मचारी की दीक्षा अनेकों को दी थी, सब मिलकर धन बटोरने में लगे थे।

आप देख रहे हैं हमारा कुर्त्ता कितना लम्बा है, सारा जेवर कुर्तों में ही बटोरते रहे। हम लोगों ने अपनी प्रिन्टिग प्रेस भी लगा ली, जिससे कि आसानी से अपनी बातों को अन्यों तक पहुंचा सकें आदि।

किन्तु स्वामी अग्निवेश जी से मैं सहमत नहीं हो पाया, उसका मुख्य कारण अग्निवेश जी स्वार्थी हैं, ईर्ष्यालु हैं और लोभी भी हैं। पहली बात तो, उन्होंने कभी हम लोगों के साथ बैठकर भोजन नहीं किया तथा हम जैसों का भोजन भी उनको पसन्द नहीं, हमेशा स्पेशल खाना उनको चाहिए। सहनशीलता

उनमें नाममात्र भी नहीं है और जल्दी गुस्सा करने लगते हैं, जो कि खासकर हम सन्यास धर्मवालों के लिये बाधक है।

स्वामी इन्द्रवेश जी साधु हैं, संस्कृतज्ञ विद्वान हैं, गुरुकुलीय जीवन रहा और साधक भी हैं। परन्तु सत्य के बजाय असत्य के पक्षधर हैं। मैं तो कॉलेज का विद्यार्थी रहा। सरकारी विद्यालय में अध्यापक था सभी बातों को जानकर सन्यास लिया मुझे असत्य पसन्द नहीं । इमरजैन्सी के समय हमें बहुत तकलीफ उठानी पड़ी। जयपुर से छदमवेश अपने को पुलिस की पकड़ से बचाया आदि।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ उस समय वीरान पड़ा था। स्वार्थी लोग यहाँ के कीमती सामानों से अपना घर भरने में लगे थे, प्रो. शेर सिंह आदि। उसमें हमने सक्रियता दिखाई और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को ढंग से चलाने का निर्णय लिया जो आप देख रहे हैं।

स्वामी अग्निवेश जी व इन्द्रवेश जी प्रतिज्ञा लेकर भी उसे अंजाम नहीं दे पाये, और राजनीति में घुस गये। इसी गुरुकुल को भी दखल करने का प्रयास इन दोनों सन्यासियों ने किया। पर मेरा साथ देने वाले धर्मवीर जी, दयावीर जी, विरजानन्द जी, हरीशचन्द्र जी, राजपाल आदि उन पर भारी पड़े। वरना निशाना तो अग्विेश जी का था। इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल को कब्जाने का।

अभी आपने भी देखा इन्द्र उद्यान में ही अग्निवेश जी बंधुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा का बोर्ड लगाकर उस पाठक को बिठा दिया। अगर मैं उखाड़ कर नहीं फेंकता और पाठक की धुनाई नहीं करता, तो एक दिन अग्निवेश गुरुकुल को कब्जा कर लेते। क्योंकि मैंने उनके साथ रहकर उनको बड़े नजदीक से देखा। मुझे तो लग रहा है कि यह व्यक्ति कभी आर्य समाज के लिए घातक सिद्ध होने न लगे । मैंने उस समय से जहाँ-जहाँ स्वामी अग्निवेश जी को देखा तो स्वयं स्वामी शक्तिवेश जी के सुनाये गए बातों को अक्षरसः सही पाया।

स्वामी अग्निवेश जी कम्युनिष्ट विचारों से ग्रसित हैं। यही कारण है कि वैदिक सिद्धन्त को न जानते हैं, और न मानते हैं। वैदिक मान्यतानुसार जन्मान्तरवाद कर्मफल को दर्शाता है, विशेष कर आर्य समाज, ऋषिदयानन्द इसके प्रचारक हैं। इस्लाम, ईसाईयत और कम्युनिष्ट, इसे नहीं मानता। स्वामी अग्निवेश भी नहीं मानते। जो कर्मफल को नहीं मानते तो वैदिक धर्मी होने का प्रश्न हीं नहीं है।

अब प्रश्न आयेगा फिर अग्निवेश क्या हैं? ईसाई, मुसलमान या कम्युनिष्ट। मैं जवाब में कहूँगा कि ईसाई, मुसलमान और कम्युनिष्ट अपने सिद्धान्त पर तथा अपने-अपने मान्यतानुसार अडिग हैं, अपनों में । पर स्वामी अग्निवेश जी का न कोई सिद्धान्त है और न ही कोई मान्यता न इनका कोई धर्म है और न है कोई ईमान। यह व्यक्ति सुविधावादी है, मतलब परस्त है, लौकेषणा ही महाशय जी का धर्म है।

अग्निवेश सदा मीडिया में छाये रहने वाला काम करते हैं। मात्र लक्ष्य है किसी प्रकार अखबार के सुर्खी में रहा जाये। जैसा, नाथ द्वारा मन्दिर में हरिजनों को लेकर जाना, अगर यह आर्य समाजी होते तो उनको मन्दिर ले जाने की बजाय आर्य समाज में लेकर आते। उन्हें सच्चाई बताते। सच्चाई बताने पर मीडिया तन्त्र उनको नहीं जानता। शबाना आजमी को साथ लेकर घूमने का कारण भी यही है-मीडिया में छाये रहना। अब लोग शबाना आजमी को देखने आ रहे थे या सन्यासी को? यह बखूबी सब को पता है।

जो शहाबुद्दिन बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के अध्यक्ष थे उनके दल भुक्त जनता दल कार्यकर्ता रहते हुये भारत भर घूम-घूमकर बाबरी मस्जिद के पक्ष में प्रचार कर रहे थे। उन दिनों में भारत जोड़ों आन्दोलन बाबा आम्टे को लेकर चला रहे थे, नाम तो रखा था भारत जोड़ो पर प्रचार कर रहे थे बाबरी मस्जिद का । कलकत्ता में मुहम्मद अली पार्क में कार्यक्रम था। वहां वक्ताओं में शहबुद्दिन बाबा आम्टे, डॉ. प्रताप चन्द्र, चन्द्र, जो कलकत्ता विश्वविद्यालय में थे। और अग्निवेश के गुरु थे या प्रो. शामराव के गुरु कहें? सूर्यदेव ने जिनसे थैली लेकर बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा को सौंप दी, आनन्द कुमार आर्य के नाम से लोग उन्हें पुकारते हैं, अग्निवेश उसी आनन्द कुमार के घर पार्क स्ट्रीट में ठहरे थे, यह सब मैंने देखा?

सलमान रशदी ने द सेटनिक वर्सेस लिखा। मुसलमानों ने उस पर आपत्ति की और इरान के धर्मगुरु आयातुल्ला खुमैनी, कट्टर मुस्लिम पंथी ने तो उन्हें सजाये मौत ही सुना दी । निवर्त्तमान प्रधान मंन्त्री राजीव गांधी ने भारत में उस ग्रन्थ पर प्रतिबन्ध लगा दिया ।

इधर ऐषाणाओं के लोभी स्वामी अग्निवेश जी ने पत्रकार सम्मेलन में वक्तव्य दिया मैं इस ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तर कर रहा हूँ। इसका प्रचार कई अंग्रेजी डेली व साप्ताहिकों ने अग्निनेश जी के चित्र सहित प्रचार करते रहे। उन दिनों में मैंने एक लेख के माध्यम से देश का घातक शीर्षक? पर अग्निवेश जी को चिन्हित किया था। और कहा भी था कि यह धोखा हिन्दुओं के साथ क्यों? क्योंकि उसी किताब को एक ने तुर्की भाषा में रूपान्तर किया था उसे मार दिया गया। ईरान में दस मंजिल का एक होटल में आग लगा दी गई थी। रुपान्तर करने वाले का नाम उईलियम निगार था।

इस घटना से डरकर अग्निवेश जी ने उस किताब का नाम लेना ही बन्द कर दिया, यह इतने बड़े बहादुर हैं।

आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने ईश्वरीय ग्रन्थ वेद, आचार संहिता, मनु स्मृति को माना है। किन्तु जिस अग्निवेश जी को अनिल आर्य; शिव कुमार शास्त्री व प्रेम पाल शास्त्री जैसे शिखण्डी लोग आर्य नेता कह रहे हैं। वही स्वामी अग्निवेश मुन महाराज को गाली निकालने में संकोच नहीं करते। अग्निवेश जी ने मुसलमानों व ईसाईयों के पक्ष में बहुत कुछ लिखा और कहा भी। मैं अगर सारा लिखूं तो एक मोटी पुस्तक बन जायेगी, मैं तो संकेत मात्र कर रहा हूँ।

लाल किले के सामने 25 दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर शिव कुमार शास्त्री केन्द्रीय सभा प्रधान, मंत्री अनिल ने उनको प्रस्तुत किया। अग्निवेश जी ने पाखण्ड मचाया। एक जैन मुनि बुलाया, एक पादरी को बुलाया एक मौलाना का नाम लिया, परन्तु कोई सामने नहीं आया। कारण मौलाना को पता था यह कुफ्र है, जिसकी इस्लाम में कोई गुंजाईश नहीं। उस मौलाना ने अपने दींन को कायम रखा, पर अग्निेशवेश जी आर्यों को धोखा देते रहे।

मैंने देर न लगाते हुये डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी जी से कहा, कवि जी अभी तो भारत का प्लेन हाईजेक हुआ। आर्य समाज के मंच को अग्निवेश जी ने हाईजेक किया आज।

अगले दिल 26 दिसम्बर को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में अपना वक्तव्य देते हुये मैंने स्पष्टीकरण दिया। स्वामी इन्द्रवेश जी को पसन्द नहीं आया, स्वामी शिवानन्द जी से शिकायत की उन्होंने।

उड़ीसा के पादरी के मरने के बाद उसके पक्ष में अग्निवेश जी ने खुलकर काम किया। सोनिया को सन्तुष्ट करने के लिए। इज्राईली राष्ट्राध्यक्ष भारत आते ही अग्निवेश जी मीडिया में उंसका विरोध करने आये। कम्युनिष्टों को सन्तुष्ट करने के लिए। जो इज्राईल इस्लामी आतंकवादियों से लोहा ले रहा है। मुख्य रूप में अग्निवेश जी ईसाई व मुसलमानों के एजेन्ट है। यही कारण है राजीव गांधी पुरस्कार सोनिया ने उनको दिया। और सोनिया व सीताराम यचुरी, हरकिशन सिंह सुरजीत की राय पर दिल्ली पुलिस के बल पर सार्वदेशिक सभा को कब्जा किया। आर्यजनों को संगबद्ध तरीके से इसका विरोध करना चाहिये।

घर को आग लगी घर के चिराग से

*****

यह प्रवाद बड़ी पुरानी है न मालूम यह कभी घटी भी हो। पहले अगर न भी घटी हो, किन्तु आज ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज का हाल ठीक यही है। ऋषि दयानन्द ने सच्चा शिव का जिज्ञासु बनकर माता-पिता के लाड व प्यार को त्यागा तथा सच्चे शिव की जानकारी पाने हेतु कठोर परिश्रम व अनेक यातनाऐं सहकर अपने गुरु विरजानन्द तक पहुँच पाए थे।

गुरु ने अपने शिष्य की कुशाग्र बुद्धि, ईश्वर आस्था, तप व त्याग तथा कुछ कर गुजरने की सोच को देखकर, मानव समाज के उत्थान के लिये गुरु दक्षिणा में कुछ जिम्मेदारी सौंपी। दयानन्द ने जिम्मेदारी को निष्ठा व लगन के साथ निभाते हुए विश्व का कल्याण, संसार का उपकार, अपनी उन्नति को किनारे रखकर सबकी उन्नति को अपनी उन्नति माना। सच्चाई पर बल देते हुए कहा, सत्यं वदिष्यामि - जो कुछ कहूँगा सत्य कहूँगा। यहाँ तक अपने ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश रखा। दयानन्द अपनी आर्य समाज के दस नियमों में भी पांच बार सत्य का ही उल्लेख किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ऋषि देव दयानन्द कितने सत्यप्रिय थे।

ऋषि दयानन्द अपने जीवन काल में महज सत्य वादिता के कारण किसी से समझौता नहीं किया। और सत्य पर अड़े रहे, तथा विजय हासिल की। दयानन्द के ज़ीवनी को पढ़ने पर साफ जाहिर होता है। वह सच्चाई मुम्बई के शास्त्रार्थ में हो, काशी के शास्त्रार्थ में हो, या हरिद्वार में पाखण्ड खण्डनी पताका लहराकर पाखण्ड का भण्डा फोड़ सत्य के आधार पर किया हो। यही सत्यता के प्रचार-प्रसार के लिये देव दयानन्द ने अठारह घन्टे की समाधि को त्यागा था। मात्र इतना ही नहीं, अपितु दयानन्द की जीवनी से पता लगता है, कई लोगों ने धन का लोभ देकर दयानन्द को सत्य से हटाना चाहा। यहाँ तक कि राजपाठ का भी लोभ दिया, जवाब में ऋषि ने कहा इसे तो मैं सांस रोककर पार कर सकता हूँ। परन्तु परमात्मा के राज्य को मैं कैसे पार कर सकूँगा? नरेश ने कहा महाराज इतना बड़ा दानी आपको नहीं मिलेगा, जवाब

में ऋषि ने कहा राजन इतना बड़ा त्यागी भी आपको नहीं मिलेगा।

ऋषि दयानन्द इससे अलग सत्यता का प्रमाण और क्या देते? कुछ लोगों ने तो उनके जीवन से हाथ धोने की धमकी दी किन्तु आर्य समाज के प्रवर्तक देव दयानन्द सत्य से कभी अलग नहीं हटे और पहाड़ों की चट्टान बनकर असत्य का विरोध करते रहे और कहा -

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीस्समाविशतु गच्छतु व यथेष्टम्
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीरा।। (भर्तहरि)

सब मनुष्यों को यह निश्चय जानना चाहिये कि, चाहे सांसारिक अपने प्रयोजन की नीति में वर्तने हारे चतुर पुरुष निन्दा करे वा स्तुति करें, लक्ष्मी प्राप्त होवें अथवा नष्ट हो जावे, आज ही मरण होवें अथवा वर्षान्तर में मृत्यु प्राप्त होवे। तथापि जो मनुष्य धर्म युक्त मार्ग से एक पग भी विरुद्ध नहीं चलते वे ही धीर पुरुष धन्य है।

अब स्वामी जी के इस सत्य के प्रतिपादन हेतु मृत्यु को भी वरण करने को कहा पर असत्य के पक्षधर होने हेतु मना किया। तथा जीवन भर इस सत्य के खातिर लड़ते रहे। हर कोई आर्य तथा आर्य समाजी अपने को कहने वाले अगर अपने को इस सत्य के तराजू पर तौल कर देखें, तो कौन कितना खरा उतरेगा यह तो ईश्वर ही जाने। दयानन्द ने जिस जड़ पूजा से दुनिया वालों को मुक्ति दिलाना चाहा आज वही जड़ पूजा आर्य समाज में कहीं विद्वानों के द्वारा कहीं आर्य समाज के अधिकारी द्वारा तो कहीं पुरोहितों द्वारा की जा रही है।

मैंने सन् 1994 में देखा स्व. डॉ. प्रज्ञादेवी जी की माता जी का निधन हुआ और काफी संख्या में लोग वहाँ पहुँचे। डॉ. प्रज्ञाजी ने अपनी माता जी के शव पर उपस्थित जनों से फूलमाला डलवाने लगी। किसी आर्य समाजी ने विरोध किया। प्रज्ञादेवी नाराज हो गई और जहाँ तक मैं जानता हूँ कि शायद डॉ. प्रज्ञादेवी मृत्यु पर्यन्त उन आर्य समाजी से बात नहीं की। अभी पिछले दिन सार्वदेशिक सभा के मन्त्री सूर्यदेव जी के निधन पर दिल्ली के न मालूम कितने धुरन्धर विद्वानों से लेकर कार्यकर्ता अधिकारी व पुराहितों ने शव पर फूल

चढ़ाये, चादर भी। फिर मैंने देखा बिडला लाईन आर्य समाज के प्रधान श्री जयप्रकाश जी के निधन पर जो अपने को पुरोहित सभा का प्रधान कहते हैं। प्रेमपाल जी शास्त्री ने शव पर अपने आप तो माला डाली ही उपस्थित जनता से भी डलवाई, मुझे कहा आप भी डालो - मैंने मना किया, तो मेरे पास खड़े थे आर्य समाज, दीवान हाल के उप प्रधान बाबू राज सिंह जी भल्ला ने मेरी पीठ ठोकी। तो यह सभी जड़ पूजा आर्य समाज में होने लगी।

दिल्ली के ही यमुना विहार आर्य समाज के हाल में आशाराम बापू का चित्र रखकर कीर्तन किया गया। जगराता वालों को बुलाकर रविवारीय सत्संग में आज भी कीर्तन हो रहा है। पौराणिक गीत ही अवैदिक महिला सत्संग में गाती रहती हैं, समाज की दीवार पर प्रत्येक आत्मा अव्यकत ब्रह्म है लिखा गया है। मेरे द्वारा विरोध हुआ प्रतिनिधि सभा, दिल्ली; प्रादेशिक सभा, दिल्ली, ऋषि सिद्धान्त रक्षिणी सभा सार्वदेशिक सभा में चार बार स्व प्रमाण सभी कागज रजिस्ट्री भेजी गई आदि।

किन्तु सार्वदेशिक सभा तथा दिल्ली सभा के अधिकारी का वर्दहस्त यमुना विहार आर्य समाज वालों पर है। आर्य समाज प्रशान्त विहार में सेवक की पत्नी समाज के अन्दर कमरे में मूर्तियाँ रखकर आरती उतारती है। रविवारीय सत्संग में सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास के पाठ पर प्रतिबन्ध। समाज के अधिकारी नमस्ते का जवाब जय श्री राम से देते हैं। इन सबका प्रमाण सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, प्रादेशिक सभा को मैं दे चुका हूँ। प्रादेशिक सभा से बाबू श्री हरवंश लाल जी कपूर साहब का प्रोत्साहन पत्र मुझे मिला।

इसी प्रकार न मालूम कितने ही आर्य समाज में वैदिक सिद्धान्तों के विपरीत कार्य, आर्य समाजी द्वारा हो रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की मुख्य पत्रिका आर्य सन्देश के अंक 20 मई 2001 में समाजों का चुनाव समाचार निकला। आर्य समाज वोट क्लब, नई दिल्ली के प्रधान श्री बलेश कुमार आर्य लिखा। पुनः 10 जून 2001 के आर्य सन्देश में आर्य समाज यमुना विहार के चुनाव में मन्त्री बलेश कुमार आर्य लिखा। जबकि यही सभा कहती है एक आदमी एक समय में एक समाज का सदस्य रह सकता है। अब सभा

की मानी जाये, या सभा द्वारा प्रकाशित पत्रिका की? यानी कानून बनाने वाले ही कानून तोड़ रहे है।।

इसी प्रकार ऊपर से नीचे तक सकल जगह अनैतिक तथा ऋषि दयानन्द के विरुद्धाचरण हो रहा है, और कहने के लिये हम श्रेष्ठ हैं। मेरी जानकारी में और भी कई लोग हैं जो किसी समाज में मन्त्री है, और कहीं दूसरी समाज में अन्तरंग सदस्य है। आर्य जगत् जैसी प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य पत्रिका के सम्पादक आर्य शब्द को हटाकर हिन्दू प्रमाणित कराने में जुटे हैं। कई पत्रिकाओं में इसकी चर्चा सामने आई है।

विभिन्न आर्य समाज में कर्मकाण्ड को अपनी मनमानी ढंग से लोग चला रहे हैं। न तो संस्कार विधि को देखते और न हीं ऋषि दयानन्द की बातों पर अमल ही करते। यह तो मैं जहाँ देखा उसका उल्लेख किया। परन्तु यही सारा काम विश्वभर के आर्यसमाजों में हो रहा है। जिन आर्यजनों पर दयानन्द ने जिम्मेदारी सौंपी थी वही आज आर्यसमाज को ही डुबोने में लगे हैं। 125 वर्ष आर्य महासम्मेलन मनाया गया। एक लाख आदमी नहीं जुटा सके। और उसी महासम्मेलन में किये गये यज्ञ पर ही टीका टिप्पणी - विद्वानों द्वारा विरोध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं द्वारा किया गया। कितनी लज्जा की बात है। 125 वर्ष में भी आर्य समाजियों को ऋषि दयानन्द द्वारा निर्णय तथा दिशानिर्देशानुसार यज्ञीय कार्य भी सम्पन्न नहीं हो रहा है। और ऋषि दयानन्द से भी अपने को विद्वान् सिद्ध करने लगे हैं। इस सन्दर्भ में ऋषि सिद्धान्त रक्षिणी सभा का प्रयास है। ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों की रक्षा आर्य शब्द की रक्षा करना। इनके दुरुपयोग को रोकने को दृढ़ संकल्प तथा दयानन्द के नाम को दूषित करने वालों के खिलाफ संघर्ष करना है।

और वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध कार्य आर्य समाज नामी संस्था में चलाने तथा करने वालों का पर्दाफाश करना। सिद्धान्तिक विषयों का प्रतिपादन करना व आवश्यक होने पर शास्त्रार्थ की चुनौती देना मुख्य उद्देश्य है। चाहे वह कितना बड़ा विद्वान् माने अपने को। ऋषि सिद्धान्त रक्षिणी सभा निर्भयता व साहस के साथ ऋषि सिद्धान्त रक्षक मासिक पत्रिका में लिखने की हिम्मत है। अत: आप इस पत्रिका के सदस्य अवश्य बनें।

नोट :- अब मैंने इसका सम्पादन कार्य छोड़ दिया है।

ऋषि सिद्धान्त रक्षिणी सभा जन्म काल से इसका विरोध करती आई है। सह शिक्षा को अवैदिक तथा ऋषि सिद्धान्त विरुद्ध घोषित कर रखा है। इस सन्दर्भ में आर्य समाज का कोई भी संगठन इस वैदिक मान्यता का प्रचार नहीं किया। सभा की ओर से आर्य जनों से कई बार प्रार्थना की गई। विद्वानों से विनती करते हुए सभा ने कर्म काण्ड में एकरूपता लाने का अथक प्रयास सभा का है। कुछ विद्वानों के विरोध पर सभा ने शास्त्रार्थ की खुली चुनौती भी दी थी। बहुकुण्डीय यज्ञ तथा वेद परायण यज्ञ अवैदिक सिद्ध होने पर भी कुछ आर्य कहलाने वाले विशेष कर युवापरिषद् के कार्यकर्त्ताओं द्वारा जनता से पैसा वसूलने का एक आसान तरीका बना रखा है। जिसका विरोध सिद्धान्त रक्षिणी सभा करती आई है। हमारी शिरोमणि सभा तथा प्रान्तीय सभा अगर चाहती आर्यजनों में संगच्छध्वमं की भावना को भरना, तो निश्चित रूप से आर्यजनों को इससे कुछ लाभ मिल सकता था। आज ही प्रतिज्ञा करें कि एक वेद रूपी धागा में आर्यजनों को पिरोने हेतु सभा का साथ दें।

अब मैं इस सभा के मंत्री पद को भी छोड़ चुका हूँ।

संन्यास के नाम पर वैदिक मर्यादा पर कुठाराघात

*****

संन्यासी शब्द को सुनते ही लोगों के दिल, दिमाग में एक आदर, श्रद्धा तथा भक्ति में अपने आप झुक सा जाता है, जैसे ईसाईयों में पादरी के प्रति व मुसलमानों में एक आलिम के प्रति।

भले ही ईसाई तथा मुसलमानों के पादरी व मौलवी दुष्कर्म में लिप्त क्यों न हो। और पौराणिक जगत के संन्यासी व्यसनों में लिप्त रहते पाये जाते हों। क्योंकि पौराणिकों में मांसाहार का प्रतिबन्ध नहीं, गांजा, भांग पीने में प्रतिबन्ध नहीं, और विशेषकर पौराणिक संन्यासी तमिलनाडू के जेल में बन्द देखे जा रहे हैं। परन्तु वैदिक मर्यादा में संन्यासी को तथा चारों आश्रम वालों को भी समस्त प्रकार के व्यसनों से ऊपरउठने की बात कही गई है। मर्यादा की बात इसमें यह भी है, कि इसकी जिम्मेदारी हर संन्यासियों को दी गई है। अर्थात् संन्यासी ही ब्रह्मचारी, गृहस्थी व वानप्रस्थी, तीनों को धर्मोपदेश दें, ईश्वर से सम्पर्क साधने का तरीका बतायें समस्त प्रकार के दुर्गुणों, दुर्व्यसनों से ऊपर उठने का उपदेश दें, आदि। यह मर्यादा मात्र वैदिक मर्यादा के आधार पर वैदिक सन्यासियों को दिया गया।

मैं ऊपर बता चुका हूँ कि अन्य साधुओं को खान-पान व रहन सहन चाल चलन में छूट है। परन्तु वैदिक संन्यासियों को फूंक-फूंक कर कदम रखने का उपदेश आर्य समाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के पंचम समुल्लास में क्या लिखा है देखें । **दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं, वस्त्र पूतं जलं पिवेत। सत्य पूतां वदेद्वाचं मनः पूतं समाचरेत।**

अर्थ – जब संन्यासी मार्ग में चलें तब इधर-उधर न देखकर नीचे पृथिवी पर दृष्टि रख के चलें । सदा वस्त्र से छान के जल पिये, निरन्तर सत्य ही बोले, सर्वदा मन से विचार के सत्य का ग्रहण कर असत्य को छोड़ देवें।

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः, नाशान्तमानसो वापिप्रज्ञाने-नैनमाप्नुयात्।। कठ. बल्ली-2 सत्यार्थ प्रकाश-पंचम

अर्थ – जो दुराचार से पृथक् नहीं, जिसको शान्ति नहीं, जिसका आत्मा योगी नहीं, और जिसका मन शान्त नहीं है, वह संन्यास लेकर भी ज्ञान से परमात्मा को प्राप्त नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश – संन्यास विधिः।।

आगे = यच्छेद्वाङ्मनसो प्रज्ञस्तद्यच्छेद ज्ञान आत्मनि, ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेतद्यच्छेच्छान्त आत्मनि।

अर्थ – संन्यासी बुद्धिमान् वाणी और मन को अधर्म से रोके, उनको ज्ञान और आत्मा में लगावे और उस ज्ञान, आत्मा को परमात्मा में लगावे और उस ज्ञान को शान्त स्वरूप आत्मा में स्थिर करें। सत्यार्थ प्रकाश पंचम सम्मुलास।

आज दुनिया में संन्यासियों की कमी नहीं है, हर लाल वस्त्र धारी को लोग संन्यासी कहते व कहलाते हैं। परन्तु वैदिक मर्यादा को दर्शाते हुये आर्य समाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ में जहाँ ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आश्रम की चर्चा की है, वहीं संन्यास आश्रम की मर्यादा को भी दर्शाया है। मात्र लाल या कौशिय वस्त्र धारण करने का नाम संन्यासी नहीं हैं। अपितु संन्यास आश्रम के लिए जो वैदिक मर्यादा या गुण हैं, उसे धारण करना या तदानुसार अपने जीवन को बनाना उसे आचरण में उतारने वाला ही संन्यासी कहलाता है।

अब इस कसौटी पर जो खरा उतरें, वह संन्यासी है, वरना उसे सत्यानाशी कहा जायेगा। विशेषकर अब आर्यजनों या आर्य समाजियों के लिए यह उचित होगा कि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने जो कसौटी दी है जो संन्यासी उसपर अमल नहीं करता या उस कसौटी को नहीं मानता, वह संन्यासी तो हो ही नहीं सकता। फिर ऋषि दयानन्द की बनाई संस्था के उत्तराधिकारी होने का प्रश्न ही कहां है?

मैं उपर लिख आया हूँ, ब्रह्मचारी, गृहस्थी व वानप्रस्थी से ज्यादा महत्त्व है संन्यासी का, क्योंकि संन्यास, आश्रम तीन आश्रमों से ज्यादा मर्यादा रखता है और मर्यादा इसलिए भी है कि संन्यासी अपने पास नहीं रखते, सब बांट देते हैं। जैसे गणित का क्रम है चार – जोड़, घटा, गुणा व भाग। वैदिक मर्यादा

में आश्रम व्यवस्था भी चार है, ब्रह्मचर्य में जोड़ना व गृहस्थ में वियोग, वानप्रस्थ में गुणा, सन्यास में भाग, संन्यासी कहलाकर मात्र संग्रह करे वह स्वामी तो कहला सकते हैं पर संन्यासी नहीं।

यही चाल आज आर्य जगत में चरितार्थ करने में लगे हैं अग्निवेश। इसलिए अपने को स्वामी लिखते व कहलाते हैं। भले ही दुनिया वाले उनको अपना स्वामी न मानें, पर वह स्वामी हैं। आर्य कहलाने वाले याद रखना अग्निवेश अगर स्वामी हैं, तो लोकेष्णाओं के स्वामी हैं। एक लाख से ऊपर बंधुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा के नाम से चला रहे भोले-भाले मजदूरों से मासिक चन्दा लेने के स्वामी है। राष्ट्रीय मर्यादा पर आँच लगाने के स्वामी हैं। अन्यों की संस्था पर कब्जा करने के स्वामी हैं। अब सार्वदेशिक सभा पर भी अवैध कब्जा करने के यह स्वामी हैं।

अग्निवेश जी काम वही करते हैं, जिसमें अखबार में चित्र छपे, दूरदर्शन में जनता के सामने आवें, जो लोकेष्णा से ऊपर नहीं उठ पाए, जो संन्यास आश्रम का पहला उपदेश है। उस पर अमल नहीं किया तो किस बात के संन्यासी?

अवश्य जहाँ तक अखबार में फोटो छपने व निकालने की बात है, या दूरदर्शन में चेहरा दिखाने की बाते हैं। वह तो आये दिन न मालूम कितने ही आतंकवादियों को दूरदर्शन में दिखाया जाता है या अखबार में उनका फोटो निकलता है। पर ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि जब आतंकवादी को जनता के सामने किया जाता है, वह अपने चेहरे पर कपड़ा लपेट लेता है और अपने चेहरे को जनता के सामने करने से लज्जा बोध करता है। जबकि उस काम को करते समय लज्जा बोध होना था। आश्चर्य की बात तो यह है कि एक साधारण व्यक्ति को जब दूरदर्शन के सामने लाया जाता है तो वह लज्जा महसूस कर चेहरे को ढक लेता है। परन्तु संन्यासी होकर संन्यास धर्म के विपरीत काम कर भी लोगों में चेहरा दिखाना अपना शान समझ रहे हैं।

यह संन्यास के नाम पर वैदिक मर्यादा पर कुठाराघात तो है ही, साथ ही आर्य समाज व आर्य समाज के संस्थापक देव दयानन्द को भी बदनाम करने की बात है। क्योंकि आर्य समाज के संस्थापक ने सभी मतवादो से ऊपर

उठकर वैदिक संस्कृति को अपनाने की बात कही है। यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैनी किसी भी मानवकृत चलाये गये मत, पंथ की बात नहीं, अपितु ईश्वर प्रदत्त मानव मात्र को दिये गये वेद को ईश्वरीय ज्ञान दर्शाया है। और मानव मात्र का एक ही धर्म सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाने का प्रचार किया। परन्तु अग्निवेश जी उसी देव देयानन्द के पवित्र मिशन को गन्दा करने में संकोच नहीं कर रहे हैं।

जैसा कि उन्होंने जो फर्जी चुनाव रिपोर्ट तैयार की है उनमें कई मुसलमान और ईसाईयों के नाम हैं। उनसे अगर यह पूछा जाये क्या उन लोगों ने वेद को धर्म ग्रन्थ व ईश्वरीय ग्रन्थ मान लिया है? या कुरान व बाईबल को ईश्वरीय ग्रन्थ मानते हैं? जो वेद को ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं मानते तो दयानन्द की संस्था में उनका क्या काम?

दरअसल अग्निवेश जी यह सब इसलिये कर रह हैं कि श्रीमती गांधी उनको शान्ति का दूत बनने की मोहर लगा दें और उन्हें नोवल पुरस्कार दिलवा दें। जैसा राजीव गांधी पुरस्कार मिला है। इसी कारण सोनिया के पास गिड़गिड़ा कर पुलिसिया बल पर आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक पर कब्जा किया। लोग सुनकर भी अचम्भित होते हैं कि संन्यासी का सम्पर्क सीधा परमात्मा के साथ होता है। या संन्यासी परमात्मा के प्रतिनिधि हुआ करते हैं। मानव मात्र को असत्य व अधर्म से बचाकर कल्याण मार्ग को दर्शाते हैं। किन्तु अग्निवेश जैसे संन्यासी ने परमात्मा के आँचल पकड़ने के बजाय सोनिया गांधी का आँचल पकड़ लिया क्या यह संन्यासी का लक्षण है?

अभी मैं झारखण्ड प्रान्त में प्रचार हेतु गया था वहाँ से मैंने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान को फोन मिलाया बहुत सी बातें होने के बाद प्रधान जी ने मुझे सुनाया पं. जी हम लोग साधारण जन होकर भी परमात्मा का आँचल पकड़े हुये हैं, फिर हंसकर बोले देखो संन्यासी ने किसका आँचल पकड़ लिया? जब यही घटना मैंने मेरे परम सहयोगी ई. श्री सुरेश सैनी जी को सुनाई तो वह भी खिल खिलाकर हंस पड़े।

जो आर्य कहलाने वाले अग्निवेश जी के साथ लगे हैं उनसे मेरी प्रार्थना है कि मात्र एक ही बात पर विचार करें कि संन्यासी से दुनिया को क्या उम्मीद

है? संघर्ष या शान्ति? अब जो अपने को संन्यासी कहला कर आर्यजनों से सार्वदेशिक सभा को छीनने के लिए कोर्ट कचहरी करें, अनर्गल आर्यों का धन न्यायालय में खर्च हो, फिर बतायें वह संन्यासी कहलाने के योग्य हैं?

जिस संन्यास आश्रम में उपदेश दिया गया वाणी और मन को अधर्म से रोकने का। वहीं संन्यासी कचहरी जाकर झूठ बोलें, यह तो आर्य कहलाने वालों को चुल्लु भर पानी में डूब मरने की बात हो गई। आर्य लोगों याद रखना इसी झूठ और फरेब से बचने के लिए, ऋषि दयानन्द के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी वकालत छोड़ी थी। मेरी प्रार्थना समस्त आर्य कहलाने वालों से है कि सही अर्थों में आप लोग अपने को ऋषि दयानन्द के अनुयायी मानते हैं। तो एकजुट होकर सार्वदेशिक सभा को इन स्वार्थी पदलोलुपों से, लोभी व लालचियों से संन्यास के नाम वैदिक मार्यादा पर कुठाराघात करने वालों से बचा लीजिये वरना परमात्मा के पास चेहरा दिखाने के काबिल नहीं रहेंगे और आतंकवादी जैसा चेहरा ढक कर जाना पड़ेगा।

अग्निवेश डॉट कॉम में आखिर क्या है?

*****

आर्य लोगों आप सभी को पता है श्याम राव अग्निवेश बनकर आज छत्तीस वर्षों से ईश्वर, वेद व आर्य समाज को समग्र कम्प्यूटर जगत में अपने वेब साइट के माध्यम से बदनाम करने में जुटे हैं।

पिछले 28 फरवरी 2005 में इस व्यक्ति ने आर्यों की शिरोमणि सभा पर अवैध कब्जा किया। उस पर काबिज लोगों की ही नींद हराम नहीं की, अपितु सम्पूर्ण आर्य समाज को असमंजस में डाल दिया। इतना होने पर भी मैं उस व्यक्ति को धन्यवाद देना चाहूँगा क्योंकि अगर वह ऐसी हरकत न करते तो विशेषकर दिल्ली में विभिन्न प्रान्तों से बिना कोई अधिवेशन के इतने आर्य लोग एकत्र नहीं होते और न एक जुटता ही दिखा पाते। सभी प्रान्तों के आर्य जनों को चार मास में कई बार दिल्ली बुलाने में कितने ही लोगों का योगदान है। उसे लिखकर मैं किसी को ठेस पहुंचाना नहीं चाहता। फिर भी मैं कहूंगा व्यक्तिगत सम्पर्क कर उन लोगों को बुलाने में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी का जो योगदान मैंने देखा उसकी तुलना औरों से करने की हिम्मत मुझमें नहीं।

जबकि सभा प्रधान सार्वदेशिक सभा के अधिकारी नहीं। मात्र इस अवैध कब्जा करने वालों के खिलाफ जो मोर्चा संघर्ष समिति के नाम से खोला गया उसी के वह मुखिया हैं। अन्य अधिकारियों का भी बहुत बड़ा योगदान है। मैं इन सभी आर्य अधिकारियों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा। क्योंकि अग्निवेश डॉट कॉम को अगर यह लोग सामने न लाते, फिर साधारण आर्यजनों को भी इस डॉट कॉम के बारे में पता नहीं लगता। क्योंकि कम्प्यूटर में बहुत लोगों की वेबसाइट बनी है और सब लोग उस पर काम भी करते हैं, पर आज तक इसका पर्दा फाश किसी ने भी नहीं किया। इस लाल वस्त्रधारी की बुद्धि भी मारी गई कि जिस आर्य समाज नामी संस्था की पवित्रता को और संस्था के जन्मदाता ऋषि ही नहीं महर्षि कहलाने वाले ब्राह्मण कुल कमल भास्कर, व्याकरण महोदधी, वेदज्ञ, युग प्रवर्तक, समाज सुधारक, मानव मात्र का

कल्याण चाहने वाला। राष्ट्रीयता के प्रचारक, अंग्रेजी राज्य के शत्रु, संस्कृत के प्रचारक, नारी सम्मान के उद्धारक, मानव मात्र को ईश्वर का सही पता बताने वाला, न 'भूतो न भविष्यति', धर्म के मर्मज्ञ, 18 घन्टे की समाधि लगाने वाले साधक, त्याग के प्रति मूर्ति, मानव मात्र को कर्त्तव्यों का पाठ पढ़ाने वाले, तपोनिष्ट, धर्म निष्ट, कर्म निष्ट द्वारा स्थापित आर्य समाज को, कैथोलिक ईसाई महिला सानिया गाधी की सहमति या सहभागिता से बदनाम करने का जो घिनौना कार्य किया है। कई जन्म तक अगर इनको कोसा जाय तो भी कम है।

एक महान त्यागी की संस्था पर अगर भोगी काबिज हो तो जरा सोचना आर्य लोगों कि हम लोग कहीं के भी नहीं रहेंगे। आईए जरा साहस के साथ एकजुट होकर संघबद्ध तरीके से इन दुष्टों को मात्र सार्वदेशिक सभा से नहीं वरन आर्य समाज नामी संस्था से बाहर करने का संकल्प लें।

आर्य समाजियों को एक अवसर मिला है अपने संगठन को मजबूत बनाने का। हम अगर इस अवसर को गंवा देते हैं तो ऋषि दयानन्द ही नहीं, परमात्मा भी हमें इसकी कड़ी सजा सुनायेंगे। क्योंकि यहां विवाद कुर्सी पर बैठने को लेकर नहीं। अपितु वैदिक सिद्धान्त व वैदिक मर्यादा को लेकर है। धर्म व अधर्म को लेकर है, सत्य व असत्य को लेकर है, ईश्वर को जानने व न जानने को लेकर है। साथ-साथ ईश्वर को मानने व न मानने को लेकर है। आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने ईश्वर को जानने के लिए अपना सर्वस्व त्यागा। यहां तक कि अपने माता-पिता के लाड व प्यार से अपने को वंचित किया। भूख, प्यास व कितनी मुसीबतों का सामना किया, मात्र ईश्वर को किस प्रकार जाना व पाया जा सकता है। मात्र उसी को लिखा जाये तो एक पुस्तक बन जायेगी।

फिर ऋषि दयानन्द उसी ईश्वर के स्वरूप को जनता जनार्दनों तक पहुंचाने के लिए न मालूम अपने ही देश में कितनी बार लोगों के ईट व पत्थर खाये। किसी ने विषधर सांप फेंका और कितनी बार लोगों ने जहर दिया आदि। कुल मिलाकर ऋषि दयानन्द अपने प्राणों की परवाह किए बिना ईश्वर के गुणों का वर्णन करते रहे। ईश्वर को पाने के लिए लोगों को रास्ता दिखाते रहे।

ईश्वर को जानने की कसौटी वेद को स्वतः प्रमाण, प्रतः प्रमाणं बताया।

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है सिद्ध किया। अन्य सभी ग्रन्थों को मानवकृत होने का अनेक उदाहरण दिया। वेद व मनुस्मृति को प्रमाणित कर मानव मात्र का आचार संहिता घोषित किया।

आर्यो कि उत्पत्ति ही नहीं अपितु आर्य ही ईश्वर पुत्र है प्रमाणित किया। आर्य शब्द पर लोगों के अनर्गल प्रलापों को रोका, आर्य इस देश के मूल निवासी हैं, का प्रमाण दिया। आर्य शब्द कोई जाति सूचक नहीं, अपितु गुण वाचक है, बताया आदि आदि। आज उसी संस्था पर बैठने का साहस किसने किया? जो आर्यो को उत्तर दिशा से भारत में आए पहले वाली सभ्यता जो अच्छी थी। आर्य लोगो ने उसे नष्ट किया। यहाँ आकर आग लगाई, लूटपाट की व युवा महिलाओं से बलात्कार किया, लिखा अग्निवेश ने।

इन अक्ल के दुश्मनों को यह सोचना था कि जिस संस्था पर उन्होंने कब्जा किया है वह तो उन्हीं आर्य लोगों की संस्था है जिनको आप विदेशी, लुटेरा, रहजन बलात्कारी लिख रहे हैं, तो ऐसे लोगों की संस्था में आप जैसों का क्या काम?

जवाब बड़ा सीधा है कि आर्य जो गुण, कर्म, स्वभाव से श्रेष्ठ हैं वह आर्य हैं उन गुणवानों को चरित्रहीन बताकर उस पर काबिज होना, इसी का ही नाम दुश्चरित्र है। अर्थात् इसने अपने आप सिद्ध कर दिखाया अपने चरित्र को जो एक विदेशी एक्टर महिला के गले में हाथ डालकर अपना इन्टरनेट में जनता को दिखा रहा है। क्या जनता अभी भी नहीं समझ रही है इस जालसाज की चतुराई को? भले ही आर्य लोगों की समझ में आ गई हो, परन्तु अनिल आर्य की समझ में अब तक नहीं आई। क्योंकि अनिल अपने नाम से आर्य लिखता है और वह जिसका साथ दे रहा है वह उसे लुटेरा, बदमाश, बलात्कारी बता रहा है, है न अचम्भे की बात?

जो व्यक्ति आर्यो को बलात्कारी बताये और ईश्वर प्राप्ति का साधन सैक्स माना, वह कह रहे हैं चाहे देश पर राज्य करने का प्रश्न हो या तांत्रिक सैक्स समागम सबका अन्तिम उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति या आत्म सिद्धि होता है।

अवश्य यह कहना असत्य न होगा कि इस लाल वस्त्रधारी ने महिला

हो या युवति अपने से इन लोगों को कभी अलग होने नहीं दिया। देशी हो या विदेशी महिला सर्वदा इनके इर्द-गिर्द ही रहती है। एक शादी शुदा महिला को ही संन्यास की दीक्षा दे दी। उनके दो बच्चे हैं उनके पति परेशान हैं। मात्र इतना हीं नहीं अपने हाथ से मिठाई खिलाते हैं महिलाओं को। कई सभाओं में ऐसे दृश्य सामने आये। मैं किन-किन का नाम लिखूँ ? इस धूर्त ने यहां तक लिखा कि हमें यह कहने का अधिकार कदाचित नहीं कि हमारा धर्म पूर्णतया प्रमाणित है।

जबकि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द दुनिया वालों के सामने यह सिद्ध कर चुके हैं कि मानव मात्र का धर्म एक है। जिसका नाम सत्य सनातन वैदिक धर्म है। और जितने भी हैं वह सब व्यक्ति विशेष द्वारा स्थापित होने हेतु वह मत् है, पंथ है, मजहब हैं, रिलिजन है क्योंकि धर्म मानव मात्र का एक होता है, अन्य जिनते भी हैं वह वर्ग विशेष के लिए हैं सम्प्रदाय विशेष के लिए हैं, समग्र मानव मात्र का नहीं।

जैसा महात्मा बुद्ध से पहले बौद्धिष्ठ कौन था? महावीर से पहले जैनी कौन था? ईसा से पहले कोई ईसाई कहां था? मुहम्मद से आगे एक भी मुसलमान नहीं था, जो कुरान में सुरा अनआम के आयत (14) पर अल्लाह ने साफ कहा ऐ मुहम्मद तुम कह दो कि सबसे पहले मुसलमान मैं हूँ, मैं मुशरिकों में शामिल नहीं हूँ।

इन सब मत् के जन्मदाताओं से पहले कोई भी इस मत के मानने वाले नहीं थे। किन्तु आदि सृष्टि से वेद् हैं और उसके मानने वाले वैदिक धर्मी भी। पर यह कोई नहीं बता सकता कि मत के जन्मदाताओं से पहले भी कोई उस मत का मानने वाला भी रहा हो? मानव मात्र का धर्म एक होने की कसौटी यह है कि धरती पर जब कोई मानव आता है, तो सबकी आवाज़ रोने, हँसने, चिल्लाने, पुकारने की एक ही होती है। अब उसने किसी देश में जन्म लिया हो और वह किसी कौम में पैदा हुआ हो।

मुस्लिम परिवार में जन्म लेकर बच्चा, अल्लाह व मुहम्मद या कुरान नहीं चिल्लाता, या ईसाई परिवार में जन्म लेकर बच्चा गॉड या ईसा अथवा बाईबिल नहीं कहता। ठीक इसी प्रकार पल्ला या कांटा को धर्म कांटा कहा

जाता है, वह सोना तौलने का हो, लोहा तौलने का हो, कोयला तौलने का हो या फिर गाड़ी तौलने का ही क्यों न हो । और उसी कांटे में तौलने के लिए सामान लेकर हिन्दू, मुस्लिम, बौद्धिष्ठ, जैनी, सिख, ईसाई कोई भी चला गया सामान का वजन कांटा अलग-अलग नहीं बताया, सबको समान बताया क्योंकि सब का धर्म एक ही है।

सूर्य, प्रकाश भी सबको समान देता है अलग-अलग नहीं, क्योंकि ईश्वर पर भी पक्षपात का दोष लगेगा। यही कारण है धर्म मानव मात्र का एक ही है। अब इस धूर्त से कोई यह पूछे कि, जब तुम्हारा धर्म पूर्ण नहीं है, तो उसे क्यों ढो रहे हो?

लाल वस्त्रधारी को साथ लिए फिर रहे लाल बुझक्कड़

*****

लाल बुझक्कड़ शब्द बड़ा पुराना है और यह शब्द प्रवाद में बड़ी प्रसिद्धि पा चुका है। 'लाल बुझक्कड़' शब्द को लोगों ने अपने हिसाब से फिट किया है। फिर भी अधिकांश प्रचलित है 'मन्दबुद्धि' लोगों के लिए या 'जिनकी बुद्धि मारी गई' ऐसे लोगों के लिए। सहज भाव से जिन्हें लोग 'पागल' कहते हैं।

इस पागल शब्द पर जब मैंने नजर दौड़ाई, तो लगा गुरमुखि या पंजाबी बोली में पागल शब्द के कुछ और ही अर्थ हैं। जैसे पंजाबी में गल कहते हैं बोली को, वाक्य को और पा के अर्थ है पाना अर्थात् निचोड़ यह निकला गल को पा जाना, या बात को पा जाना, पा लेना आदि। अब यह बात है क्या? और किसने पाई? यही प्रश्न हर कोई पाठक जानना चाहेंगे। तो आईये मैं आप सभी पाठकवृन्दों को एक-एक कर जानकारी दे रहा हूँ।

पिछले अप्रैल, मई और जून के प्रथम सप्ताह तक दिल्ली से एक जाली पत्रिका 'आर्य सन्देश' के नाम से निकलती रही, जिस पर सरकार ने अब शिकंजा कस दिया है, नकली होने हेतु। उस जाली आर्य सन्देश ने यह गल पा लिया, वह गल है श्याम लाल द्वारा प्राक्कथन अग्निवेश की वेब साईट, इस लेख में लाल वस्त्रधारी के मनमानी बातों को लिखकर पागल जैसी गल की है। और वह गल है ऋषिवर देव दयानन्द के मनतव्यों में परिवर्तन लाना अथवा आर्य समाज के नियमों में सुधार लाना। इस सुधार के लिए सिफारिश कर रहे हैं लाल बुझक्कड़ लोग। क्या कह रहे हैं, आर्यजन ध्यान से देखें, मैं नकल उतार रहा हूँ।

वेबसाईट में दिए गए विषयों पर स्वामी जी ने (अग्निवेश) जो बेबाक विचार दिये हैं व सठीक हैं, सारगर्भित, विद्वतापूर्ण और ललित प्रांजल, प्रवाहमान भाषा में लिखित हैं। तथा नए तथ्यों और जानकारियों को उद्घाटित करने वाले हैं। कोई भी व्यक्ति इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। आर्य

समाज की मान्यताओं और सिद्धान्तों से नितांत अपरिचित व्यक्ति भी इन्हें पढ़कर गहन गम्भीर चिन्तन करने तथा इन्हें अपनाने को आकर्षित होगा। और आगे लिखा है, महर्षि दयानन्द ने हमें, सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहने का आदेश दिया है। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका और अनुभूमिका में भी अपने विचारों से असहमत होने का अधिकार उन्होंने पाठकों को दिया है। अत: स्वामी अग्निवेश को भी किसी अन्य व्यक्ति की तरह, स्वतन्त्र चिन्तन, स्वतन्त्र विचाराभिव्यक्ति तथा स्वतन्त्र सम्मति रखने का अधिकार मिलना ही चाहिए।

इन दो बिन्दुओं पर विचार करें, कितने लाल बुझक्कड़ पने की बातों को, ललित व सार गर्भित तथा प्रांजल प्रवाह मान भाषा लिखा गया। पहला शब्द ही गलत है। अग्निवेश ने जो बेबाक विचार दिये हैं लिखा बेवाक शब्द हैं फारसी का अर्थ - बेखौफ अर्थात् निडरता आदि।

क्या चोर को चोरी करने में डर लगता है? क्या कातिल को कत्ल करने में भय होता है? क्या रहजन को लूटने में डर होता है? क्या माफिया ग्रुप को अन्यों से धन उगाने में डर लगता है? या दूसरों की सम्पत्ति पर, कार्यालयों पर काबिज होने में डर होता है? पर इसका मतलब तो यह नहीं हुआ, कि यह काम करने वाले सभी बहादुर हैं? अगर ऐसा करने वाले निडर होते, बहादुर होते, फिर पुलिस को साथ लेकर कब्जा क्यों करते?

पर आर्य लोगों याद रखना, डर या भय, ईश्वर की ओर से होता है, जिसे धरती पर लोग God Gift कहते हैं । ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि जो लोग गलत काम करते हैं, वो गलती करते-करते पाषाण (पत्थर) बन जाते हैं फिर वह परमात्मा की दी हुई दया रूपी डर को नजर अन्दाज कर ही गलत काम करता है। और इसी का ही नाम डर, गलती और ऊपर से सीना जोरी, ठीक इसी को आचरण में ला रहे हैं यह लाल बुझक्कड़ लोग। फिर आगे लिखा है आर्य समाज के सिद्धान्तों से अपरिचित व्यक्ति भी इसे अपनाने को आकर्षित होगा।

हाँ यह तो सत्य है कि इस वेबसाइट से गैर आर्य समाजी आकर्षित होंगे, परन्तु आर्य समाजी नहीं। यह तो श्याम लाल जी ने ठीक लिखा है, क्योंकि

आर्य समाजी वही है जो आर्य समाज के प्रवेश पत्र के सभी कॉलम को पढ़ा, जानकर माना, जिसमें साफ लिखा है, मैं ऋषि दयानन्द के मनतव्यों को मानता हूँ। ऋषिकृत सभी ग्रन्थों को मानता हूँ, वेद को ईश्वरीय ज्ञान व धर्म ग्रन्थ मानता हूँ, मैं सदाचारी जीवन जीने की प्रतिज्ञा करता हूँ, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा आदि।

इन सभी बातों को मृत्यु पर्यन्त जिसने निभाने का वादा किया वही आर्य है। इसका उल्लंघन करने वाला कोई लाल वस्त्रधारी हो या लाल वस्त्रधारी के साथी संगी। वह लाल बुझक्कड़ तो कहला सकते हैं, पर आर्य नहीं। 1872 में भारत की राजधानी कलकत्ता में बंगाल के जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ता केशव चन्द्रसेन ने ऋषि दयानन्द से कहा था - **'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, क्यों कहते हैं? बल्कि यह कहिये कि वेद में भी सत्य विद्या है।'** ऋषि दयानन्द ने अपने जवाब से केशव चन्द्र सेन को निरूत्तर किया और कहा कि वेद भीं नहीं, अपितु वेद ही सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

मात्र ऋषि की इस घटना को ही यह लाल बुझक्कड़ लोग पढ़ लेते, तो शायद ऋषि दयानन्दकृत अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में या वैदिक मान्यता में परिवर्त्तन लाने की बात आज इनको नहीं कहनी पड़ती।

एक आश्चर्य की बात यह भी है कि जिस सत्यार्थ प्रकाश को गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे विद्वान 18 बार पढ़कर कहने लगे कि प्रत्येक बार मुझे इसमें नई बातें मिली है तो श्याम लाल जी बतायें क्या गुरुदत्त विद्यार्थी से आप या आपके गुरु अग्निवेश अपने को ज्यादा विद्वान मान रहे हैं? यही कारण है कि आप लोगों के विद्वता से गैर आर्य समाजी आकर्षित होगा और हुआ भी। यही कारण बना आप लोगों के साथ कोई आर्य समाजी नहीं। सब गैर आर्य समाजी हैं और आप लोगों ने समग्र आर्य जगत को दिखाया भी। ताल कटोरा में स्वामी ओमवेश तीन गाड़ी गैर आर्य समाजी बिजनौर से भरकर ले आये। ध्यान देने योग्य बात यह भी है, जो परमात्मा से डरते नहीं, उसे लज्जा भी नहीं है, क्योंकि भय, लज्जा व शंका यह तीनों परमात्मा प्रदत्त हैं। किन्तु परमात्मा से डरे तो वही, जो परमात्मा को मानते हों। परमात्मा को न मानने का सबसे बड़ा प्रमाण है कि इन लाल वस्त्रधारी ने वेद पर सन्देह किया। जो वेद पर सन्देह

करे फिर परमात्मा को मानने की बात ही कहाँ ?

इनकी बुद्धिमानी देखिये ऋषि दयानन्द के विचारों से सहमत न होकर भी दोष और दुहाई दयानन्द को दे रहे हैं। जैसा सत्य को ग्रहण और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। यह आर्य समाज का चौथा नियम है और यह नियम ऋषि ने स्वयं बनाये हैं।

इसी का हवाला देकर श्याम लाल, यानी काला भी और लाल भी अर्थात् जिनके रंग ही दो हैं। वह लिख रहे हैं। अत: स्वामी अग्निवेश को स्वतन्त्र सम्मति रखने का अधिकार मिलना ही चाहिये। और वह स्वतन्त्र सम्मति किसमें? ऋषि के दिये गये विचारों को परिवर्तित करने में।

इन अकल के कोल्हुओं का तमाशा देखें, जब आर्य समाज में प्रवेश करते ही ऋषि के विचारों को मानता हूँ, नियमों का पालन करूँगा स्वीकार किया, फिर उसमें परिवर्तन की गुंजाईश कहां? जबकि आर्य समाज टिका ही है इसी नियम के बल (भित) पर। इसी नियम के आधार पर ही आर्य समाज नाम पड़ा, वरना आर्य समाज न होकर इसका नाम खिचड़ी समाज बनता।

इनको यह सोचना था, बन्धुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा संगठन के जो नियम या विधि बनी हुई है उसमें अगर कोई परिवर्तन करना चाहे तो क्या इनकी नजर में वह मान्य है? जबकि वह अग्निवेश का व्यक्तिगत निजी संगठन है।

किन्तु आर्य समाज के जो नियम हैं वह व्यक्तिगत नहीं, सार्वजनिक, सार्वकालिक, सार्वभौमिक हैं। कोई जाति विशेष का नहीं, किसी मुल्क वालों का नहीं। अग्निवेश आज इस नियम को बदलने की बात क्यों कह रहे हैं? जबसे आये, उस समय से क्यों नहीं कहा? इसी हटता व अहम भाव के कारण आर्य समाज से उन्हें कई बार निष्काषित किया गया। मैं 1983 से देख रहा हूँ। उस समय के चोटी के आर्य समाज का प्राण कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं। शास्त्रार्थ महारथी स्व. अमर स्वामी, मैं जिन्हें अपना मार्गदर्शक मानता हूँ। मुझे उन्होंने कई बार कहा अग्निेवश आर्य समाजी नहीं है, वैदिक मान्यता से वह अनभिज्ञ है, आदि। उस समय के और संन्यासी भी यही कहते रहे लौकेष्णा ही जिनका मकसद हो वह संन्यासी कहां? रही बात नियम परिवर्तन की, अग्निवेश जो मुसलमान व ईसाई के नाम आर्य, सदस्यता में दे रखा है,

क्या अग्निवेश ने उन मुसलमानों व ईसाईयों के नियमों में परिवर्तन लाने की बात कभी कही हो।

क्या मुसलमानों के नियमानुसार नमाज़ पांच बार के बजाय तीन बार पढ़ने की बात की हो? ईसाईयों को कभी यह बताने में सफलता प्राप्त की हो? कि ईश्वर का इकलौता बेटा हजरत ईसा ही नहीं, हम सब भी ईश्वर के पुत्र हैं?

अग्निवेश नामी पाखण्डी अन्य सम्प्रदाय में क्यों नहीं परिवर्तन लाने की बात करते? क्या अग्निवेश ने कभी किसी मुसलमान से या इस्लाम जगत के विद्वानों से यह कहा है कि कुरान में गैर मुस्लिमों को मारो, काटो, लूटो, पीटो की बातें हैं उसे हटा दो? या कभी भी सार्वजनिक भाषणों में कभी इस प्रकार का कोई भी वक्तव्य आया हो, दिया हो? जनता से वायदा करके भी आज तक सलमान रशदी द्वारा लिखित 'द सेटनिक वर्सिस' का हिन्दी रूपान्तर क्यों नहीं किया?

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने लिखा जहाँ मान्य न हो उस पर विद्वान जन आपस में बैठकर निर्णय लें। पर मैं इस काले लाल से जानना चाहता हूँ कि यह अधिकार अग्निवेश को किसने दिया? यह काम तो विद्वानों का है आपस में बैठने की बात है तो अग्निवेश कब और किस विद्वान को लेकर बैठे हैं?

मैं दावे के साथ कहता हूँ आज भी अगर अग्निवेश इस काम के लिए विद्वानों को बैठने हेतु निवेदन करें तो इन्द्रवेश व आचार्य हरिदेव को छोड़कर कोई नहीं दिखेंगे। ऋषि दयानन्द ने 150 वर्ष पहले सत्यार्थ प्रकाश में सह शिक्षा का विरोध किया अगर उसे अमल में लाते तो छात्र व छात्रा चरित्रवान होते। उस समय से अब तक चरित्रहनन ही हुआ है। क्या श्याम लाल को पता नहीं कि अग्निवेश सह शिक्षा में पले बड़े हुये और आज लाल वस्त्र धारण कर भी अपने को महिलाओं से अलग नहीं कर पाये? जिस वेब साइट की वकालत यह लाल बुझक्कड़ कर रहे हैं उसी में ही दिखाया गया अग्निवेश विदेशी महिला एक्टर्स के गले को या दामन को पकड़े खड़े हैं? अरे चुल्लू भर पानी में डूब मर जाना था। इससे कम से कम ऋषि दयानन्द जैसे योगी द्वारा स्थापित

आर्य समाज पर यह कलंक नहीं लगता।

इतना सब कुछ कर भी अपने को आर्य समाजी कहलाने में लज्जा नहीं आ रही है। जो कार्य हो रहा है शर्म को भी शर्म आ जावे।

पर मैं क्या कहूँ आप लोग खुद सोचें इस बात को, कि जो कुछ भी हुआ क्या यह संस्था की बदनामी नहीं थी? अग्निवेश का सारा प्लान फेल हो गया। कहीं भी सफलता हाथ नहीं लगी। आर्य लोगों याद रखना यह श्याम लाल वही है जो पहले कभी वधावंन जी के आगे पीछे घूमते थे, यह लोग दो रंगी हैं जो इनके नाम से ही मैंने सिद्ध किया है। काला+लाल = ऐसे लोगों से सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि यह लाल वस्त्रधारी को लिए फिर रहे हैं लाल बुझक्कड़ हैं।

मेरे द्वारा यह लेख अग्निवेश के पंजाब केसरी में दिये गये वक्तव्य के जवाब में है। अग्निवेश से आप यह भी स्पष्टीकरण लेना चाहेंगे कि आपके लेख और श्याम लाल जी के द्वारा लिखे गए लेख में से कौन सा अधिकृत है और मानने योग्य है? जबकि दोनों लेखों में विरोधाभास है।

आर्य समाज में वह आग लगी जिसमें धुंआ नहीं

*****

आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने अपनी संस्था का नामकरण तो बड़े चिन्तन, मनन व सूजबूझ के साथ किया था, क्योंकि उन दिनों लोग जानते ही नहीं थे कि आर्य कौन हैं ? और आर्य की परिभाषा क्या है ? ऋषि दयानन्द ने अपने प्रज्ञा चक्षु योग्य गुरु के चरण शरण में रहकर इन प्राचीन तथा वैदिक मर्यादा को जाना, फिर उसी ऋषि परम्परा को मानव मात्र के पास पहुंचाना अपना दायित्व व कर्त्तव्य को निभाने में, न मालूम कितना ही मुसीबतों का सामना किया और विपत्तियों को झेला था।

ऋषि के जीवनी को पढ़कर भी आर्य समाजी कहलाने वाले अपने जीवन में उसे उतारना तो दूर रही, ऋषि दयानन्द को धन्यवाद देकर भी राजी नहीं । और उल्टा ही दयानन्द की बनाई संस्था को बदनाम करने में, यहाँ तक कि उसे निगलने की ताक में बैठे हैं ।

गुरु विरजानन्द ने अपने शिष्य की कुशाग्रबुद्धि, ईश्वर आस्था, तप, लगन, तथा कुछ कर गुजरने की सोच को देख कर मानव समाज के उत्थान के लिए गुरूजी ने गुरूदक्षिणा में जिस जिम्मेदारी को सौंपी। शिष्य दयानन्द ने, निष्ठा व लगन के साथ उसे निभाते हुये, विश्वका कल्याण। संसार का उपकार, अपनी उन्नति को किनारे कर, सब की उन्नति को अपनी उन्नति माना। सच्चाई पर वल दे कर कहा-सत्यं वदिष्यामि=सत्य ही कहुंगा, यहां तक कि अपने ग्रन्थ का नाम सत्यार्थ प्रकाश रखा, और अपनी संस्था को यथा नाम, तथा गुण को भी चरितार्थ किया। अर्थात आर्य समाज के दस नियमों में भी पांच बार सत्य का ही उल्लेख किया है। इस से यह भी स्पष्ट हो गया, कि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द कितने सत्य प्रिय थे,

ऋषि दयानन्द अपने जीवन काल में महज सत्य वादिता के कारण किसी से भी समझौता नहीं किया, और सत्य पर ही अड़ें रहे और विजय प्राप्त

किया। अब वह सच्चाई आप मुम्बई के शास्त्रार्थ में देखें, काशी के शास्त्रार्थ में देखें, या फिर हरिद्वार में। पाखण्डियों को परास्त कर पाखण्ड खण्डनी पताका को देखें। यह सभी कार्य ऋषि ने सत्य के आधार पर ही किया था,

इसी सच्चाई को जन, जन, तक पहुंचाने के लिए देव दयानन्द ने अठारह घन्टे की समाधी को भी त्याग दिया था।

ऋषि दयानन्द को सत्य से अलग करने में राजा, महाराजाओं ने मिलकर भी प्रयास किया, यहां तक कि धन, दौलत, ज़मीन जायदाद देकर भी दयानन्द को सत्य से अलग होने को कहा, एक राजा ने तो यहां तक कहा स्वामी जी आप यह प्रचार करना छोड़ दें, मैं अपने राज पाठ का आधा आप के नाम कर देता हूँ।

वह त्याग के प्रति मूर्त्ति, निश्छल, निष्कपट, मानव मात्र का कल्याण चाहने वाला सन्यासी, एक राजा का ही कल्याण कैसे करता भला। दयानन्द ने स्पष्ट कहा, राजन आप के दिये गये सम्पत्ति को तो मैं सांस रोक कर पार कर जाऊंगा, किन्तु परमात्मा के राज्य को मैं पार कैसे करुंगा ? राजा ने फिर कहा महात्मन आप को इतना बड़ा दानी कोई मिलेगा ही नहीं, फिर वह तपो निष्ट, धर्मनिष्ट, तथा कर्मनिष्ट, वेदज्ञ ऋषि दयानन्द ने जवाब दिया, हे राजन, आप को इतना बड़ा त्यागी भी नहीं मिलेगा।

आर्य कहलाने वाले लोगों, दयानन्द के जीवन से मात्र इतनी ही शिक्षा लेते शायद आज आर्य समाज नामी संस्था बदनाम होने से बच जाती। न गुरुकुल की जमीन बिकती, न आर्य समाज के सम्पत्ति पर काबिज होते। न प्रान्तीय सभा पर कोई कब्जा करते, और न हाई कोर्ट को स्टे देना पड़ता। और न कहीं रजिस्ट्रार द्वारा चुनाव कराना होता, और न सार्वदेशिक सभा पर किसी का अवैध कब्जा होता। न आर्यो के धन को कोर्ट, कचहरी में गंवाना पड़ता और न झूठ का सहारा लेकर मुकदमा लड़ना होता । साथ-साथ मैं एक बात और भी याद दिलाना चाहूँगा। कि जो लोग आज आर्य समाज की सम्पत्ति पर दृष्टि लगाये बैठे हैं कम से कम अगर वह लोग ऋषि दयानन्द के जीवनी लिखने वाले श्री देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय से भी कुछ शिक्षा लेते। मेरे विचार से सभी आर्य समाज पर जो अनाधिकृत कब्जा जमाये बैठे हैं वह अपनों को

किनारे कर लेते, क्योंकि श्री देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय ने अपनी सम्पत्ति बेचकर ही ऋषि दयानन्द की जीवनी को लिखने की सामग्री जुटाई और भारत भर में ऋषि दयानन्द जहाँ-जहाँ गये वहाँ जाने का प्रयास किया।

आर्य कहलाने वालों आर्य समाज की सम्पत्ति पर कब्जा जमाने वालों तुम्हें चुल्लूभर पानी में डूब मरना था। अपने को आर्य समाजी, आर्य सन्यासी कहलाने में भी लज्जा नहीं आ रही है। अरे देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय न आर्य समाजी थे, न उनके परिवार में ऋषि दयानन्द का बोल बाला था। वह एक पौराणिक ब्राह्मण परिवार से सम्पर्क रखने वाले थे। पर हम कहें किनसे? क्योंकि कोई चौबे है, तो कोई अपने को छब्बे ही मान रहे हैं, वरना यह विवाद क्यों और कैसे होता?

आखिर यह लोग अधिकारी बन कर ही काम क्यों करना चाहते हैं? अवश्य इसके पीछे जो राज छुपा है। इससे कोई भी आर्य समाजी अनजान नहीं है, मैं भी ग्यारह वर्ष तक सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रचारक नियुक्त रह कर नजदीक से देखा, परखा और जाना भी। एक सिक्के के दो पहलू हैं, उठा पटक की राजनीति से यह लोग ग्रसित हैं।

इनमें से न कोई आर्य समाज का हित चाहने वाले हैं और न तो यह लोग ऋषि दयानन्द की विचारधारा को विश्व के आंगन में पंहुचाना चाहते हैं क्योंकि इन लोगों को पदों की लड़ाई से अवकाश ही कहां ? सही अर्थों में अगर यह लोग आर्य समाजी होते या आर्य संन्यासी होते तो ऋषि दयानन्द की जीवनी से शिक्षा लेते, दयानन्द के दिये विचारों पर अमल करते। जो विचार दयानन्द ने अपनी पुस्तक में दी है। आज कितना बड़ा झूठ का सहारा लेकर भी अग्निवेश अपने बयानबाजी से बाज नहीं आ रहे हैं, और कह रहे हैं कि हमारा पूरा जीवन दयानन्द के लिए है। जो सन्यास की दीक्षा लेकर भी पदों की लड़ाई लड़ रहे हों, भला उनका जीवन दयानन्द के लिए क्यों और कैसा हो सकता है?

एक बात ध्यान देने योग्य और भी है, कि अगर यह मान लें कि आर्यों की नेतृत्व में कमी हो रही है उसमें गति देने के लिए ही सभी झूठ का सहारा लिया गया। जैसे ऋषि दयानन्द भी लिखते हैं कि शंकराचार्य अगर जैनियों को

मात देने के लिए ही अहम ब्रह्मास्मि का सहारा लिया तो वह क्षम्य है।

मैं भी यही मानता हूँ कि अगर आर्यो में गति लाने के लिए अग्निवेश जी असत्य का सहारा लेना चाहा तो सभी प्रान्तीय सभा पर कब्जा करने की इच्छा क्यों हुई? जब सार्वदेशिक सभा अपने हाथ में हो तो दुनिया की सभी आर्य समाज तो अपने आप ही हाथ में आ गया। फिर प्रान्तीय सभा में झगड़ा कराने का प्रयास क्यों ? क्या आर्यो का काम झगड़ा समाप्त कराने का है या झगड़ा कराने का है?

यह सभी कार्य लोभ और लालच से ही तो किया गया, किन्तु जो दयानन्द राजा के सम्पत्ति को ठुकराया था, आज मात्र सम्पत्ति पर काबिज होने का प्रयास कर भी अपना जीवन दयानन्द के लिए है कह रहे हैं, बात ठीक ऐसी हो रही है कि जहाँ सत्य न चले वहां झूठ सही, जहाँ हक न चले वहां लूट सही। वाह रे सत्यानाशी दिल्ली प्रान्तीय सभा कभी दो नहीं हुआ था उसमें फूट डाल दिया भले फर्जी ही सही।

जब कोर्ट ने फर्जी अधिकारियों को मानने से इन्कार किया, फर्जी आर्यसन्देश पर प्रतिबन्ध लगा, सार्वदेशिक फर्जी पत्रिका पर प्रतिबन्ध लगा। हरियाणा प्रतिनिधि सभा पर काबिज नहीं हो पाये, छत्तीसगढ़ सभा हो, बंगाल सभा हो, दिल्ली सभा हो या उत्तर प्रदेश सभा हो जहाँ हाई कोर्ट ने स्टे दे दिया हो, छल-कपट से कहीं-कहीं लालच देकर अपने जैसे लालचियों से खर्च दिये बिना ही वाऊचर इकट्ठा करते भी जिन लोगों को लज्जा तक नहीं आती हो, भला उनका जीवन दयानन्द के लिए कैसे हो सकता है? यह आर्यो की समझ से बाहर है। जबकि दुनिया जानती है कि सत्य का जय, असत्य का नाश, धर्म का जय, अधर्म का नाश, यह शाश्वत है, जिसका यह सारा नमूना दिखाई दे रहा है। किन्तु हट और दुराग्रह से ऋषि दयानन्द के मिशन को कलंकित कर रहे हैं।

गुरुकुल कांगड़ी की जमीन बिक जाने पर भी तसल्ली नहीं है, अब बची सम्पत्ति पर काबिज होने पर आमादा हैं, चलो यह मान लेते हैं कि आर्य लोगों की आँख में धूल झोंकने का काम हो रहा है। परन्तु ईश्वर के आँख में धूल झोंकना सम्भव है क्या? और वह भी सन्यासी हो कर?

ऋषि दयानन्द के बनाए शिष्य, मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बनकर अपनी कार्यशैली से राजा अमन सिंह को प्रभावित कर गुरुकुल कांगड़ी बनवाई थी। अर्थात् राजा ने तो जमीन दिया ही था, परन्तु अपना मकान दोनों पुत्रों को दान देकर उसे बेचकर गुरुकुल कांगड़ी में लगाया था। आज वही जमीन बेचकर लोग अपना जेब गरम कर रहे हैं, कितनी लज्जा की बात है।

इतना सब कुछ कर भी अपने को आर्य सन्यासी, आर्य अधिकारी मान रहे हैं अपने को। दयानन्द के अनुयायी कहलाने में भी संकोच नहीं करते, पर करें तो क्या? क्योंकि परमात्मा का खौफ जिन लोगों के दिल में न हो, तो व्यक्ति विशेष से या लोक लाज से इन्हें क्या डरना?

अग्निवेश के बयान में, कितना झूठ, कितना सत्य

*****

अभी दिनांक 11 जुलाई 2005 के सोमवार्ता पृष्ठ 4 पर धर्म-कर्म के अन्तिम में **स्वामी अग्निवेश** द्वारा दिए गए विचार को अन्तिम कॉलम में पढ़ने का अवसर मिला। यद्यपि इससे पूर्व मेरे पास 7 लोगों के दूरभाषवार्ता से सूचना मिली और लोगों ने मुझसे जानकारी लेनी चाही कि पंडित जी क्या **अग्निवेश** जो लिख रहे हैं वह सत्य है?

इस पूरे लेख को पढ़ने के बाद मैंने सोचा इस कथन को झूठ और सत्य की पैमाइश के लिए आर्य जनता को तराजू के रूप में प्रस्तुत करना ही उपयुक्त होगा। इस जुलाई के प्रथम में ***"अग्निवेश डॉट कॉम में आखिर क्या है?"*** शीर्षक से अपने विचारों को जनता जनार्दनों के सामने मैंने पहुँचा दिया था। साथ ही उन समूचे लेखों को **स्वामी अग्निवेश डॉट कॉम** में भी डाला था। सार्वदेशिक काण्ड के बाद अब तक जितने भी लेख मेरे निकले है। उन सभी लेखों को **स्वामी अग्निवेश डॉट कॉम** में शास्त्रार्थ की चुनौती देता हुआ भेजता आया हूँ। **स्वामी अग्निवेश** की ओर से अब तक मेरे ई-मेल आईडी पर न तो कोई जबाब आया और ना ही मेरी दी गई चुनौती को स्वीकार किया गया।

इस 11 जुलाई 2005 के अंक, पंजाब केसरी में **अग्निवेश** के विचारों को पढ़कर, इनके बयान में कितना झूठ कितना सच है। उसी की ही पड़ताल मैं आर्य जनता को तराजू मानकर तौलते हुये सही-सही नाप देना अपना कर्तव्य मानते हुये, ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास कर रहा हूँ। शायद आर्य जनता को याद हो पिछले 28 फरवरी 2005 में सार्वदेशिक सभा पर **अग्निवेश** ने कब्जा किया और सोनिया को यही समझाया कि सार्वदेशिक में बैठे हुये लोग **आर.एस.एस.** के एजेन्ट हैं तथा भाजपा के लोग हैं।

ये लोग इस मुल्क को हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते हैं, इन लोगों के हाथ से इस सभा को छीनने में आपका सहयोग हमे चाहिये। अब मैं आर्य जनता से छोटी सी प्रश्न का समाधान चाहता हूँ कि जो अग्निवेश **आर.एस.एस.** व भाजपा के विरोधी हैं। अपनी वेबसाइट के उद्घाटन में अरूण जेटली जैसे भाजपा नेता को बुलाकर अपने वेबसाइट का उद्घाटन क्यों और कैसे किया?

या तो यही प्रश्न मैं **अग्निवेश** से ही करना चाहता हूँ, क्या **अग्निवेश** इसके जबाब देने में समर्थ हैं? दूसरा प्रश्न अग्निवेश से यह है कि जिस कम्पनी को आपने 5 साल पहले 36 हजार रूपये देकर **अग्निवेश वेबसाइट** खुलवाया था। और उस कम्पनी ने आपके विचारों को हटाकर अपने मनमाने ढंग से वैदिक सिद्धान्त व आर्य समाज की मान्यता के विरूद्ध आपकी वेबसाइट में डाल दिया। क्या उसकी सफाई देने में आपको 5 वर्ष लग गये? क्या आपने इन 5 वर्षों में अपनी वेबसाइट को एक बार खोला तक भी नहीं? क्या आप जो लिख रहे हैं वो सही है या मैं जो तथ्य दे रहा हूँ, वो सही है?

धरती पर विचरण करने वाले मानव जब 6 रूपये में बाजार से एक मटका खरीदता है, तो बीस बार उसे बजाकर देखता है। तो आपने 36 हजार रूपये में अपना वेबसाइट खोला, तो कम्पनी ने उसमें विचार क्या दिया? उसे देखने की हिम्मत आप में क्यों नहीं हुई? अगर उसने आपके दिये गये विचारों को बदला है, तो आज तक इन पाँच वर्षो में आपने कोई कार्यवाही क्यों नहीं की? क्या इसका जबाब आर्य जनता को देने में आपकी सामर्थ्यता है? लाल वस्त्र पहनकर भी झूठी बातों का प्रतिपादन अखबार के माध्यम से कर रहे हैं, आर्य जनता को मूर्ख बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

शायद आपको पता ही नहीं कि झूठ बोलने के लिए भी कला चाहिए, और वह कला आप में नहीं है, क्योंकि आपकी कलाकारी को विचारशील आर्य जनता पहचान चुकी है। क्योंकि इस भावुक आर्य जनता को आपने एक बार नहीं अपितु कई बार धोखा दिया है। यहाँ तक की आपने आर्य राष्ट्र बनाने के नाम से आर्य लोगों का वोट बटोरकर राजसत्ता का भोग किया। अवसर पाते ही सिद्धान्त को तिलान्जलि देकर अन्य पार्टी में घुस गये। आप जैसे दलबदलु सिद्धान्त विहीन आचरण वालो से आर्य जनता का विश्वास उठ गया है। आर्य

लोग यह जान गये कि आप बयान बदलने मे या मन्तव्य बदलने में तनिक भी देर नहीं लगाते, क्योंकि आप लौकेष्णा से ओत-प्रोत हैं।

रही बात आपके **पंजाब केसरी** के वक्तव्य की, **"मेरा पूरा जीवन स्वामी दयानन्द को समर्पित"** ईमानदारी से बताये समग्र आर्य जगत में अस्थिरता, वैमनस्यता, ईर्ष्या-द्वेष को फैलाना छोड़कर दयानन्द का आपने कौन सा काम किया है? क्या नाथ द्वारा मन्दिर में हरिजनों को ले जाने का काम दयानन्द का था? या हरिजनों को पंडित बनाकर आर्य समाज के धर्माचार्य बनाने का था? क्या दयानन्द का काम शबाना आज़मी जैसे फिल्म-तारिका को अपने साथ लिए घूमना? या विदेशी अभिनेत्री महिला के गले में हाथ डालकर फोटो खिचवाने का काम? अभी भी दयानन्द को बदनाम करने में आपको लज्जा नहीं आ रही है। जो दयानन्द एक वृद्धा महिला के चरण छूकर नमस्ते करने पर सीने तक पानी में उतर कर प्रायश्चित करते हैं, उसी दयानन्द के लिए अपना जीवन समर्पित करने की बात कर रहे है, फिल्म-तारिका को साथ लिए फिरकर क्या इसमें **दयानन्द** की तौहीनी नहीं है?

रही बात आपके डॉट कॉम की जिस डॉट कॉम के विरोध में आप कह रहे हैं, उसी डॉट कॉम से आपके मन्तव्यों का प्रचार आपके साथी श्यामलाल कर रहे हैं, आप दोनों में से कौन सही है, कौन सत्य है?

आप लोगों द्वारा प्रकाशित नकली आर्य संदेश 30 मई से 5 जून 2005 के पृष्ठ संख्या 2 पर श्यामलाल के लेख में जिसका शीर्षक **"स्वामी अग्निवेश की वेबसाइट-प्राक्कथन"** में और आपके पंजाब केसरी में दिये गये विचारों में विरोधाभास क्यों है? क्या आप जो कह रहे है वो सत्य है, या श्यामलाल जो लिख रहे है वो सही है? श्यामलाल ने साफ लिखा। अतः **स्वामी अग्निवेश जी** को भी किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह स्वतन्त्र चिन्तन, स्वतन्त्र विचार, अभिव्यक्ति तथा स्वतन्त्र सम्मति रखने का अधिकार मिलना ही चाहिए।

श्यामलाल के इस लेख से स्पष्ट हुआ आपका चिन्तन, सम्मति, स्वतंत्रता का अधिकार जो आप आर्य जनता से लेने की माँग कर रहे हैं, अगर आपका

जीवन दयानन्द के लिए समर्पित है उससे हटकर फिर अपना विचार स्वतंत्र क्यों रखना चाहते है?

आपके विचारों की स्वतंत्रता को श्यामलाल ने उजागर भी किया है । जैसा स्त्रियों की पाठशाला में पाँच वर्ष का लड़का और पुरूषों की पाठशाला में पाँच वर्ष की लड़की भी न जावें। यह विचार **दयानन्द** ने **सत्यार्थ प्रकाश** के दूसरे समुल्लास में दिया है, आपके मन्तव्य श्यामलाल द्वारा लिखित आपके वेबसाइट से ही दिया है।

पाठक साहस करके बताये कि क्या वे **दयानन्द** की इस स्थापना से आज के परिप्रेक्ष्य में सहमत है? किसी भी गुरूकुल के सचालक बतायें कि क्या उनके यहाँ इस आदेश का पालन हो रहा है? नहीं ना ! फिर फालतू का पाखण्ड दिखावा क्यों?

क्या **स्वामी अग्निवेश** आप यह बताने का साहस रखते हैं? क्या आपकी वेबसाइट का हवाला देकर श्यामलाल ने जो लिखा है वो झूठ है? या पंजाब केसरी में आपका प्रकाशित वक्तव्य झूठ है? आपका जीवन अगर **दयानन्द** के लिए समर्पित है, फिर जिस **दयानन्द** ने सह-शिक्षा का विरोध किया उसका समर्थन करते हुये आप अभी भी आर्य जनता को बरगलाना चाहते हैं? पर याद रखना आज आप जितनी भी सफाई क्यों न दें, आपके पग-पग में छल-कपट, पद लोलुपता को आर्य जनता बहुत करीब से देख चुकी है, इसीलिए तो समग्र आर्य जगत आपका विरोध कर रहा है। आप जितनी भी सफाई क्यों न दें, उसमें सच्चाई की गंध तक नहीं है।

आपके वैदिक सिद्धान्त विरूद्ध विचारों को जो लोग आर्य जनता के सामने उजागर कर रहे हैं, उन्हें आप आर.एस.एस. के धर्मान्ध, आर्य विरोधी, कायर, दुष्प्रचारक कह रहे हैं, अगर यह लोग **आर.एस.एस.** के हैं, तो अरूण जेटली द्वारा आपकी वेबसाइट का उद्घाटन क्यों हुआ? अगर यह लोग कायर हैं, तो फिर आपके द्वारा झूठ का सहारा लेकर राजनेताओं को भड़काते हुये पुलिस का सहारा लेना कौन सा बहादुरी का काम था? आपने स्वयं अपने लेख में स्वीकार किया है आपसे गलती हुई है, उसके सुधार में

आर्य जनता के सहयोग की माँग आपने की है। अत: अपनी गलती का सुधार चाहते हैं, आर्य जनता का सहयोग चाहते हैं। तो समग्र आर्य जनता से माफी मांगे। अपनी गलती का प्रायश्चित करें और अविलम्ब आर्य लोगों की शिरोमणि-सभा सार्वदेशिक को आर्य जनता के हाथों में सौंप दें। और अगर इस काम में आपकी रूचि नहीं तो आप भी झूठे, आपका बयान भी झूठा। अगर दयानन्द के अनुयायी होते तो इन पद लोलुपता व लौकेष्णा को छोड़ देते ना कि ईसाई और मुसलमानों के पक्ष में लिखकर वक्तव्य देकर दयानन्द के विचारों का अपमान करते ?

अब टंकारा भी राजघाट बनने की कगार पर

*****

टंकारा का नाम सुनते ही प्रत्येक आर्य जनों के दिल और दिमाग में ऋषिवर देव दयानन्द का चित्र तथा उनके द्वारा प्रतिपादित विचारों पर ध्यान चला जाना स्वाभाविक है। क्योंकि ऋषि के जो विचार हैं वह अन्य महापुरूषों से भिन्न हैं, और वह भिन्नता किसी ऐषणा वश नहीं, मात्र सत्य के आधार पर क्योंकि, अन्य लोगों ने सत्य को जानने का प्रयास नहीं किया, उसे अपनाना तो दूर रही ।

जैसा महात्मा बुद्ध ने देखा गाय को मार कर, बकरे को मार कर, घोड़ो को मार कर, मानवों को मारकर अग्नि में आहुति देते, जब उन्होंने पूछा कि यह विधि कहां है? लोगों ने जवाब दिया यह वेद का आदेश है, सुनते ही बुद्ध ने कहा मैं ऐसे आदेंशों को या वेद को नहीं मानता। किन्तु चाहिये था इस सच्चाई को जानना कि सही में यह आदेश वेद में है या नही उसकी तहकीकात करना आदि। सत्य को जानने के बजाय सत्य से मुह मोड़ना, यह कौन सी बुद्धिमानी थी?

अब ऋषि दयानन्द के सच्चाई को देखें, लोगों ने वेद को गडरियों का गीत कहा, ऋषि ने सच्चाई को जानने हेतु जर्मनी से वेद को मंगवाया, तथा वेद मन्त्रें का लोगों ने जो मनमानी अर्थ किया था, उसे सही यौगिक अर्थ करते हुये मानव समाज पर या आर्य जनों का बहुत बड़ा उपकार किया, जो कार्य अन्य किसी भी महापुरूषों से नहीं हो पाया था।

यही कारण था ऋषि अरविन्द घोष को कहना पड़ा कि भारत में जितने भी महापुरूषों का जन्म हुआ, सभी महापुरूषों को मैं पहाड़ों की चोटी मानता हूँ, लेकिन सब से ऊँची चोटी मैं ऋषि दयानन्द को मानता हूँ।

क्योंकि ऋषि दयानन्द के जो विचार हैं, वह उनकी निजी या अपनी नहीं अपितु ऋषि, मुनियों के विचारों का उन्होंने प्रतिपादन किया, और स्पष्ट लिखा

'मैं अपना मनतव्य उसी को मानता हूं जो तीनों काल में सब को एक सा मानने योग्य है, मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उस को छोड़ना छुड़वाना मुझको अभिष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यवर्त्त में प्रचारित मतों मे से किसी एकमत का आग्रही होता। किन्तु जो-जो आर्य वर्त्त वा अन्य देशों में अधर्म युक्त चाल चलन है उसको स्वीकार नहीं करता। जो धर्म युक्त बातें है उनका त्याग नहीं करता, न करवाना चाहता हूँ क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से वहि: है।

मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर स्वात्मवत अन्यों के सु:ख दु:ख और हानि लाभ को समझें। अन्यायकारी बलवान से न डरें, और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ से ध र्मात्मा की रक्षा करें। चाहे वह महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों नहीं। उसकी उन्नति प्रियाचरण करें। अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। अर्थात् जहा तक हो सके धर्मात्मा की रक्षा और अधर्म की हानि सर्वदा किया करें, इस काम में चाहे कितना ही दु:ख दारूण कष्ट सहना पड़े चाहे प्राण भी जावे इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न होवे । टंकारा यात्रा करने तथा कराने वाले, ऋषि दयानन्द जिन विचार धारा से सहमत नहीं थे, और उसी अध र्म युक्त विचार वालों को लेकर उस ऋषि की जन्मस्थली टंकारा पहुँचने में जरा सा भी लज्जित नहीं हुये?

कहीं ऋषि दयानन्द के जन्मस्थली को राजघाट बनाने की योजना तो नहीं ? कि कुरान के मानने वाले कुरान का पाठ करने लगे, बाईबिल के मानने वाले भी अपना पाठ करे, फिर गुरूग्रन्थ वाले भी, और गीता तथा रामायण, त्रिपिटक, जिन्दा विस्ता आदि का पाठ भी होने लगे?

न मालुम ऋषि की बनाई गई इस आर्य समाज में किस शैतान की नजर लगी ? कि ऋषि ने प्राणों की बाजी तक लगा कर मतमतान्तरों में लिप्त न होने को लिखा और आज वही मत् मतान्तर वालों को साथ लिए ऋषि दयानन्द के विचारों का गला घोट कर भी लोग अपने को दयानन्दी होने का

दम भर रहे हैं ? मात्र ऋषि दयानन्द के एक वाक्य पर अमल करते तो समस्त पाखण्ड से अलग हो कर दिखावा छोड़ कर दयानन्द ने वेद प्रचार के माध्यम से आर्य जनों को धर्म-व अधर्म के बारे में जो जानकारी दी है, उसके प्रचार में संलग्न होते न कि वेद विरूद्ध आचरण वालों को साथ लेकर घूमते। ऋषि दयानन्द ईश्वर के सन्दर्भ में लिखते हैं, जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम है, जो सच्चिदानन्द लक्षण युक्त हैं, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता सब जीवों को कर्मानुसार सत्य, न्याय, फलदाता आदि लक्षणयुक्त हैं उसी को परमेश्वर मानता हूँ।

टंकारा को राजघाट बनाने वाले जरा ध्यान से दयानन्द के स्वमनतव्य को पढ़े और सर्व धर्म शब्द को अपने दिमाग से हटा दें। दयानन्द ने ईश्वर के बारे में जो विचार दिये हैं उसे कुरान, पुराण व बाईबिल के मानने वाले जानते ही नहीं । जैसे ईश्वर सर्वव्यापक बताया ऋषि ने, पर कुरान के मानने वाले तथा पुराण व बाईबिल के मानने वाले इसे मान लें तो अल्लाह-गोड-तथा राम को भी नरक में मानना पड़ेगा। क्योंकि सर्वव्यापक का अर्थ ही है हर जगह तो अल्लाह का जहन्नुम में होना कैसे सम्भव है? ऋषि ने आगे लिखा जो सर्वज्ञ, अब देखें कुरान व बाईबिल का अल्लाह सर्वज्ञ नहीं। अल्लाह अगर सर्वज्ञ होते फिर प्रत्येक जमात ए इस्लामी हिन्द वाले हों या अरब का जमात वाला हो तथा ईरान व पाकिस्तान का जमात वाला हो सब मुसलमानों के कन्धों पर दो फरिश्ता किराबीन व कातेबीन नामी दो फरिश्ते को नेकी व बदी लिखने को नियुक्त न करते। और न नकीर व मुनाकिर नामी दो फरिश्ते को भेजना पड़ता। नामा ए अमाल कापी लेकर कब्र में मूर्दों से पूछने। मात्र इतना ही नहीं शराब पीने पर नशा होता है इतनी सी बातों को भी जमात ए इस्लामी वालों के अल्लाह को पता नहीं। अगर पता होता शराब प्रथम से हराम होता, किन्तु शराब पीकर एक सहाबी जब नमाज पढ़ाते समय कुरान को बेतरतीब पढ़ने लगे फिर अल्लाह को पता लगा और कहा जब नशे की हालात में रहो तो नमाज के करीब न जावो। ला तकरबुस्सलात व अनतुम सुकारा - (कुरान) फिर अल्लाह की सर्वज्ञता कहां रही? और देखे वैदिक मान्यता को छोड़ किसी का अल्लाह

सर्वशक्तिमान भी नहीं, क्योंकि ऋषि दयानन्द को छोड़ जितने भी मत पंथ वाले हैं उनकी मान्यता ईश्वर जो चाहता है सो करता है। कारण वह सर्वशक्तिमान हैं, अल्लाह ने कहा-माशा अल्लाहो काना लम यशाओं लम याकुन (कुरान) अर्थात् अल्लाह जो चाहता है, होता है, जो नहीं चाहता वह नहीं होता। फिर अल्लाह ने कहा आगे-इन्नाल्लाहायर जुकू मई यशाओ वेगैरे हिसाब। कुरान-सुरा बकर-अर्थात् अल्लाह जिसको चाहते बे हिसाब रोजी देते हैं। यानी कुरान का अल्लाह मनमानी, जिसे मर्जी रोजी दे कर अपनी शक्ति को दर्शाते हैं। इस से और भी पता चला कुरान का अल्लाह न्यायकारी भी नहीं। क्योंकि मनमानी रोजी देना भी अन्याय है, दयानन्द ने साफ लिखा कि कर्मानुसार सत्य, न्याय से फल देने वाले को मैं ईश्वर मानता हूँ।

कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ टंकारा पहुंचने वालो जरा दयानन्द के विचारों के साथ जमात ए इस्लामी हिन्द वालों से भी तो पूँछते कि क्या आप लोग दयानन्द के इन विचारों से सहमत हैं? अगर नहीं फिर उस टंकारा में आप का क्या काम? ऋषि दयानन्द फिर लिखते हैं - चारों वेदो (विद्या धर्मयुक्त ईश्वर प्रणीत संहिता को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप के स्वतः प्रकाशक और पृथिवी आदि के भी प्रकाशक होते हैं, वैसे चारो वेद हैं। और चारों वेदों के ब्रह्माण छः अंग छः उपांग, चार उपवेद और 1127 वेदों की शाखा, जो कि वेदो के व्याखान रूप ब्रह्मादि महर्षियों के बनाये ग्रन्थ हैं, उनको प्रतः प्रमाण अर्थात वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण और जो इनमें वेद विरूद्ध वचन है उनको अप्रमाण मानता हूं।

ओ ऋषि दयानन्द को बदनाम करने वाले लोगों, क्या जमात ए इस्लामी हिन्द के सचिव व महासचिव रफीक कासमी हो या फिर महमूद असद मदानी हो, क्या वह लोग वेद को ईश्वरीय ग्रन्थ मानने को तैयार हैं? या फिर भिन्न सेन्ट एम. कनसेसाब जैसे पादरी दिल्ली के आर्च बिशप वेद को ईश्वरीय ग्रन्थ मानते हैं? फिर यह नाटक क्यों? क्या इस से हम ऋषि दयानन्द के विचारों को औरों तक पहुंचा रहे हैं? या तो अन्यों के विचारों को दयानन्द के विचारों पर थोपना चाहते हैं?

जब वेद को मानने के लिए तैयार नहीं फिर दयानन्द के जन्मस्थली में, या दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज में उनका क्या काम? अगले 15 नवम्बर को जलियां वाला बाग में लाल मिट्टी से अपने मस्तक पर तिलक करेंगे, दयानन्द के सपनों को साकार करेंगे आर्य नीति में लिखा। क्या इन प्रचारकों के साथी जमात ए इस्लामी हिन्द के लोगों को भी तिलक करा सकते हैं? फिर यह मिथ्या प्रचार क्यों? क्या दिल्ली के आर्च विशप को बता सकते हैं, कि जलियां वाला बाग में हम भारतवासी पर कितना अत्याचार किया था? उसके पादरी महोदय से क्षमा याचना या फिर पश्चाताप को कह सकते हैं? फिर उन शहीदों के साथ यह धोखा क्यों? क्या उन शहीदों की आत्माओं को कुरान व बाईबिल सुनायेंगे? जिन लोगों ने गीता का श्लोक नैनं छिंन्दती कहकर बलिदान हुये थे? क्या उन शहीद स्थल को भी राजघाट बनाने की परिकल्पना है?

यह फरियाद मैं किससे करूं?

*****

अभी 21 अक्टूबर 2005 का अंक आर्य नीति को देखने का अवसर मिला, जिस के मुख्य पृष्ट पर बड़े अक्षरों में कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध अभूत पूर्व जन चेतना यात्रा, लिखा है। पलटते ही देखा मोटे अक्षरों में क्रान्तिकारी आर्य नर नारी से आग्रह किया महर्षि निर्वाण दिवस कैसे मनायें? फिर लिखा 1 नवम्बर से टंकारा से अमृत सर तक कन्या भ्रूण हत्या एवं नारी उत्पीड़न के विरूद्ध 15 दिवसीय जन चेतना द्वारा, लेखक सत्यव्रत सामवेदी जी हैं।

लेखक की फरियाद, क्रान्तिकारी नर-नारी से है, पर मैं अपनी फरियाद समग्र वैदिक धर्मियों से करना चाहता हूं, मैं अपनी फरियाद वैदिक धर्मियों से इसीलिए करना चाहता हूं कि वैदिक धर्म को लोग भूल चुके थे। या फिर ईसाई व मुसलमानों के अत्याचार से लोग वैदिक धार्म को छोड़ ईसाई, व मुसलमान बनने को बाध्य हो रहे थे। ठीक इसी समय गुजरात प्रान्त के टंकारा से वैदिक धर्म का डंका बजाते हुये दिग्विजयी, ईसाई व मुसलमानों को परास्त कर पाखण्ड का भण्डा फोड़ वह अखण्ड ब्रह्मचारी वेदज्ञ, व्याकरण का सूर्य ऋषि दयानन्द ने ही किया था। और जो लोग वैदिक धर्म को छोड़ चुके थे, उन्हें भी पुनः अपने धर्म में वापस लौटाये थे।

वैदिक धर्म के मानने वाले आर्य लोगों, एक समय तो वह था जब टंकारा में जन्में ऋषि ने मानव मात्र का धर्म एक है कहते हुए कहा था -

धाारणाद धर्म इत्याहुधर्मो धारयते प्रजाः।
यत् स्याद् धारणासंयुक्त सं धर्म इति निश्चयः।।

अर्थात् जो सबका धारण करने वाला हो, जिससे सबकी उन्नति हो जो सबसे प्रेम, जहाँ वैर विरोध न हो समस्त मानव मात्र का मान्य हो उसे ही धर्म कहते हैं। तथा यतो अभ्युदयनिः श्रेयस सिद्धि स धर्मः जिससे संसार की उन्नति हो। मुक्ति अथवा हमेशा एक जैसा रहने वाले आनन्द की प्राप्ति हो वह धर्म है, बताया था। और आज उसी टंकारा में अपने को आर्य कहला कर भी उन लोगों को साथ ले जाया जा रहा है। जो ऋषि दयानन्द के शास्वत विचारों

को नहीं मानते। इस आर्य नीति को पढ़कर कई प्रश्न सामने उपस्थित हो गये। जैसा कि प्रथम वाक्य ही छल और कपट से भरा है अर्थात् अभूत पूर्व जन चेतना लिखा जो कि इस कार्यक्रम के एक सप्ताह पहले ही भविष्यवाणी की गई पर करें क्या, इन बेचारों को अपने कार्य में भरोसा नहीं। मात्र प्रपोगण्डा से ही काम चला है। क्योंकि पिछले दिनों में ताल कटोरा स्टेडियम में ही यही किया गया था। कुर्सी भरी ही नहीं थी और यही आर्य नीति पत्रिका में कई लाख की उपस्थिति लिखी थी और उसमें भी स्वामी ओमवेश निजी तौर से किराये पर दो-तीन गाड़ी भर लोगों को लेकर आये थे। यह बेचारे हैं तो सत्यव्रत लेकिन असत्य के पक्ष घर हैं।

मैं आर्य जनों को यह याद दिलाना चाह रहा था कि ऋषि दयानन्द ने मानव मात्र का एक धर्म बताया मानव मात्र को एक वैदिक धर्म रूपी धागे में पिरोने का प्रयास किया। कोई वर्ग विशेष या प्रांत विशेष या फिर जाति विशेष का धर्म अलग नहीं है डंके के चोट से कहा और आज उसी टंकारा में अधर्म के खिलाफ प्रचार करने के बजाए कन्या भ्रूण हत्या का विरोध जताने उन लोगों को साथ लिए जा रहे हैं, जो मानव मात्र का धर्म अलग-अलग मानते हैं।

धरती पर आने वाले एक ही आवाज या स्वर लेकर आये जन्म लेकर कोई अल्लाह नहीं, गोड नही, राम नहीं वाहे गुरू नहीं, जब सभी ने एक ही आवाज निकाली, फिर यह धर्म अलग-अलग, क्यों और कैसे?

जिस जमात ए इस्लामी हिन्द के सचिव व महासचिव को दावत दिया गया, वह लोग इस सच्चाई को स्वीकारते हैं? कोई मुसलमान या ईसाई अगर इस सत्य को स्वीकार करते ? आर्य लोगों अभी उ.प्र. के मऊ जिले में झगड़ा क्यों हुआ? मऊ में जो साम्प्रदायिक दंगा हुआ वहां कौन से इस्लामिक संगठन के अधिकारी ने जाकर उन इस्लामिक दंगाईयों को रोका? अगर जा कर नहीं रोका तो किसी भी मौलाना का वक्तव्य आया? कि दुनिया में फसाद फैलाने वालों को अल्लाह पसन्द नहीं करते? फिर आप लोग मुसलमान होकर भी फसाद क्यों कर रहे हैं? दूरदर्शन में हमेशा आने वाले मौलाना वाहिद उद्दीन कासमी का या और किसी का कोई बयान क्यों नहीं आया। और न ही

अग्निवेश जत्था लेकर हिन्दू मुसलमानों को समझाने गये कि यह मानवता विरोधी काम आप लोग क्यों कर रहे हैं? और न ही अग्निवेश के साथ घूमने वाली शबाना आजमी वहां गई इस झगड़ो को रोकने के लिये। जबकि वह हैं भी उसी आजमगढ़ की। अगर कन्या भ्रूण हत्या मानवता विरोधी है तो क्या साम्प्रदायिक झगड़ा मानवता विरोधी नहीं? फिर वहां आन्दोलन क्यों नहीं करते?

आर्य लोगों जरा धीर मस्तिष्क से विचार करें कि यह भ्रूण हत्या आन्दोलन दिखावा तो नहीं ?

जब असत्य व अधर्म के खिलाफ ऋषि दयानन्द का आन्दोलन था उसे हम सीमित दायरे में क्यों लाना चाहते हैं? प्रत्येक स्थान पर सच्चाई को उजागर करना चाहिये।

आज 27.10.2005 को इरान के राष्ट्र अध्यक्ष ने कहा इज्राईल का नक्शा विश्व से समाप्त कर देना चाहिये। क्या इसका विरोध किसी भी इस्लामिक संगठन ने किया है? या फिर अग्निवेश हो या अग्निवेश का कोई चेला व चेली ने विरोध किया?

आर्य लोगों यह मरिचिका को पानी न समझें, आप लोग ऋषि दयानन्द के विचारों को भली भांति समझ कर उस पर अमल कर ऋषि ऋण को चुकाने का प्रयास करें।

मैंने तो पहले भी देखा बाबा आम्टे के साथ भारत जोड़ो आन्दोलन का प्रचार करते समय शाहबुद्दिन को अग्निवेश भारतीयता का पाठ नहीं पढ़ा सके। पिछले दिनों दिल्ली के रामलीला मैदान में जब इमाम बुखारी अपने को आई. एस. आई. का एजेन्ट कह कर लोक सभा की ओर मारो मारो चिल्ला रहे थे-उसके विरोध में अग्निवेश का आन्दोलन क्यों नहीं चला?

एक सच्चाई मैं आर्य लोगों को उसी आर्य नीति में लिखे गये जमाते इस्लामी के सचिव रफीक कासमी के लेख का दे रहा हूँ, पाठक गण ध्यान से शब्द को पढ़ें। इस्लामिक सिद्धान्तानुसार कन्या भ्रूण हत्या जघन्य पाप है। जो पवित्र कुरान में कहा गया कि परलोक में ऐसे माता-पिता के बारे में जिन्दा गाड़ी गई लड़कियों से पूछा जायगा तुम्हें किस अपराध के कारण मार दिया गया?

यह फरियाद मैं वैदिक धर्म के मानने वालों से करूं कि उस लड़की के मारने में दोषी कौन? लड़की के माता-पिता या मरने वाली लड़की? वैदिक मान्यतानुसार जवाब है तीनों दोषी। क्योंकि अवश्यमेव भोकतव्य कृतं कर्मम शुभा शुभम्, अर्थात अवश्य भोगना है किये कर्मों का फल शुभ अशुभ। किन्तु कुरान के अल्लाह उस लड़की से पूछेंगे, तुम्हें किस अपराध के कारण मारागया? इस्लाम की मान्यता यही है, जो वैदिक मानयता से अलग है, अगर लोकाचार को भीं देखें, तो उस लड़की से न पूछ कर उसके माता पिता से पूछना था कि तुमने इस लड़की को वयों मारा? पर कुरान का विधान ऐसा नहीं है।

मैं और प्रमाण दे रहा हूँ, कुरान का कहना है इन्नालमाह यर जुकु मईयशाओ वेगैरे हिसाब-सुरा बकर = अर्थ-अल्लाह जिसको चाहते बेहिसाब रोजी देते हैं। यानी कुरान का अल्लाह कर्मों के हिसाब से रोजी नहीं देते, अपितु जिस को चाहते बेहिसाब देते, इस्लाम इसी पर ही अकीदा रखता है।

एक मां के पेट से अंधा है वैदिक धर्मी उसे कर्मफल मानता है, पर इस्लाम वालों का कहना है अल्लाह ने उसकी आँख छीन ली या नहीं दी, किन्तु उसे उसका कर्मफल नहीं मानता।

अब आप आर्यजनों को निर्णय लेना है कि ऋषि के जन्मस्थली में जाने हेतु किन लोगों से सहमति ली जा रही है? वैदिक सिद्धान्त में और इस्लाम में हजारों सिद्धान्तिक मतभेद हैं। इसी मतभेद के कारण आर्य समाज ने जन्मकाल से इस्लाम व ईसाईयों तथा पौराणिकों से शास्त्रार्थ किया और शास्त्रार्थ में इस्लाम ने मात खाई। आर्य समाज का जादू सब पर चला और सत्य की ही विजय होती रही। परन्तु आज उसी सच्चाई को अंधकार के साथ विलय कर कुछ अनार्य नीति को लागू करना चाहते हैं आर्य जनों पर।

आर्य लोगों टंकारा वाले ऋषि ने तो इस्लाम को धर्म नहीं माना और आज उसी टंकारा में आर्य समाज के बैनर के साथ इस्लाम भी एक धर्म है जो जमात-ए-इस्लामी-हिन्द के नाम से बैनर भी घूमता रहेगा। कितनी शर्म की बात है। एक बात ध्यान देने योग्य और भी है कि जिस गुजरात प्रान्त को अब गुजरात सरकार के माध्यम से गौ वध पर पूरा प्रतिबन्ध लगा है, और यह लोग दिल्ली से ही गाय का खून पिलाकर जमात ए इस्लामी वालों को गुजरात

पहुँचा रहे हैं। आर्य लोगों कहीं आप को मुँह छुपाने की जगह है?

आर्य लोगों एक आश्चर्य की बात और भी है कि जिन जमात ए इस्लामी के सचिव तथा महासचिव के पत्र आर्य नीति में छपे हैं, उसमें अभिवादन आदाब लिखा है। यह शब्द अरबी का है जिसका अर्थ है आईन-या ढंग = देखें जिन्होंने नमस्ते का उच्चारण इस्लाम में शिर्क है उस पर पूरा अमल किया। अगर इस्लामी तरीके को अपनाया जाये तो फिर अस्सालमु अलई कुम लिखंता, किन्तु किसी गैर मुस्लिम काफिर को यह शब्द कहना भी मना है, अत: उसे भी ध्यान रखा गया।

एक पते की बात मैं और भी बता दूँ अगर कोई गैर मुस्लिम किसी मुसलमान को सलाम करे अस्सालामु अलई कुम कहे, तो उसके जवाब में वह वअलई कुमुस्सलाम नहीं कहा जायेगा। वह बेदीन होने हेतु जवाब में हदाकल्लाह- अर्थात अल्लाह आपको हिदायत दे कहना पड़ेगा। क्योंकि इस्लाम की दृष्टि में वह गुमराह हैं। अपना जैसा मानने की विधि नहीं, किन्तु यह फरियाद मैं किस से करूं?

आर्य जनों के लिए एक बात और भी है, कि पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द महाशय राजपाल व भाई श्याम लाल का बलिदान क्यों और कैसे हुआ? और किन लोगों के हाथों हुआ था? क्या अग्निवेश तथा उनके साथी संगियों के पास इसका जवाब है?

यही वह जमाते-इस्लामी है इसके जन्मदाता मौलाना अबुलआला मौदूदी इस भारत को जो हिन्दू बाहूल्य होने हेतु दारूल हरब (रणक्षेत्र) के नाम से पुकारते रहे। और इस दारूल हर्ब को दारूल इस्लाम बनाने का प्रयास कर इस्लामिक स्टूडेन्ट मुवमेन्ट ऑफ इण्डिया - S.I.M.I के नाम से छात्र संगठन बनाया। भारत सरकार ने इनकी गतिविधियों को देखकर प्रतिबन्ध लगाया था इस संगठन पर।

जो आर्य समाज राष्ट्रीय चेतना में अग्रणी रहे आज उसी बैनर के साथ राष्ट्र विरोधी विचारधारा वालों के बेनर घूमने लगे, कितनी लज्जा की बात है। अब आर्य समाज को जमात-ए-इस्लामी की कठपुतली बनाने का प्रयास चल रहा है।

विशेषकर आर्य जन नारा लगाते हैं, दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे। क्या आप लोग आर्य समाज को इस्लामिक संगठन के साथ विलय कर ही दयानन्द का काम पूरा करना चाहते हैं?

एक समय तो वह रहा जब आर्य समाज के अधिकारी संन्यासी राष्ट्र के लिए अंग्रेज सेना के सामने सीना खोल कर गोली चलाने को कह रहे थे। आज वही आर्य समाज के नाम से दयानन्द को इस्लामिक संगठन के सामने बौना दिखा कर उनसे सहयोग मांगना क्या यह ऋषि की तौहिनी नहीं? चाहिये तो यह था कि उनको उनकी गलती का एहसास दिलाते और कहते कि आप लोगों को पश्चाताप करना चाहिये। आप लोगों ने हमारे संगठन के साथ धोखा किया है।

यही कारण था मेरे गुरु स्व. अमर स्वामी जी कहते थे अग्निवेश आर्य समाजी नहीं है, आप उनसे न मिलें। मैं भी आर्य लोगों से यही फरियाद कर रहा हूँ कि यह सारा गुट ही अनार्यों का है उनसे न मिलें।

लाल पगड़ी में सर्वधर्मी चेतना का स्वांग

*****

भारत के नर नारी को लाल पगड़ी में सर्वधर्म जन चेतना के नाम कुछ लोग धोखा देने में उतारु हो गये। सर्व धर्म कहने से पहले धर्म का जानना जरुरी है, क्या धर्म के साथ सर्व शब्द को विशेष कर इस्लाम ने कुबुल किया है? लाल पगड़ी वाले पाखण्डी शायद इस्लाम को भी ले डूबेंगे। किन्तु यह पाखण्डी जितना भी पाखण्ड क्यों न मचायें इस्लाम को धोखा देना कभी भी सम्भव न होगा। क्योंकि इस्लाम अपने को छोड़ किसी को भी धर्म नहीं मानता। इसका जीता जागता प्रमाण इन पाखण्डियों का जयपुर में आयोजित जन चेतना ही है।

इन मिथ्या वादियों ने जमाते इस्लामी हिन्द के सचिव रफीककासमी व महासचिव असद मदानी के नाम का प्रचार करते रहे, किन्तु वह लोग भली भांति जानते हैं कि इस्लाम ही एक मात्र धर्म है, विश्व में, और कोई धर्म ही नहीं कुरानानुसार। यही कारण है कि इस सम्मेलन में एक भी इस्लाम के जानकार या कुरान के जानकार लोगों ने भाग नहीं लिया ।

किसी इंजीनियर सलीम को पकड़कर ले गये, शबाना आजमी कहां गई, इतने राष्ट्रवादी उनके पति जावेद अख्तर कहां गए? यूसुफ खान राष्ट्र भक्त को साथ क्यों नहीं ले जा सके? मौलाना वाहिदउद्दीन कासमी ने साथ क्यों नहीं दिया?

ओ धोखे बाजो, भले ही तुम्हें धर्म की जान कारी न हो, परन्तु प्रायः मुसलमान इन बातों को जानता है। कुरान में अल्लाह ने साफ कहा सुरा इमरान, आयात 19 में इन्नद्दीन इन्दाल्लाहिल इस्लाम, अर्थ=निःसन्देह अल्लाह का धर्म दीन इस्लाम है। आगे कहा आयात=85 में, व मई यब तगे गैरल इस्लामे दीनन, अर्थ इस्लाम को छोड़ दुसरा कोई धर्म नहीं । अल इस्लामु हककुन व कुफरु बातिलुन - अर्थ - एक इस्लामधर्म ही हक है बाकी सब कुफ्र है सब को बातिल कर दिया।

कुरान में अल्लाह ने पारा-1-सुरा-2 बकर-आयात 132 में फरमाया-व वस्साबिहा इब्राहीमु बनीहे व याकुबा या बनिया इन्नाल्ला हसतफा लकुमुददीना फला तमू तुन्ना इल्ला व अनतुम मुसलेमीन

अर्थ – और नसीहत की इब्राहीम ने अपने बेटों को, फिर नसीहत किया याकुव ने अपने बेटों में अल्लाह का धर्म सिर्फ इस्लाम है। इसे छोड़ किसी और को धर्म न कहना और जानमत देना। अल्लाह ने आगे और कहा पारा 3-सुरा 3 इमरान-आयात-20 में-फइन हाज्जू का फकुल असलमतु बज हेया लल्लाहे वमा नित्ताबयाने व कुल लिल्लजीना ऊतुल किताबा वल ऊम्मीईना आ असलमतुम फ इन-असलमू फका दिह तदाव व इन तवल्लाव फ इन्नामा अलई कल बलाग वल्लाहो बसीरूम बिल इबाद ।

अर्थ – अगर यह लोग आप से हुज्जत करें, तो आप फरमा दीजये कि तुम मानों या न मानों मैं तो अपना रुख अल्लाह की तरफ कर चुका हूँ। और जो पैरवी करे मेरी, क्या तुम लोग इस्लाम धर्म स्वीकारते हो? और अगर इस्लाम लाते हो तो राहे रास्त पर आ जावे। आप सिर्फ उन तक बात पहुंचा दें आगे आल्लाह खुद देख व समझ लेंगे।

अल्लाह ने अपने पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब को उपदेश दिया कि आप दुनिया वालो से कह दें कि मेरे से हुज्जत मत करना आल्लाह का धर्म मात्र इस्लाम ही है तुम सब मेरी बात मानों। आप इस्लाम धर्म की बात लोगों से कह दें। आगे हम स्वयं देख व समझ लेंगे। अब कोई मन मानी ढंग से ईसाईयत को, बौद्धिष्टों को, जैनियों को, सिक्खों को, और वहाईयों को धर्म मान कर सर्व धर्म जन सभा के नाम से प्रचार करे। तो इस्लाम के दृष्टि से भी उनकी बुद्धिमारी गई। किसी भी प्रकार इस्लाम अपने को छोड़ किसी और को धर्म स्वीकार ही नहीं करता-फिर इस्लाम के नाम यह धोखा क्यों?

यह जितना ही पाखण्ड क्यों न मचायें इस्लाम जगत के लोग भी इनके पाखण्ड में फंसने वाले नहीं। एक साधारण व्यक्ति जो इस्लाम को जानता हो, वह भी इनके जाल में नहीं फंसते। तो फिर अब्दुल्ला बुखारी, अहमद बुखारी,

मुफ्ती मुकररम, निजामुद्दीन मरकज के हजरत जी जैसे या फिर इस्लाम जगत के आलिमों का इन पाखण्डियों का साथ देने का तो कोई प्रश्न ही कहां? उन लोगों के लिए यह सोचना भी पाप है। क्योंकि अल्लाह ने कुरान में मुसलमानों को उपदेश दिया है पारा 3-सुरा 3-इमरान, आयात 28 में लायत्ता खिजिल मोमेनूनल काफेरीना आऊ लिया या मिन दू निल मो मेनीन।

अर्थ - मुसलमान मुसलमानों को छोड़ गैर मुस्लिमों को दोस्त न बनाओ दिली और जुबानी और तुम दोस्ती रखते हो उन लोगों से, तो मैं अल्लाह तुम लोगों से दोस्ती नहीं रखूंगा।

अब बुद्धि जीवी विचार करें, कि इस्लाम जगत के विद्धान अल्लाह का हुकुम मानें? या अग्निवेश जैसे पाखण्डी का? और कोई इस पाखण्डी की मान लें तो मात्र अखबार में चित्र ही तो छपेगें? इस से ज्यादा और क्या होगा?

और कही अल्लाह के आदेशों का उलंघन करें? अल्लाह से दोस्ती कटी, कुरान का अपमान हुआ, जन्नत के हूर, व गिलमां, पवित्र शराब, शहद तरह-तरह के मेवे, परिन्दों के गोश्त का कवान इन सभी ऐश व आराम से हाथ धोना पड़ेगा। और यह सब सामान अग्निवेश उपलब्ध नहीं करा पायेंगे, और अगर उपलब्ध करा भी दिया, तो यह सब दुनियावी सामान है, पर जन्नत के सामानों से दुनिया के सामानों का क्या मुकाबला?

यही कारण है इस्लाम जगत का कोई आलिम तो दर किनार। यही जमाते इस्लामी में शामिल गाजियाबाद का रहने वाला अग्रवाल परिवार में जन्म लेकर इस्लाम को स्वीकार किया - नसीम गाजी भी इस पाखण्ड में नहीं फंसा, तो आलिमों का फंसना कहां और कैसे सम्भव है?

कुरान में अल्लाह ने और कहा पारा 6-सुरा 5 मायदा-आयात 3 में = अलयावमा अकमलतु लकुम दीनकुम व अत मम तुअलईकुम नेयमती वराजितू लकुमुल इस्लामा दीना।

अर्थ - आज से पूरा किया हमने तुम्हारे वास्ते दीन (धर्म) तुम्हारा और इनयाम किया मैंने तुम्हें इस्लाम धर्म को, दूसरा कोई धर्म नहीं।

इसके बावजूद अगर यह पाखण्ड मचा रहे अग्निवेश सर्व धर्म के नाम से। तो यह सरासर इस्लाम के साथ भी धोखा है, इस्लाम वालों को भी चाहिये इन पाखण्डी के मकड़ जाल में न फंसे। क्योंकि इनका न कोई दीन है न ईमान, यह मतलब परस्त है। सुविधा वादी हैं, समस्त ऐषणाओं से ग्रसित है।

अल्लाह ने आगे फिर कहा-पारा 8-सुरा-6 अनयाम, आयात 126 में व हाजा सिरातु रब्बिका मुस्ता की मा. कद फस्सलनल आयाति ले कौमिय यजजक्कारून।

अर्थ - और यही अल्लाहका सीधा धर्म का रास्ता है, हमने नसीहत हासिल करने वालों को साफ साफ आयतों को बयान कर दिया।

अल्लाह के इन फरमानों के अति रिक्त कोई पागल अगर सर्व धर्म का स्वांग रचाये तो उनके बुद्धिमानी का क्या दाद दिया जाय? अल्लाह ने आगे और कहा पारा 17-सुरा 22 हज-आयात 78 में हु अज तबाकुम वमा जयाला अलईकुम फिद्दीन मिन हराजिन मिल्लताआबिकुम ईब्रा हीमा हुआ सम्माकुमुल मुसलेमीन।

अर्थ - उसने बर गुजिदा किया तुम को, उसने तुम पर दीन (धर्म) का अहकाम दिया तंगी नहीं की तुम अपने बाप ईब्राहीम के दीन (धर्म) पर कायम रहो, क्योंकि उसने तुम्हारा नाम ही मुसलमान रखा।

इस आयत में भी अल्लाह ने साफ कहा तुम्हारा नाम मुसलमान इस लिए रखा गया कि तुम इब्राहीम के औलाद हो। धर्म इस्लाम का मानने वाला हो। कुरान में अल्लाह ने मर्द व औरत के लिए एक ही उपदेश धर्म इस्लाम के लिए दिया है। पारा-22-सुरा-33अहजाब, आयात 35 में, इन्नल मुसलेमीना वल मुसलेमाते वल मो मेनीना वलमोमीनात वल कानेतीना वल कानेतात वस्सादेकीना वस्सादेकाते, वस्सावेरीना वस्साबिराते, वल खाशेईना वल खाशेआते, वल मुतासद्देकीना वल मुता सद्देकात वस्सामेइना वस्सामेआते वलहाफेजीना फूरुजहुम वल हाफे ज़ाते वज्जाकेरीनाल्लाहा कसीरं वज्जाकेराते आ अददल्लाहू लहुम मग फिरातात व अजरन अजीमा।

अर्थ - तहकीक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और धर्म इस्लामको मानने वाले मर्द व औरतें और कुरान पढ़ने वाले मर्द व औरतें, और सबर करने वाले मर्द व औरतें और आजिजी करने वाले मर्द और औरतें, और दान देने वाले मर्द व दान देने वाली औरतें। और रोज़ा रखने वाले मर्द व रोज़ा रखने वाली औरतें और अपनी शर्म गाह को हिफाजत करने वाले मर्द व शर्म गाहको हिफाजत करने वाली औरतें। और ज्यादा अल्लाह को याद करने वाले मर्द व औरतें । इन सबके लिए अल्लाह ने मगफिरत व अजरे अजीम तैयार रखा है।

जहां कुरान में अल्लाह ने मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतों को यह तालीम दी हो फिर अग्निवेश किस बात को सिखाने के लिए मुसलमानों को अपने साथ बुला रहे हैं? शायद अग्निवेश सरीखे पाखण्डी लोगों को मालूम ही नहीं कि इस्लाम एक अंकीदा या विश्वास का नाम है। इस विश्वास पर इस्लाम अपना सर्वस्व मिटा सकता है। किन्तु कुरान, अल्लाह, मुहम्मद, और इस्लाम धर्म के खिलाफ नहीं चल सकता। इस्लाम तो जन्म से इन्ही बातों पर गैर इस्लामियों से लड़ रहा है। यही कारण है कि जितना भी गैर इस्लामी हैं वह सब इस्लाम के दुश्मन हैं और इन दुश्मनों को समूल नष्ट करना ही इस्लाम का लक्ष्य है। आज ओसामा बिन लादेन हो, या इस्लामी तालीबान जितने भी इस्लामी संगठन है वह सब इसी प्रयास में लगे हैं। जमाते इस्लामी के जन्मदाता मौलाना आबुल आला मौदूदी ने भी यही प्रयास किया था, अभी 27 अक्टूबर 2005 को इरान का राष्ट्राध्यक्ष ने कहा इज्राईल को विश्व के नक्शे से मिटा देना चाहिये। क्या अग्निवेश जैसे सर्वधर्म का प्रचारक इरान के शाह को बता सकते हैं? जब सब धर्म समान है फिर इज्राइल को आप मिटाना क्यों चाहते हैं?

ऐषणाओं की तृष्णा बुझाने की दौड़ में अग्निवेश

*****

अभी 19, 20, 21 नवम्बर 2005 में उ.प्र. के आजमगढ़ जिला रानी की सराय के पास जमाते इस्लामी का तीन दिवसीय अधिवेशन मनाया गया, इसमें भाग लेने वालों में वक्ता के रूप में अग्निवेश भी थे।

अग्निवेश 21 नवम्बर, रविवार के दिन मुसलमानों को खुश करने के लिए सभी मर्यादाओं को दाव पर लगा दिया। यद्यपि इससे मेरा कोई लेना देना नहीं था किन्तु दैनिक जागरण 21 नवम्बर के पृष्ट 9 पर चित्र सहित वाराणसी अंक में लिखा स्वामी अग्निवेश अध्यक्ष आर्य समाज कान्फ्रेन्स को संबोधित कर रहे हैं।

अग्निवेश को आर्य समाज का 'अध्यक्ष' लिखा जबकि जागरण वालों को पता ही नहीं अग्निवेश किसके और कहाँ के अध्यक्ष हैं? आर्य जनों, मैं अग्निवेश के दिये गए वक्तव्य व उसकी समीक्षा लिखना और समग्र आर्य जनों को अवगत कराना अपना कर्त्तव्य समझ कर लिख रहा हूँ। मानव ऐषणाओं के वशीभूत होकर क्या नहीं कर सकता? अग्निवेश ने अपना वक्तव्य बिसमिल्ला हिर रहमा निर्रहीम से प्रारम्भ किया। जबकि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चौदह सम्मुल्लास में इसी वाक्य को गलत सिद्ध किया है, कि कुरान का बिसमिल्ला ही गलत है। आर्यों का एक काल तो वह भी था। जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली की जामा मस्जिद से अपने वक्तव्य को प्रारम्भ किया था वेद मन्त्रों से। त्वमहिनः पिता वसो त्वम माता शतकृत से और आज ऐषणाओं की तृष्णा बुझाने वाले अग्निवेश ने वेद छोड़ कर कुरान को पकड़ लिया। जबकि ऋषि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने कुरान के मानने वालों को सत्य के आधार पर कुरान छुड़वाकर वेद पकड़वाये थे । किन्तु दयानन्द और श्रद्धानन्द का गला घोट कर अग्निवेश आर्यसमाज के अध्यक्ष कहलवाने में जरा सा भी लज्जा महसूस नहीं करते।

वेद और कुरान अगर एक होता तो फिर स्वामी श्रद्धानन्द की, पं. लेखराम की व महाशय राजपाल की तथा भाई श्याम लाल की हत्या क्यों और कैसे होती? अग्निवेश लोकेषणा के कारण वैदिक मर्यादाओं को ताक पर रखते हुए आर्य समाज का भी गला घोट कर अपनी तृष्णा बुझा कर मुसलमानों को सन्तुष्ट कर रहे है। न मालूम ऋषि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मा ईश्वर व्यवस्था के अनुसार कहाँ है? मेरे विचार से उन महापुरुषों की आत्मा जहाँ कहीं भी होगी अग्निवेश के इन क्रियाकलापों को, चाल-चलन को व ऐषणाओं में डूबा देखकर अवश्य रो रही होगी। यह भी कह रहे होंगे कि जिस वेद को जो ईश्वरीय ज्ञान है, विषपान कर प्राणों की बाजी लगाकर न मालूम आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथियों ने कितने ही इस्लाम जगत के विद्वानों को परास्त किया तथा इस्लाम और कुरान के जानकारों को कुरान छोड़ वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने को बाध्य किया। अब उनके दिये गये वक्तव्य को देखें। दैनिक जागरण ने लिखा स्वामी अग्निवेश अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा ने जमा अते इस्लामी के तीन दिवसीय काफ्रेन्स के अन्तिम दिन रविवार को उन्होंने बिसमिल्ला हिर रहमा निररहीम से अपनी बात शुरू की। उन्होंने कहा कि जमाअते इस्लामी के मंच से सर्व प्रथम मैं पैगम्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद साहब को नमन करता हूँ। जिन्होंने जिन्दा बेटियों को गाढ़ने से रोका। औरत और मर्द के बीच अपमानजनक व्यवहार को दूर किया, औरतों को सम्मानपूर्वक जीने का हक दिया है, उसका अनुपालन ही सारी समस्याओं का हल है। स्वामी जी ने औरत मर्द के बीच बेइन्साफी, जातिवाद की बेइन्साफी, अमीर गरीब की बेइन्साफी तथा काले गोरे की बेइन्साफी पर विस्तृत बयान कर जन सैलाब को काफी प्रभावित किया। आगे और भी है परन्तु यहीं तक अग्निवेश के बयान में ही वैदिक मान्यताओं का गला घोट कर रख दिया। प्रथम मैं उसकी शुरुआत पर लिख चुका हूँ, अग्निवेश ने कहा सर्वप्रथम मुहम्मद साहब को मैं नमन करता हूँ। जो वैदिक मान्यता ही नहीं अपितु इस्लाम पर भी कुठाराघात है। क्योंकि वैदिक मान्यतानुसार एक परमात्मा को छोड़ और किसी को नमन नहीं करना चाहिये। और इस्लाम में भी एक अल्लाह को छोड़ किसी और के पास झुकना ही शिर्क है। अग्निवेश एक तरफ तो आंर्य समाज कहीं

आर्य प्रतिनिधि सभा, फिर कहीं सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष बता रहे हैं अपने को। इधर वैदिक मान्यता को जानते तक नहीं। विशेषकर मैं सामवेदी से जानना चाहूंगा क्या आप वेद को जानते भी हैं? या मात्र नाम ही सामवेदी लिखते हैं? अगर वेद को जानते, तो फिर अग्निवेश के इस वेद विरूद्ध वक्तव्यों को स्वीकार कैसे करते? उनको गुरु मान कर पिछलग्गू हो कर वैदिक सिद्धान्त के जानने व मानने वालों को धोखा कैसे देते? यादव जी पर मैं दया करता हूँ क्योंकि वह आर्य नहीं है यादव है। पर आप तो सत्य के व्रती और सामवेदी अपने नाम से लिख कर दुनिया को बताते हैं।

अब जमाते इस्लामी वालों की भी बुद्धि मारी गई। उनके मंच पर ही शिर्क का प्रतिपादन हुआ। जहां मस्ज़िदे अक्सा के इमाम भी मौजूद थे। आर्य लोगों एक बात का ध्यान रखना आर्य समाज के संस्थापक ***ऋषि दयानन्द की मात्र बात थी ईश्वर के अतिरिक्त मूर्ति के सामने नमन न करने की। आज आर्य समाज का नाम लेकर दयानन्द का अपमान मात्र लोकैष्णा की तृष्णा बुझाने के लिए अग्निवेश ने वैदिक सिद्धान्तों को ताक पर रख दिया।*** अब इस्लाम के मानने वालों को देखें, मोहन दास करमचंद (महात्मा) गांधी का पुत्र हीरा लाल गांधी ने, जब अब्दुल्ला गांधी बनकर इस्लामिक मंच पर कहा था - हे अल्लाह अगले जन्म में किसी मुसलमान के घर जन्म देना, इतने कहने पर मुसलमानों ने मंच से नीचे गिराया था। और उसी मंच से अल्लाह को छोड़ मुहम्मद को नमन की बात मात्र ऐसे सिद्धान्तहीन लाल वस्त्रधारी गैर मुस्लिम से सुनने हेतु तौहीद व अल्लाह की वहदानियत को भी तिलाँजली दिया गया क्योंकि वह लोग भी ऐषणाओं से ग्रसित हैं।

आगे और देखें हजरत मुहम्मद ने औरत-मर्द के बीच अपमान जनक व्यवहार को रोका। पर आर्य जनों को बखूबी मालूम है कि इस्लाम के जन्म काल से आज तक औरत व मर्द में समानता नहीं हैं। आज भी शरियती कानून में अगर पुरुष के मुकाबले में औरतों को गवाही देनी हो तो एक पुरूष के मुकाबले में दो औरतों को गवाही देनी होगी। फिर पिता की सम्पत्ति में भी पुत्र व पुत्री बराबर के हकदार नहीं, मात्र बेटी रूपयों में चौअन्नी की हकदार है। पति की सम्पत्ति में मात्र पत्नी दो आने की अधिकारी है। अल्लाह ने कुरान की

सुरा निसा आयात तीन में फरमाया = निसओकुम हर सुल्लाकुम फातु हर सकुम अन्ना शेतुम व कद्देमु ले अनफुसे कुम।

अर्थ = औरतें, मर्द के खेत हैं, उस खेत से जैसा चाहो फसल उत्पन्न करो, यहाँ औरतों की मर्यादा मात्र बच्चा पैदा करने का यन्त्र बताया; सुरा बकर में कहा गया, लिबासुल्ला कुमवअनतुम लिबासुल्ला हुन्ना जिसका अर्थ है-स्त्री और पुरुष एक दूसरे के परिधान हैं। पहनने का कपड़ा अर्थात् मैला हो बदल लो, धो लो, मैला कर भी सकते हो, साफ भी रख सकते हो, दाग लगा सकते हो और नहीं भी।

अल्लाह के पास भी औरत, मर्द में अन्तर है, मर्दों को मस्जिद में जमात के साथ नमाज का आदेश है और औरतों की जमात नहीं होती, कोई इनके इमाम नहीं बन सकते न मालूम अग्निवेश को इस्लाम में औरत-मर्द में बराबरी कहाँ दिखाई पड़ी ? अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए कुछ भी कहने को तैयार हैं अग्निवेश।

वाह रे! युगप्रवर्तक ऋषि देव दयानन्द कैसे करूँ तुम्हें याद, आपने औरत व मर्द के लिए समान अधिकार मुहैया कराते हुए मानवता पर बहुत बड़ा उपकार किया है। जब तक यह सृष्टि रहेगी तब तक आपको हर पीढ़ी याद रखेगी।

आर्य जनों को एक बात मैं और भी बता दूँ कि अग्निवेश हिन्दुओं को या आर्य जनों को गाली दे कर ईसाई व मुसलमानों की मात्र हमदर्दी नहीं ले रहे हैं। अपितु नोट भी कमा रहे हैं। अग्निवेश का जितना विरोध हम करेंगे, अग्निवेश को उतनी ही हमदर्दी उन लोगों से मिलेगी। यही कारण है कि हमारे आर्य जगत के विद्वानों ने इतना कुछ न लिखकर सामान्य तरीके से लिखा। मैं भी मात्र आर्य जनों को सच्चाई तथा यथार्थ दर्शाने हेतु लिखता हूँ । वरना अग्निवेश क्या है आर्य लोगों के सामने ? जिन अंग्रेजों के खिलाफ आर्यों ने बिगुल बजाया और भारत से अंग्रेजों को खदेड़ कर रहे, इन शूरवीरों से क्या मुकाबला ? क्योंकि मच्छर भगाने के लिए तोप की आवश्यकता नहीं होती, पर याद रखना जिस दिन धैर्य का बाँध टूटेगा उस दिन वैदिक सिद्धान्तों के रक्षार्थ आर्य लोग अपने आर्ययत्व का जलवा अवश्य दिखा देंगे।

आर्य समाज की मान्यता पर जो कुठाराघात अग्निवेश द्वारा हो रहा है मैं अब तक आर्य जनों को लेखनी के माधयम से बताता आया हूँ। अपने सभी लेखों को अग्निवेश को, सत्यव्रत सामवेदी को भेजता रहा हूँ। अभी राकेश जी भटनागर कालका जी वालों ने मुझसे कहा आप स्वामी जी से शास्त्रार्थ करना चाहें तो मैं व्यवस्था करूं, मैंने उनको चुनौती लिखित 3 दिसम्बर 2005 ई-मेल के द्वारा दिया है। आर्य जन आप लोग भी तैयारी करें और अग्निवेश द्वारा अवैदिक मर्यादाओं को उखाड़ फेकें।

अग्निवेश न तो मार्क्सवादी है, न समाजवादी, मात्र सुविधावादी है लाल काला द्वारा अग्निवेश के कम्युनिस्ट न होने की सिफारिश

*****

कुछ दिनों से वैदिक सार्वदेशिक के नाम से साप्ताहिक पत्रिका लोगों में मुफ्त पहुंचाते देखा। पुरानी पत्रिका सार्वदेशिक के नाम से आर्य जन जानते ही थे, परन्तु उनमें वैदिक शब्द जोड़कर लोगों में वितरित किया जाने लगा।

मैं अपने एक शुभचिन्तक के पास बैठा तो वैदिक सार्वदेशिक 2 फरवरी से 8 फरवरी 2006 का अंक सामने आया। उसके प्रत्येक पृष्ठ को ध्यानपूर्वक पढ़ा प्रत्येक पृष्ठ पर मैं अगर टिप्पणी लिखूं तो एक पत्रिका और तैयार हो जाना असम्भव नहीं।

मैंने पृष्ठ 7 पर प्राचार्य श्याम लाल द्वारा लेखों को 'क्या स्वामी अग्निवेश कम्युनिस्ट हैं?' पर ही समग्र आर्य जनता को अवगत कराना उचित समझा। यद्यपि अब तक मैं 17 लेख आर्य लोगों को दे चुका हूँ तथा मेरे द्वारा सभी लेखों को अग्निवेश तथा सामवेदी तक पहुंचा चुका हूँ। किन्तु आज तक जवाब देने में असमर्थ रहे यह प्राचार्य लोग। अब देखे श्यामलाल ने क्या लिखा-शीर्षक ऐसा है जैसे कि कम्यूनिस्ट होना कोई गाली है। कम्यूनिस्ट शब्द गाली सूचक हो या न हो परन्तु दुनिया भर से सर्वश्रेष्ठ तार्किक होने का दम भरने वाले आर्य समाज के कुछ नेताओं और विद्वानों ने इस शब्द को गाली के साथ नत्थी कर दिया है। इसलिए अग्निवेश जी की बात न सूझे तो धड़ल्ले से कहते वे तो कम्युनिस्ट हैं। जैसे कम्युनिस्ट कोई चोर उचक्का, बदमाश, देशद्रोही हो गया।

इन बिन्दुओं पर हम थोड़ा विचार करें। श्याम लाल ने आर्य जगत के विद्वानों द्वारा कम्युनिस्ट को कम्युनिस्ट कहना या लिखना पाप समझा, जो वस्तु

या व्यक्ति जैंसा है वैसा जानना या मानना ही मानवता है, इस छोटी सी बात को इन प्राचार्य महोदय ने जाना तक नहीं। अवश्य जानना इनके लिए सम्भव भी नहीं, क्योंकि यह श्याम जो ठहरे, इनको तो सब काला ही नजर आता है।

श्याम लाल का मानना है कम्युनिस्ट देशद्रोही नहीं हैं। मैं इनके अनभिज्ञता पर हैरान हो रहा हूँ। मैं श्याम लाल की बुद्धिमानी पर हैरान हो रहा हूँ। कम्यूनिस्ट शब्द का अर्थ है वाममार्गी और वाममार्गी का मतलब **'उल्टा चलने वाला'** और यह कम्यूनिस्ट जन्म से ही उल्टा चला और आज भी चल रहे हैं। भारत के किसी भी महापुरुषों का चित्र आज तक कम्युनिस्ट कार्यालय में नहीं लगा, इसका कारण? इसका कारण काला + लाल को पता नहीं।

1947 में इन्हीं कम्युनिस्टों ने पाकिस्तान बनाना होगा फिर भारत स्वाधीन होगा का नारा दिया था। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को जूतो का कुत्ता कहकर कुत्ता जैसा कार्टून बना कर गले में जंजीर डालकर अखबारों में निकाला था। आज तक भारतवासियों ने जिस नेताजी को अपने हृदय में जगह दी है, इन्हीं कम्युनिस्टों को उनका अपमान करने में तनिक भी संकोच नहीं हुआ, क्योंकि इनका नाम ही वाममार्गी है।

सब पुरानी बातों को अगर छोड़ दें तो सभी भारतवासियों को याद होगा कि पिछले दिनों में जब भारत के प्रधानंमन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी थे और यही कम्यूनिस्टों का समर्थन था और बुश ईराक के सद्दाम के साथ लड़ रहा था। उन दिनों में भारत सरकार तेल दे रही थी अमरीकी बुश को और यह कम्यूनिस्ट खून दे रहे थे सद्दाम को। श्याम लाल इसे जानते तक नहीं। जब नाम ही इसका उल्टा है, फिर काम सीधा क्यों और कैसा सम्भव है? इसका जो मूल कारण है उसे देखें। इस्लाम और कम्युनिस्ट कहाँ-कहाँ मेल रखता है देखें। इस्लाम का रिलिजियस फण्डामेन्टालिजम है, और कम्यूनिस्टों का पोलीटिकल फण्डामेन्टालिज्म है। मान्यता दोनों में बराबर है। मुसलमानों का ध र्म ग्रन्थ कुरान है जिसका प्रथम अक्षर **'क'** है कम्युनिस्टो का कम्युनिजम मेनुफेस्टो है जिसका प्रथम अक्षर भी **'क'** है। अब दोनों के प्रवर्त्तक को देखो इस्लाम का मुहम्मद और कम्युनिस्टों का मार्क्स, दोनों में पहला अक्षर **'म'** है अब दोनों के तीर्थस्थान को देखें इस्लाम का **'मक्का'** है और कम्युनिस्टों का

है **'मास्को'** अर्थात् दोनों जगह **'म'** है। विशेषकर आज भारत में अराजकता फैलाने में दोनों का हाथ है। आज भारत से लेकर नेपाल तक नक्शलिस्टों को उपद्रव करने का अवसर भी इन्हीं कम्यूनिस्टों के द्वारा मिला है। मैंने तो बचपन से ही बंगाल में देखा कम्युनिस्टों का नारा था **'लड़ाई, लड़ाई, लड़ाई चाई लड़ाई कोरे बांचते चाई अर्थात् लड़ाई चाहते हैं, और लड़कर जीना चाहते हैं।'**

अब इनकी बुद्धिमानी देखें, लड़ने वाला क्या मर नहीं सकता? फिर लड़कर जीना चाहते हैं कैसे सम्भव है? इससे यह स्पष्ट हुआ कि कम्युनिज्म विचारधारा आध्यात्मिकता से सम्पर्क नहीं रखता। मूल कारण भी यही है जो ईश्वर को न मानना तथा यही कम्युनिस्टों का नारा था, धर्म तो अफीम का गोला है, राजनीति सुअरों का ठिकाना (अस्तबल) और आज वही कम्युनिस्ट राजनीति में जाकर सुख के कबूतर जैसे वक वका रहे हैं।

मार्क्सवादी विचार में कितना खोखलापन है देखें। इनके विचार हैं कि अपना कुछ नहीं सब राष्ट्र का है, फिर यह कुर्सी और पद क्यों? यह सामान्य उदाहरण मैंने मार्क्सवाद का दिया है, जिन विचारों से श्याम लाल अनभिज्ञ हैं। श्याम लाल ने अपने लेख में अग्निवेश साम्यवादी नहीं समाजवादी हैं और उनका यह समाजवाद भी वैदिक समाजवाद है, दयानन्दीय समाजवाद है, कोरा मार्क्सवादी साम्यवाद नहीं। (देखें महर्षि दयानन्द का वैदिक समाजवाद)। आगे प्रो. जयदेव आर्य जी के लेख का जवाब देते हुए लिखा, मैं उनकी स्थापना से सहमत हूँ। इसलिए कहना होगा कि अग्निवेश कम्युनिस्ट या मार्क्सवादी नहीं है, और न हो सकते। क्योंकि वे जड़ (प्रकृति) और चेतन ईश्वर तथा जीव दोनों सत्ता को मानते हैं (देखें अग्निवेश की वेबसाइट)। आगे लिखा इस दृष्टि से अग्निवेश विशुद्ध समाजवादी हैं वह भी वैदिक समाजवाद के पोषक।

अब पाठकगण श्यामलाल के कालेपन को देखें। प्रथम तो यह जिस वेबसाइट की बात यही काला+लाल ने की थी जिसमें आर्य समाज के नियमों को बदलना तथा सहशिक्षा का समर्थन था। जिस ऋषि दयानन्द ने सह शिक्षा का विरोध किया अग्निवेश उसे नहीं मानते और श्याम लाल ने उस पर लिखा था कि अग्निवेश के विचारों में स्वतन्त्रता तो होनी चाहिए। जिसका जवाब मैंने

लिखा था आखिर अग्निवेश डॉटकॉम में क्या है? अग्निवेश ने अपनी सफाई देने के लिए पंजाब केसरी के सोमवार्ता में बयान दिया मेरा पूरा जीवन ऋषि दयानन्द के लिए समर्पित है, इसका जवाब मैंने लिखा अग्निवेश के वक्तव्य में कितना झूठ कितना सच मैं दे रहा हूँ तराजू। आज तक जिसका जवाब नहीं जुटा पाये, आज फिर वही श्यामलाल उसी बेवसाइट से हवाला दे रहे हैं।

अग्निवेश कम्युनिस्ट हैं या नहीं श्यामलाल को लिखना क्यों पड़ा? समग्र भारतवासियों को पता है राम मन्दिर का विरोध करने वाला अग्निवेश है। उ. प्र. के प्रतापगढ़ जिला में कुण्डा आर्य समाज के उत्सव पर जनता से अग्निवेश ने कहा था अयोध्या में राम रहीम अस्पताल बने। फिर कहां राम का जन्म यहाँ हुआ है क्या प्रमाण है? जब वह जनता से पूछने लगे मंच पर डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, हापुड़ वाले, भाई आशा राम भजनोपदेशक भी थे। मैंने कहा स्वामी जी राम का जन्म कहाँ हुआ था वह मुझे पता है। आप अपने पिता को पिता कहते हैं आपके पास क्या प्रमाण है? जवाब मिला माँ कहती है, फिर मैंने कहा भारत माँ भी यही कह रही है, राम का जन्म यहीं हुआ था। अगर आपको आपत्ति है तो आप ही बतायें। श्यामलाल जी, न आप दयानन्द को जानते हैं, और न आपके गुरु अग्निवेश। दयानन्द को पढ़कर देखें। जहाँ कहीं मुसलमान और ईसाईयों की बात आई तो दयानन्द हिन्दुओं के साथ छाया बनकर खड़े हो गए।

अग्निवेश मात्र कम्युनिस्ट नहीं अपितु पक्का कम्युनिस्ट है और राष्ट्रद्रोही भी कम्युनिस्टों का नारा है चीन का चेयरमैन हमारा चेयरमैन है क्योंकि कम्युनिस्ट तो मात्र कम्युनिस्ट है किन्तु अग्निवेश अवसरवादी भी है।

पिछले एन.डी.ए. सरकार के समय जब इज्रायल राष्ट्रपति भारत आया था उस समय इसी अग्निवेश ने विरोध जताया था। शायद आप जैसे दो रंग वालों को पता ही नहीं। मार्क्सवादी सीताराम यचुरी ने भी विरोध जताया था। पिछले लोक सभा चुनाव में अटल बिहारी के खिलाफ लखनऊ से चुनाव लड़ने को तैयार हो गये थे। जबकि 1984 में लखनऊ से अग्निवेश हारे भी अगर अग्निवेश भा. ज.पा. से विरोध रखते हैं। फिर इंद्रवेश को भा.ज.पा. के टिकट में रोहतक से चुनाव लड़ने क्यों दिया गया? जो अग्निवेश भा.ज.पा.

विरोधी है फिर अपनी वेबसाइट का उद्घाटन अरूण जेटली से क्यों कराया था? श्याम लाल ने आगे और लिखा आज आवश्यकता खाई को पाटने की। सर्वग्राही सार्वजनिक, सबसे मैत्री भाव रखकर चलने, सबका कल्याण चाहने वाले, साम्प्रदायिक सौहार्द को स्थापित करने वाले संगठन के रूप में आर्य समाज को पुन: स्थापित करने की है। इनकी करनी और कथनी में कितना अन्तर है देखें। पत्रिका में लिख रहे हैं खाई को मिटाना और समाज में खाई बनाते जा रहे हैं। सभी प्रान्तीय सभा में झगड़ा लगाने का काम किया जा रहा है। खामखा कोर्ट कचहरी में न मालूम आर्यों का कितना धन व्यय हो रहा है। यही प्रकरण को लेकर, साम्प्रदायिक सौहार्द को स्थापित करने की बात कहकर न मालूम इन लोगों की दृष्टि में साम्प्रदायिक क्या है? अभी डेनमार्क में किसी का कार्टून छापा और भारत में प्रशासन को अस्त व्यस्त किया जा रहा है तथा उत्तर प्रदेश के एक मन्त्री ने 51 करोड़ रूपये उसे देने का ऐलान किया जो उस कार्टूनिस्ट को मार दे, फिर उसे सोने से तौलने की बात कहीं। क्या यह लोग साम्प्रदायिक नहीं? अग्निवेश या श्यामलालादि हाजी याकुब कुरैशी को साम्प्रदायिक कह सकते हैं? क्या अग्निवेश स्वामी श्रद्धानन्द के कातिल को साम्प्रदायिक मानता है? या पं. लेखराम, महाशय राजपाल तथा भाई श्यामलाल के कातिल को साम्प्रदायिक मानते हैं?

किसी कम्युनिस्ट ने विरोध किया हो तो बतावे? आँखों देखा हाल अनेक है कितना लिखा जाये? हिन्दू कुछ कहने मात्र से वह साम्प्रदायिक हो जाता है अग्निवेश सरीखों के पास। हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम, और वह कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती। अग्निवेश न मार्क्सवादी है न समाजवादी, मात्र सुविधावादी है। परमात्मा अग्निवेश तथा उनके साथियों को सद्बुद्धि दें।

अरे गाफिलों एक हो जाओ, अगर मार गैरों की खानी नहीं

*****

आर्य समाज को विश्व में फैलाने के लिए या विश्व को आर्य बनाने के लिए या ऋषि दयानन्द के सपना साकार करने के लिए आर्य मिशनरी में जुड़े वो महान विभूतियाँ कैसे निस्वार्थ कार्य कर गये। उन्हें जितना भी याद किया जाये कम है।

मात्र ऋषि दयानन्द के उपेदशों को उन लोगों ने आत्मसात किया था। तदानुसार अपने जीवन में उतार कर अक्षरस: उन लोगों ने पालन भी किया था। यही कारण था ऋषि दयानन्द के बनाये आर्य सामज को गति देने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी सम्पत्ति से लेकर अपना जीवन तक समर्पित कर दिया था। मात्र आर्य समाज या वैदिक सिद्धान्त को जनमानस तक पहुँचाने के लिए। बाद में वह मुन्शीराम से महात्मा मुन्शीराम कहलाये।

उधर लाला हंजराज ने अंग्रेजों को मुँह तोड़ जवाब देने के लिए दयानन्द के नाम डी.ए.वी. की स्थापना कर अपने को उत्सर्ग करते हुए महात्मा हंसराज कहलाये। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द देश विदेशों में वैदिक मर्यादा व आर्य समाज को जन-जन तक पहुँचाकर लौह पुरुष कहलाये थे। पं. लेखराम भी अपना त्याग व बलिदान देकर शहीदे आज़म व आर्य मुसाफिर के नाम से प्रख्यात हुए थे। और श्री राजपाल जी आर्य समाज की खातिर शहीद होकर महाशय कहलाये।

कितने नाम लिखे जायें एक बहुत बड़ी लम्बी लिस्ट को देख, जान, पढ़कर भी आज आर्य समाजी कहलाने वाले आर्य, समाज को डुबोकर ही अपने पदों को सुरक्षित रखना चाहते हैं।

आर्य समाज के उन विद्वान जनों व अधिकारी वर्गों ने दीपक की भांति अपने को जलाकर वैदिक प्रकाश को विश्व में फैलाया था। आज आर्य समाज के अधिकारी आर्य समाज में आग लगाकर उस अग्नि के प्रकाश को अपने घर की रौशनी मानने में संकोच नहीं कर रहे। पहले आर्य समाज के कार्यकर्त्ता नि:स्वार्थ व निष्काम भाव से कार्य कर गये और आज मात्र पदों के लिये,

समाज की सम्पत्ति व सभी प्रकार की ऐषणाओं के लिए कार्य कर रहे हैं। वरना झगड़ा क्यों और कैसे?

मैंने प्रथम सत्यार्थप्रकाश से लेकर ऋषि दयानन्दकृत ग्रन्थों को पढ़ा, आर्य समाज के बलिदानियों का इतिहास पढ़ा, वैदिक सम्पत्ति को पढ़ा, विशेषकर वेद और कुरान पर जिन विद्वानों ने काम किया उनको मनयोग से पढ़ा क्योंकि मेरा विषय भी इस्लाम रहा है।

कुल मिलाकर वैदिक सिद्धान्त को भलीं-भांति जानने का प्रयास किया। आर्य विद्वानों के जीवनी व वैदिक मान्यता पर प्रचार-प्रसार करते हुये जिन लोगों ने अपना कर्त्तव्य निभाया उन्हें पढ़कर ही मैं आर्य समाज में आया और उन पर अमल करते हुए विद्वानों को भी देखा। जैसा स्वामी सत्य प्रकाश जी को पाया अपने पुत्र की मृत्यु को देखकर भी शोक न करते, और उस समय आर्यजनों को पता भी नहीं लग पाया कि यह मृत व्यक्ति स्वामी जी के जिगर का ही टुकड़ा है। यहाँ तक कि स्वामी जी ने मृत्यु पर्यन्त अपने घर वालों की सेवा तक नहीं ली।

मुझे कई बार इलाहाबाद के चौक आर्य समाज में जाने का अवसर मिला। स्वामी जी के बारे में बहुत जानकारी मिली। पिछले 17 व 18 वर्ष पहले की बात है, स्वामी जी बीमार चल रहे थे। स्वामी जी दिल्ली प्रादेशिक सभा से इलाहाबाद पहुँचे थे। हमारा कार्यक्रम मुटिठगंज आर्य समाज, इलाहाबाद में चल रहा था। डॉ. प्रशस्य मित्र जी मुझे अपने साथ लेकर विश्वविद्यालय स्वामी जी से मिलने गये। मैंने स्वामी जी से पूछा भी परिवार वालों को सेवा का अवसर देने के बारे में। परन्तु स्वामी जी विनोदी स्वभाव वाले होने के कारण मुझसे कहा मौलाना मैं अवसरवादी नहीं हूँ। फिर स्वामी जी की शिष्य मण्डली को मैंने देखा और पाया। मेरी कलम में वह शक्ति नहीं कि उन लोगों के काम व सेवा को मैं कलमबध कर सकूँ । जिस निष्काम भाव को मैंने आर्य समाज में आने से पहले पढ़ा था अक्षरसः सही पाया।

मैंने पं. युधिष्टिर मीमांसक जी के सान्निध्य में रहकर निष्काम व निःस्वार्थ शब्द को चरितार्थ करते देखा व पाया। श्री पं. जी ने कर्मकाण्ड को समझाते हुए मुझे कहा था - महेन्द्रपाल जी वैदिक मर्यादा ही इदन्नमम् है। हम औरों के लिये जीते हैं, अपने लिए नहीं। अगर कोई अपने लिए करता है वही

स्वार्थी है, छली और कपटी भी। आज दुनिया के लोग अपने पदों के लिए, कुर्सी के लिए कार्य कर समाज को छल रहे हैं। पूज्य पं. जी के दिये गये उपदेशों को अगर मैं लिखूं तो एक पुस्तक बन जायेगी। मैंने अपने गुरुवर अमर स्वामी जी से भी नि:स्वार्थ का उपदेश खूब सुना है। और उन्होंने अपनी जवानी से लेकर 93 वर्ष की आयु तक कहाँ-कहाँ नि:स्वार्थ कार्य किया उसे दर्शाते रहे।

जीता जागता प्रमाण आचार्य श्री विजय पाल जी बहालगढ़ गुरुकुलाचार्य को कभी मंच के ऊपर माला पहनना ही पसन्द नहीं आया। आचार्य वर हमें सुनाते रहे कि सम्मानाद ब्राह्मणों नृत्येम उदवीजाद विषादिव: अर्थात् ब्राह्मण, पण्डित व संन्यासियों को चाहिये कि सम्मान को विष के बराबर समझे। पर करें तो क्या ? और लिखें तो क्या ? मैंने जो पढ़ा था यहाँ आकर भी सही पाया। मैंने आर्य समाज में आकर संन्यासी, विद्वानों व कुछ अधिकारियों को नि:स्वार्थी निर्लोभी देखकर, मनस्य एकं वचनस्य एकं पाकर अपने को धन्य किया।

पर आज 25 वर्ष के बाद आर्य समाजियों का बन्दर बॉट को, पदलोलुपता को, ऐषणातुरता को, ईर्ष्या, द्वेष व स्वार्थ को देखकर मुझे सब कुछ उल्टा ही प्रतीत हो रहा है। आर्य समाजी कहलाने वाले लोगों अपने पदों के लिये या आर्य समाज के सम्पत्ति के लिए आर्य समाज रूपी पवित्र ऋषि द्वारा स्थापित संस्था को बदनाम क्यों कर रहे हैं?

आर्य समाज के अधिकारी बनने से पहले एक बार यह तो विचार करते कि किस संगठन के आप अधिकारी बन रहे हैं? क्या आप उन ऋषि के बनाये गये नियमों का, आर्य कहलाने वाले वैदिक मान्यता का पालन कर सकेंगे? क्योंकि आर्य शब्द पर विचार करें, तो सभी शंकाओं का समाधान एक शब्द से हो जाना सम्भव हैं। ऋषि दयानन्द लिखते हैं आर्य समाज के दसवें नियम में। सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

शायद आज आर्य समाज के अधिकारी इसी नियम को बदलकर सामाजिक सर्वहितकारी नियम को अपने हितकारी नियम मानकर कहीं आर्य समाज को या आर्यों के शिरोमनी सार्वदेशिक सभा को पुलिस के हवाले कर दिया है।

कई वर्ष पहले मैंने देखा हरिद्वार में आर्य समाज के बाहर कमरे से लेकर गेट तक पुलिस का कब्जा था। और अन्दर कमरे में यज्ञशाला पर किसी ने कब्जा किया था। फिर ऊपर वाला हिस्सा किसी और के कब्जे में था। हम जैसे आर्य समाज के प्रचारकों के लिए भी ठहरने की जगह नहीं थी। पुलिस के पीछे महीने में दस हजार खर्च हो रहा था। न मालूम आज सार्वदेशिक सभा में बैठी पुलिस के पीछे हर महीने कितना खर्च हो रहा है?

आर्य लोगों जरा सोचें तो सही, कि यह खर्च क्यों किया जा रहा है? और यह धन है, किनका है?

जवाब आयेगा, यह खर्च मात्र अपने स्वार्थ के लिये, कुर्सी के लिए, पदों के लिये और आर्य समाज नामी ऋषि द्वारा स्थापित संस्था की आमदनी को आत्पसात करने के लिए व्यय किया जा रहा है। और यह धन किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, अपितु समग्र आर्य जनों का है,

अब जो लोग मात्र पदों के लिए संस्था पर कब्जा जमाने के लिए आर्य जनों के साथ यह खिलवाड़ कर रहे हैं। क्या वह आर्य कहलाने के काबिल हैं? फिर यह अनाधिकार चेष्टा क्यों?

ऋषि दयानन्द ने कहा मनुष्य मात्र का एक ही ईष्ट देव, मानव मात्र की एक ही जाति, मनुष्य मात्र का एक ही धर्म ज्ञान, कर्म और उपासना, व वेद को ईश्वरीय ज्ञान, जिसका पढ़ना-पढ़ाना आर्यों का परम धर्म लिखा है। अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रह कर, सबकी उन्नति को अपनी उन्नति मानने का उपदेश दिया। उसे ताक पर रखते हुये जो लोग अपने स्वार्थ के लिए ऋषि दयानन्द के विचारों का गला घोट रहे हैं भला वह आर्य समाजी क्यों और कैसे हो सकते हैं?

ऋषि दयानन्द के सपने को साकार करने के लिए अपने अहम भाव को त्यागना होगा। समस्त एषणाओं से अलग होकर संसार के उपकार हेतु कार्य करना होगा। समग्र आर्य जनों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम को सामने रख सभी वैमनष्यता को अलग रखते हुये आर्य जनों को एक जुट होना होगा। जब हम आर्य कहलाने वाले ही एक नहीं होगे तो क्या हम वेदवाणी तथा ऋषि दयानन्द के दिये गये वेद मन्त्र-कृणवन्तो विश्वमार्यम को साकार कर सकेगे? क्या ये हो सकेगा? यही वह कारण था कि ऋषि दयानन्द ने आर्यजनों

को वेद से निकालकर संगठन सुक्त का पाठ करने का उपदेश दिया। और जद जपोति तद् कार्य करोति का उपदेश दिया था। अर्थात् जैसा बोलो, वैसा करो।

आज हम आटे में नमक के बराबर आर्य समाजी हैं और वह भी दलगत राजनीति, या स्वार्थपरता में फंस कर दुनियां वालों के सामने मजाक बनते जा रहे हैं। अपने आप ही उपहास के पात्र बन रहे हैं। आर्य समाज के संस्थापक जिन मत-मतान्तरों के पुस्तकों को जाली ग्रन्थ बताया है। और आज उन्हीं बौद्धिष्टों और कम्युनिस्टों द्वारा आर्य समाज व वैदिक मान्यता के ऊपर टीका टिप्पणी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं द्वारा ललकार हमें सहन करनी पड़ रही है।

हंस नामी पत्रिका के माध्यम से राजेन्द्र यादव के लेखों की कटिंग कई बार लोग हमें भेजते हैं, जिसका जवाब में व्यक्तिगत तौर पर देता हूँ। काश आज अगर हम आर्य समाजी कहलाने वाले एक होते, हमारे अधिकारी वर्ग एक होते तो अपनी संस्था के माध्यम से उनको चुनौती देता। पिछले 2004 के प्रथम में डॉ. जाकिर नायक 56/58 टेन्डल स्ट्रीट डूंगरी, मुम्बई वाले का एक पत्र मुझे मिला, जिनका मानना है कि वेद को प्रकाश मिला है कुरान से। जिसका जवाब मैंने पत्र व ई-मेल द्वारा दिया। कई बार रिमाइन्डर भी दिया कोई जवाब नहीं आया।

आज अगर हम आर्य समाजी एक होते तो फिर अपने शिरोमणि सभा की ओर से शास्त्रार्थ हेतु चुनौती देते । कई वर्ष पहले आर्य समाज के प्रचारक धर्मवीर जी झंडाधारी ने लिखा इस्लामिक शिक्षा कट्टरवाद का हैं। उसके जवाब में शान नकवी 38, जौहरी मुहल्ला, अलि वयेज कमेटी की ओर से समग्र आर्य समाज को उसने चुनौती दी। उ.प्र. जौनपुर आर्य समाज के प्रधान श्री तारा नाथ जी आर्य (अब नहीं रहे) विचलित हो उठे। और उसकी प्रति मुझे व लखनऊ आर्य प्रतिनिधि सभा को भेज दी। सभा मन्त्री श्री धमेन्द्र जी का भी (वह भी नहीं रहे) पत्र आया। जवाब देने हेतु, मैंने उस शान नकवी की चुनौती स्वीकार कर एक प्रश्नावली भेज दी। आज 14 वर्ष बीत जाने पर भी उनका जवाब नहीं आया। अगर हम संगठन की ओर से पहल करते फिर विश्व में आर्य समाज का ही जय-जयकार हो गया होता।

अभी पिछले दिन मदरसा बाबुल ऊलुम खलीलाबाद, संत कबीर नगर, उ.प्र. में आर्य समाज खलीलाबाद के कार्यक्रम पर लिखित प्रश्न शास्त्रार्थ के लिये आर्य समाज को चुनौती मिली। सभा में उनके सभी सवालों का जवाब देकर उन आये मौलवियों को जो 22-23 की संख्या में थे निरूत्तर किया। फिर मैंने जब प्रश्न लिखकर दिया उन्होंने हाथ ऊँचा कर दिया। अर्थात् शास्त्रार्थ करने से मना कर दिया। अगर हम एक होते तो संगठन की ओर से उनको ललकारते। विश्व में आर्यों की धाक होती इस्लाम जगत को पता चलता आर्य समाज क्या है?

अभी 2004 के 1 अगस्त को आर्य समाज, नयाँ बाँस, खारी बावली में मौलाना फारुख खान जो पचासों किताबों को हिन्दी में लिखा है। वेद और कुरान में जिन्होंने वेद से पहले कुरान को सिद्ध किया, उनसे मेरा शास्त्रार्थ था उनको मैंने निरुत्तर कर दिया। अगर यह शास्त्रार्थ सार्वदेशिक सभा की ओर से होती तो समस्त दिल्ली के आर्यजनों में जागृति पैदा होती। किन्तु गिने चुने लोगों को छोड़ ओरों को पता भी नहीं लग पाया। कारण, हम संगठित नहीं हैं।

मेरे पास इन 25 वर्षों की अनेक घटनायें है जो स्वप्रमाण मेरे फाइल में मौजूद हैं। सब लिखना सम्भव नहीं। इतने प्रमाण न विमल वधावन के पास है और न अग्निवेश के पास। मैं दोंनो या तीनों गुटों के अधिकारियों से प्रार्थना कर रहा हूँ स्वार्थ की राजनीति में आर्य समाज को बदनाम करना अविलम्ब बन्द करें। और ऋषि दयानन्द का काम पूरा करने के लिये, वैदिक संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाने के लिए। स्वर से स्वर मिलाकर सब एक ओ३म् के झंडे में डंडा लगाकर वेद मन्त्रों का गुंजायमान कर विश्व को दिखा दें कि हम सब आर्य एक हैं क्योंकि हमारा मन्त्र वही है जो परमात्मा का उपदेश है।

समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह, चित्तमें षाम ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।

जब विचार एक होंगे, मन्त्र एक होगा, तो मन को भी एक करना जरूरी होगा। वरना कथनी व करनी में अन्तर हो जायेगा। इसलिए सभी आर्य एक हो जायें ।। ❁❁❁

इन बेजुबानों को काटने से पहले अल्लाह से डरें

*****

कुरानानुसार अल्लाह रहम करने वाला है, मेहरबान है और दयालु है। बिस मिल्ला हिर रहमा निर रहिम और इस्लाम के प्रवर्त्तक को रहमा तुल्लिल अलमीन। अर्थ सभी जीवों पर दया करने वाला और नबी ने कहा पूरी मखलूक अल्लाह का प्यारा कुन्बा है और उन्होंने जानवरों के साथ बेरहमी करने वालों को बार-बार ताकीद की थी, कि इन बेजुबानो को मारने से पहले अल्लाह से डरो।

उन्होंने अपने घर में खटमल जूँ और कीड़ों को मारने पर भी पाबन्दी लगा दी थी। यहाँ तक कि अपने लश्कर को भी हुकम दिया था कि अगर चींटी भी गुजरने लगे तो अपने लश्कर को रोक दो। और चींटी की लाईन को गुजर जाने दो।

आज तक दुनिया के किसी कोने से भी मुसलमान हज करने जाते हैं तो मक्का के मस्जिदों में कबूतर को कोई कंकर तक नहीं मार सकता। सरकार उसे आज तक दण्ड सुनाती है। मात्र इतना ही नहीं अपितु नमाज़ में सिजदा करते समय अपने पेशानी (कपाल) के रगड़ से कोई चींटी तक न मरे यह हुकुम हजरत मुहम्मद सललल्लाहो अलई हे वसल्लम का है।

इस पर गहराई से अगर विचार किया जाये कि जिस रसुल ने इतनी छोटी सी चींटी पर भी रहम तथा दया करने की बात की हो और उसकी दया व करूणा बेजुबानों पर रही हो। फिर आज इन बेजुबानों को काटते समय, अल्लाह व रसूल से डरते क्यों नहीं?

इससे बात स्पष्ट हो जाती है कि मुसलमान कहलाने वाले अल्लाह व अपने नबी पर आकीदा नहीं रखते। और अगर यह मान लिया जाये कि मुसलमान जो कर रहे हैं वही ठीक है, तो अल्लाह ने कुरान के सुरा बकर व सुरा मायदा में कहा। इन्नामा हर रमा अलई कुमुल मईतता वद् दमा व लहमल खिनजीर, वमा ओहिल्ला बिही ले गैरिल्लाह।

अर्थ – हराम किया गया तुम्हारे लिए मरा हुआ जानवर, जमा हुआ खून सुअर का गोश्त और गैरूल्ला के नाम से जब किया जानवर।

विचारणीय बात यह है कि पहला शब्द ही मरा कहा – तो मरा अर्थात् जिसमें प्राण न हो, वह मरा है। अब उसका कोई गला काटे, गर्दन मरोड़े, पेट में छूरी डाल दे। पानी में बह जाये, आग में जल जाये। हर हालत में जानवर मरा ही होगा। इधर जिन्दा खाया नहीं जाता, और मरा खाना हराम है, तो आखिर लोग खाते कब हैं?

इन्सान अपनी जीभ के स्वार्थ के लिए रजाये इलाही (ईश्वर कृपा) प्राप्त करने के लिए मजहब व खुदा के नाम से या तो देवी और देवता के सामने बेकसूर, मासूम, मजबूर व बेबस जानवरों पर बेरहमी से गले में छूरी चला कर अल्लाह का खुश नूदी को प्राप्त करना चाहता है। जब अल्लाह मेहरबान है हर जीवों पर तो क्या जिन जानवरों के गले में छूरी चलाई जा रही है अल्लाह उन पर रहम नहीं करते। तो इस्लाम का कुरान तथा मुसलमानों का अल्लाह ही बेरहम है?

अवश्य यह बात भी सच है कि कुरान, हदीस व इस्लाम को अद्योपान्त अध्ययन करने पर पता लगता है या स्पष्ट हो जाता है अल्लाह ही बेरहम है। किसी ने खूब कहा। बन्दे को देखकर मुनकिर हुई है दुनिया की, जिस खुदा के हैं यह बन्दे वह कोई अच्छा खुदा नहीं है।

दरअसल कुर्बानी का अर्थ है समर्पण और कुरान के मुताबिक यह हुकुम हजरत इब्राहीम नामी पैगम्बर को ही अल्लाह ने स्वप्न दिखाकर हुकुम दिया कि अपनी प्यारी वस्तु को मेरे रास्ते में कुर्बान करो। लगातार तीन दिन स्वप्न आया और सौ-सौ ऊँट काटते रहे। फिर स्वप्न देखा जब इब्राहीम अपने पुत्र इस्माईल को कुर्बानी देने को ले गये और उनके गले में छुरी चलाई। इधर अल्लाह ने छुरी को मना किया काटना मत। जब फिर इस्माईल ने अपने पिता से कहा आँख में पट्टी बांध ले। एक कपड़े को सात तय लगाकर आँख में बाँधकर इब्राहीम ने अपने पुत्र को काटना प्रारम्भ किया। जब अल्लाह ने जन्नत से दुम्बा भेज दिया और वहाँ इस्माईल के स्थान पर दुम्बा काटा गया। यह

अल्लाह का इम्तेहान था और इस इम्तेहान से इब्राहीम को अल्लाह ने खलीलुल्लाह और इस्माईल काजबीहउल्लाह के नाम से पुकारा। यह है कुरान और कुरान का अल्लाह या खुदा। इस पर अनेक प्रश्न उठाये जा सकते हैं जिन प्रश्नों पर इस्लाम मौन है।

आज ईदुज्जोहा के मौके पर बेजुबान जानवरों के गले में छुरी चलाकर मात्र मुसलमान इब्राहीम व इस्माईल को याद करते हैं। और अल्लाह का आदेश मानकर मात्र जानवरों के गोश्त से उदर पूर्ति कर रहे हैं। किन्तु समर्पण का जो आदेश था वह गौण हो गया। जो आदेश गीता में योगीराज श्रीकृष्ण ने भी दिया। माँ फलेषु कदाचणा, निष्काम से कार्य करो - या फल की उम्मीद न रखकर काम करो आदि ।

रही बात कुरान और अल्लाह की, जिस कुरान को आप ईश्वरीय ज्ञान मान रहे हैं तो देखें कुरान ईश्वरीय ज्ञान होना तो अलग रहा कुरान में ही बुद्धि विरूद्ध बात है। जैसा ऊपर लिखा है अल्लाह ने इब्राहीम को इम्तेहान लेना चाहा तो। अल्लाह जो अलेमुल गैब है यह कैसा सिद्ध होगा? अर्थात् अदृश्य के बातों को जानता है। फिर उसे इम्तेहान क्यों लेना पड़ेगा। दूसरी बात अल्लाह ने छुरी को मना किया कि इस्माईल को काटना मत। छुरी में तेज धार नहीं थी यह तो सम्भव है। पर अल्लाह ने उसे काटने को मना किया यह बुद्धि विरूद्ध है। फिर जन्नत से दुम्बा लाया अच्छा जब इब्राहीम अपने बेटे को काट रहे थे, तो क्या वह आँख में पट्टी बांधे हुये थे तो क्या बेटे को हाथ से पकड़ा नहीं था? अगर पकड़ा था तो पता कैसे नहीं लगा? जो हटाकर दुम्बे को रख दिया गया?

एक बात अवश्य पाठकगण ध्यान में रखना, जिस जन्नत में दुम्बा रहता है वह तो पवित्र भी नहीं रहता होगा?

तीसरी बात है कि आज भी मुसलमान कुर्बानी देते हैं तो उस गोश्त को तीन हिस्सों में बांटते हैं एक अपने लिए, दूसरा अपने रिश्तेदारों को देने के लिये और तीसरा हिस्सा गाँव, मुहल्ला, आस-पास के लोगों के लिए। यह पूछा जाये कि हजरत इब्राहीम ने जब दुम्बे को काटा था, तो उस गोश्त के कितने हिस्से

किये थे? और किनको-किनको दिया गया था? क्योंकि वहां न रिश्तेदार और न ही पड़ोसी और न कोई मांगने वाला था? दुनिया के किसी कोने के मुसलमान ने आज तक अपने बेटे की अल्लाह के रास्ते में कुर्बानी नहीं दी। और न इब्राहीम के बाद ही किसी ने दी होगी।

रही बात हज करने की तो मुसलमान यह मानते हैं कि हज करने पर अल्लाह ताला गुनाहों को माफ कर देते हैं और हज करते समय मरने पर सीधा जन्नत दाखिल कराते हैं, आदि।

अभी 18 जनवरी 2007 शाम 7 बजे के समाचार में दिखाया जा रहा था भारत में आज आखरी जत्था मुम्बई से जा रहा है उन हज यात्रियों से पूछा जा रहा था और वह लोग यही कह रहे थे कि अल्लाह हमारे गुनाह माफ करेगा। इससे इस बात का भी खुलासा हुआ कि जितने लोग हज के लिए जा रहे हैं वह सब पापी हैं, वरना अपने किये पापों को क्षमा करवाने क्यों जाते भला? कुछ हद तक यह सही भी लगता है कि इन पापियों के पाप को अपने पास लेते-लेते संग असवद पत्थर भी काला पड़ गया है।

एक तमाशा और भी है कि इस्लाम की दृष्टि में भारत राज्य है काफिरों का। और भारत सरकार प्रत्येक हज यात्रियों को बीस हजार रूपया सबसिडी दे रही है। तो क्या शरीयत के दृष्टि में यह काफिरों के दिये गये दया दृष्टि व दान से हज का फर्ज अदा होना सम्भव है? भारत के मुसलमानों ने आज तक इस पर विचार हीं नहीं किया। और न ही किसी मुफ्ति इस पर कोई फतबा जारी किया। तो क्या इस्लाम की परिभाषा स्वार्थ समझा जाये? कम से कम भारत में रहने वाला मुसलमानों को चाहिये कि भारतीयता को स्वीकार कर प्रत्येक जीवों पर दया कर ही परमात्मा के सानिध्य को प्राप्त करें। क्योंकि वेद में कहा गया आत्मवत् सर्वभूतेषु अर्थात् प्रत्येक आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझना। इससे परमात्मा का पाना आसान है।

हिन्दू मन्दिरों के ढाक ढोल, एक-एक कर खोली सभी पोल

*****

मूर्ति पूजना, मन्दिर बनाने का काम बौद्ध तथा जैनियों से प्रारम्भ हुआ जो इतिहास है अब तक का। और उस काल से लेकर अब तक मात्र भारत में ही नहीं, अपितु विश्वभर में न मालूम कितने मन्दिरों को तोड़ा गया और कितने मूर्तियों को भी। इधर हिन्दुओं की आस्था है अपने देवी-देवताओं के मूर्ति पर कि इनमें दैवी शक्ति है।

इतिहास साक्षी है, यवन काल के पहले व यवन काल से अब तक अनेकों मूर्तियों को तोड़कर लोगों ने यह प्रमाणित कर दिया कि मूर्ति में कुछ शक्ति न थी, न है और न आगे कभी शक्ति होना ही सम्भव है।

सही पूछिए तो मूर्ति पूजने वाली कौम अगर समझदार होती तो मूर्ति पूजा अब तक विश्व के आंगन से मिट गया होता। इन सभी मूर्तियों ने एक-एक कर सारी पोल ही मानों खोलकर रख दी हो। उदाहरण के रूप में आदि गुरू शंकराचार्य ने अपने कार्य काल में न मालूम कितनी मूर्तियाँ तोड़ी ? यहाँ तक कि जैनी लोग शंकराचार्य के डर से मूर्तियों को जमीन के अन्दर छुपाते रहे। जीता जागता प्रमाण आज भी कहीं-कहीं जमीन खुदाई करते समय निकल रही है और वह मूर्ति धातुओं के होने हेतु नष्ट भी नहीं हुआ आदि। अगर मूर्ति में कुछ शक्ति होती तो अपनी रक्षा तो स्वयं करती? मानव समाज का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि इसे देखकर भी शिक्षा नहीं लेते। उस बौद्ध तथा जैन काल में ही वैदिक विद्वान महान त्यागी व तपस्वी ने दिखा दिया मूर्ति तोड़कर और कहा पाषाण पूजना मूर्खता है। वर्तमान समय में शंकराचार्य के शिष्य तथा अनुयायी गण ही मूर्ति पूजने तथा मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करने में किंचित मात्र भी संकोच नहीं करते। और शंकराचार्य के सिद्धान्त के विरूद्ध आचरण करने में न हिचकते। मूर्ति में शक्ति है या नहीं इसका ज्यादा प्रमाण मुगल काल से लेकर अब तक विशेष कर इतिहास के अनेक प्रमाण हमारे सामने उपलब्ध है।

इस्लामिक इतिहास से भी पता चलता है कि इब्राहीम नामी एक पैगम्बर हुए ईसाई या बाईबिल में जिन्हें अब्राहम कहा है। उनके पिता का नाम अजर था, जो कि मूर्तिकार था, उसने अपने पुत्र को मूर्ति पूजने को कहा। जवाब में बेटे इब्राहीम ने पूजने से मना किया और कहा जिन्हें आप अपने हाथों से बनाते हैं उन्हें ही आप पूजते हैं तथा अन्यों को भी पूजने हेतु कहते हैं। पूजते भी उन्हें हैं जो न बोले न खाये, पिये, और न ही कोई हरकत करे। उसे यह भी पता नहीं कि उसके सामने कोई हाथ जोड़ा या नहीं? फिर यह मूर्खता मैं क्यों करूं? उससे तो आप ही मेरे लिये पूजनीय है। फिर इब्राहीम ने कहा कि मैं उसे पूजना उचित समझता हूँ जिसका कोई बनाने वाला हो, जो स्वयं सिद्ध हो। जो कभी फना या मिटने वाला न हो, जो सदा से है और सदा ही रहने वाला हो। वही एक मात्र पूजनीय है। एक दिन खुशी के अवसर पर पिता अज़र ने अपने पुत्र इब्राहीम से कहा आज चलो तुम्हें कहीं से घुमा लाता हूँ। परिवार तथा गाँव वाले भी जा रहे हैं तुम भी घूमने का आनन्द लो। पुत्र ने मना किया जाने से। जब एक-एक कर सारे घुमने निकल पड़े तो इब्राहीम अब तक तो मूर्ति पूजने से लोगों को रोकते रहे। मूर्ति निर्जीव है कहते रहे। उसने इसे सत्य प्रमाणित करने हेतु मन्दिर में पहुंचे और कुल्हाड़ी से मूर्तियों को तोड़कर एक बड़ी मूर्ति जिसे छोड़ दिया और कुल्हाड़ी उसके कंधे पर रखकर घर आ गये। इधर शाम को लोग घूमकर जब लौटे तो पूजा करने हेतु मन्दिर में जा पहुंचे। जो देखा बड़ी मूर्ति कंधे पे कुल्हाड़ी लिये खड़ी है और सभी मूर्ति टूटी पड़ी हैं। लोगों को समझने में देर नहीं हुई कि यह काम इब्राहीम का है। क्योंकि मूर्ति पूजना व्यर्थ है इसका प्रचार इब्राहीम ही करते रहे। अतः मूर्ति में शक्ति नहीं है इब्राहीम ने यह सिद्ध कर दिखाया। और सही पूछिये तो अफगानिस्तान में तालीबानों ने इब्राहीम का ही अनुकरण किया और तोपों से म्यामार में मूर्तिओं को उड़ाया।

भारत का इतिहास साक्षी है मुहम्मद गौरी सोलह बार पृथ्वीराज से हारे, पर हिम्मत नहीं हारी। पुनः उसने शिवालय के पुजारी को पटाया। और पृथ्वी राज को युद्ध की रणभेरी बजाने से रोका। और कहा आपके रणभेरी बजाने पर शिवजी के नींद में बाधा पड़ेगी और शिवजी का कोप भाजन होना पड़ेगा।

पुजारी ने रणभेरी बजाने से रोका युद्ध की तैयारी नहीं हो पाई सेना को युद्ध की जानकारी नहीं दे पाये और उसी युद्ध में भारत गुलाम हुआ मुसलमानों का। पृथ्वीराज भी मूर्ति पूजते-पूजते जड़ बुद्धि वाले हो गये। पुजारी को नहीं समझा पाये कि जिस शिव को अपने अन्न जल से भोग लगवाते हैं। और वही शिव हमारे रणभेरी बजने पर असन्तुष्ट हो जायेंगे। और हमारे शत्रु पक्ष के रणभेरी से असन्तुष्ट नहीं होते। तो ऐसे शिव को हमें तिलान्जलि देनी चाहिये। अब मुसलमानों का वर्चस्व कायम हो गया, तो सोमनाथ मन्दिर टूटा, काशी में विश्वनाथ मन्दिर टूटा। शिव मूर्ति को कुएं में फेक दिया। राम मन्दिर टूटकर बाबरी मस्जिद बनी। मथुरा में मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाया गया, बंग्लादेश के ढाका में रमना काली मन्दिर को तोड़ा गया आदि।

अगर मूर्ति में शक्ति होती तो क्या वह अपनी रक्षा स्वयं नहीं करते? किन्तु मूर्ति पूजने वालों को आज तक यह बुद्धि नहीं आयी कि जो अपनी रक्षा नहीं कर सकते, तो हमारी रक्षा भला कैसे कर सकते हैं? आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने भी शिवरात्रि को शिव की मूर्ति पर चूहा का मल-मूत्र करना तथा शिव के चूहे को न भगाना देखकर ही कहा कि यह शिव कल्याणकारी नहीं हो सकते। जो चूहे को अपने ऊपर मल-मूत्रादि करने से नहीं रोक सकते। फिर वह हमारा तथा दूसरे का भला कैसे कर सकते हैं? और दयानन्द से अनेक वर्ष पहले राम मोहन राय ने अपने पिता से कहा था कि बाबा जिस मूर्ति को इन्सान बना रहे हो, उसके सामने हम नतमस्तक क्यों और कैसे करें? पिता रमाकान्त राय के पास कोई जवाब ही नहीं था। और उस समय ब्राह्मण समाज ने राजा राममोहन राय को बदनाम करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। इस सन्दर्भ में राजा राम मोहन राय का कहना था चाहे मुझे कितना भी अपमान सहना क्यों न पड़े। फिर भी मैं कहूंगा मूर्ति में कोई भी शक्ति नहीं। इसको पूजना व्यर्थ है तथा वेद में मूर्ति पूजा सर्वथा वर्जित ही है। मूर्ति के सामने नतमस्तक होना मानवता के भी विपरीत है। क्योंकि राजा राम मोहन राय मात्र बंगला भाषा के ही ज्ञाता नहीं थे, अपितु अरबी, फारसी, अंग्रेजी के अतिरिक्त वह एक संस्कृतज्ञ विद्वान थे।

राजा राम मोहन राय मुसलमानों को भारत में मूर्ति व मन्दिर तोड़ने वाले

काल को भी भली भांति देखा था। और अपने कौम को यही संदेश दिया था कि जड़ को पूजना छोड़, चेतन को पूजना चाहिये। मूर्ति पूजने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

इस्लाम के आगाज में भी काबा से 360 तीन सौ साठ मूर्तियों को तोड़ कर ही उस मन्दिर को मस्जिद बनाया गया था। भारत तो उसका जीता जागता नमूना है। इतना सब कुछ होने पर भी मूर्ति पूजक यह मानते हैं मूर्ति में दैवी शक्ति है न मालूम परमात्मा इन्हें सद्बुद्धि क्यों नहीं देते?

अवश्य इसका जवाब बड़ा सरल ही है कि जो कौम इतिहास से शिक्षा नहीं लेती परमात्मा भी उस कौम को नहीं बचा सकते ठीक यही हो भी रहा है।

सन् 1992 में जब अयोध्या में ढांचा गिराया गया तो कश्मीर में न मालूम कितने ही मन्दिरों को तोड़ा गया। मूर्ति पूजक मानते हैं मूर्ति में दैवी शक्ति है पिछले दिनों में दो बार अमर नाथ यात्रियों को आतंकवादियों ने मार कर दिखा दिया। तुम्हारे देवी देवताओं में कोई शक्ति नहीं है। कोई शक्ति है तो मुकाबला करें। शायद उन आतंकवादियों ने यह भी कहा होगा। अरे अकल के अन्धे लोगों, किन्हें तुम अमरनाथ कह रहे हो? जो तुम्हारे बच्चों को अनाथ कर रहे हो? तुम्हारे अमरनाथ से कहो कि हम आतंकवादियों के हाथों से तुम्हें बचाकर तुम्हारे बच्चों को अनाथ होने से जरा बचाऐं तो सही। इतना सब कुछ देखकर, सुनकर, जानकर भी तुम लोगों की आँखें नहीं खुलती। तो लो और देखों अभी गुजरात में तुम्हारे अक्षरधाम मन्दिर की मूर्तिओं को हम लोगों ने तोड़ कर दिखा दिया कि मूर्ति जड़ है।

दूसरी बात यह है कि मूर्ति पूजक विचारशील नहीं है क्योंकि हमें नित्य प्रति देखने सुनने तथा पढ़ने को मिलता है फलां मन्दिर से इतने आभूषणों को चोर ले गये। किसी देवी या देवता ने अपने आभूषण की रक्षा नहीं की और न ही चोर को पकड़ सके। अपितु पुलिस का ही सहयोग लेना पड़ता है। मूर्तिपूजकों को चाहिए था मूर्ति न पूजकर पुलिस को ही पूजते। अभी उड़ीसा में भी एक मन्दिर काण्ड सामने आया और सरकार से यह मांग की गयी कि पुजारियों को हथियार से लैस करना चाहिए। इस सन्दर्भ में भी मूर्तियों ने पोल खोली कि भक्तजन हम तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकते, अपितु आप भक्त जन ही हम देवी देवताओं के रक्षक हैं।

आखिर किनके लिए है यह सभी योजनाएँ?

*****

मात्र भारत में ही नहीं, अपितु विश्व के किसी भी देश की ओर दृष्टि पात करें सभी जगह आप को देखने व सुनने को मिलेगा योजनायें बनाई जा रही है,

अब वह योजना देश चलाने के लिए हो, कारखाना चलाने का हो, कोई छोटी सी वस्तु बनाने से लेकर एटम बम या हाई ड्रोजन बम बनाने तक की योजना हो। या फिर घर चलाने के लिये ही क्यों न हो? वर्तमान समय में समुद्री लहर या जमीन पर आ रहे भूकम्प का पता लगाने की यन्त्र बनाने की योजना बड़े पैमाने पर चल रही है। जो दो वर्ष समय लग जाने की योजना हैं। परन्तु यह योजना किन के लिए हो रही है? विश्व के किसी भी वैज्ञानिको के पास इसका जवाब नहीं है,

विशेषकर आज वैज्ञानिक युग में, या विज्ञान के युग में बड़े से बड़े मकानों से लेकर कम्प्यूटर तक, और अणु व परमाणु तक बनाने की योजना चल रही है। इसी होड़ में किसी को एफ 16 दिया तो किसी को एफ 18 देने की योजना है। इन सभी योजनाओं के अन्तर्गत सभी सुविधा को आसानी से प्राप्त करने की होड़ है। एक विदेशी वैज्ञानिक मैक्सिम गोर्की अपना उपदेश दे रहे थे और कह रहे थे कि देखो पहले एक दीप जलाने के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता था? अब दीवार पर हाथ रखते ही प्रकाश हो जाता है। महिनों की यात्रा घण्टों में और घण्टों की यात्रा मिनटों में होने लगी है। ऐसी अनेक उदाहरण उन वैज्ञानिक ने दिया और कहा मात्र यह विज्ञान का कमाल ही तो है। जो हम खोज कर फिर योजना बनाते हैं और वस्तु को सामने ला खड़ा करते हैं, आदि

इस उपदेश को बहुत सारे बैठे सुन रहे थे। एक देहाती ने कहा, मान्यवर आपका कहना सब सच है, कि विज्ञान ने बहुत कुछ बनाया, परन्तु क्या विज्ञान ने मनुष्य को, मनुष्य बनना भी सिखाया? उस वैज्ञानिक ने उस देहाती को ऊपर से नीचे तक देखा, फिर गर्दन नीची कर ली। फिर उस देहाती ने कहा महाशय अगर विज्ञान मानव को मानव बनाते फिर आज यह अशान्ति क्यों होती?

लड़ाई, झगड़ा, आनाचार, अत्याचार, अविचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, में लिप्त क्यों होते?

आज सब लोगों की दौड़ हो रही है, कौन सबसे ज्यादा विनाश कर सकता है। कौन अधिक लोगों को मार सकता है? कौन किस देश पर कब्जा कर सकता है। कौन किस देश को बर्बाद करने का हथियार बना सकता है। मात्र इसी की योजना बन रही है,

विशेषकर रूस, और अमेरिका दोनों दौड़ रहे हैं। पहले वर्तानिया भी इस दौड़ में शामिल था, और एक, एक परिक्षण में अरबों रुपया खर्च होता है। क्या यह खर्च सुख तथा शान्ति के लिए किया जाता? जो शान्ति मनुष्य को चाहिये? बिल्कुल सीधा सा जवाब है विज्ञान से सुख अथवा शान्ति प्राप्त नहीं होती। सुख शान्ति धर्म युक्त आचरण वाले मनुष्यों से उत्पन्न होती है और अच्छे मनुष्य बनाना यह विज्ञान व वैज्ञानिकों की बसकी बात नहीं और न यह मनुष्य बनाना संसार के किसी मत् वाद वालों के पास है। क्योंकि यह मत् वाले, कोई हिन्दू बनाने में लगे हैं, कोई मुसलमान बनाने में लगे हैं। कोई ईसाई बनाने में लगे हैं कोई जैनी, बौद्धिष्ट व सिख बनाने को आतुर हैं। या तो कोई पूँजीवाद का प्रचारक है, या साम्यवाद का प्रचार कर रहा है। या फिर कोई समाज वाद का प्रचारक है। आश्चर्य इस बात का भी है कि यह सब एक दूसरे के विरोधी हैं और एक दूसरे के शत्रु भी। एक विचित्रता की बात यह भी है कि यह आपस में लड़ते हुये एक दूसरे का विरोध करते हुये भी एक ही लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, और यह लक्ष्य है पैसा। मैं 1985 से 1991 तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की और से आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल में प्रचारक रहा। और यह भी जग जाहिर है कि बंगाल प्रान्त में कम्युनिष्टों की सरकार है और वह भी अर्सों से। एक कॉमरेड ने मेरे से प्रश्न किया, आप आर्य समाज की बात करते हैं परन्तु आर्य समाज के पास रोटी का हल कहां है? जब रोटी का हल नहीं, फिर इससे लाभ ही क्या है?

जवाब में मैंने कहा भाई प्रश्नों का हल मात्र आर्य समाज के पास है, आप जिस रोटी की बात करते हैं, उसे जो गैर कम्युनिष्ट भी कर रहा है तथा सारे सम्प्रदाय वाले भी उस रोटी की बात कर रहे हैं। परन्तु आप ध्यान नहीं दे सकते उस बात पर कि रोटी हमारे लिए है या हम रोटी के लिए?

क्योंकि रोटी, कपड़ा और मकान से ही सब काम बनना नहीं है। इसके अतिरिक्त मनुष्यों को और भी बहुत कुछ की आवश्यकता होती है, जिसे सुख, और शान्ति कहते हैं। आप रोटी रोटी चिल्लाते रहो शान्ति पाना सम्भव नहीं। क्योंकि आप जब रोटी खाने योग्य भी नहीं थे परमात्मा ने आपका पेट भरने के लिए माँ के आँचल में दूध दे दिया कि मेरा पुत्र भूखा न रहे। वह आपके मांगने से पहले दिया, आप के जरूरत से ज्यादा दिया, दुर्भाग्य से आप ईश्वर को ही नहीं मानते।

रूस में मार्क्सवादी बड़े सर्वनाश के पश्चात शासन के स्वामी बने थे, पूंजी वादियों को चुन, चुनकर मार डाला और कम्युनिष्टों की सरकार बनी। फिर वही मार्क्सवादी स्टालिन ने स्वयं ही कम्युनिष्टों पर अत्याचार किया। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि जितने भी वाद है उससे मनुष्यों को सुखी बनना सम्भव नहीं है।

आज देश भर में जितने भी राजनैतिक पार्टियां है, सबका दावा है कि देश का भला करेंगे और सबका लक्ष्य भी एक ही है कि किसी प्रकार राज्य सत्ता हमारे हाथ में आ जाये फिर देश का देशवासियों का भला हो या न हो। अपना कई पीढ़ी का तो भला होगा ही। अभी होली के दिन उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जिले में उतरौला कस्बे में झगड़ा हो गया। सरकार परेशान कर्फ्यू लगा, कितनी दुकानों और मकानों में आग लगा दी गई। इन मतवादियों ने एक-दूसरे को आपस में लड़वा दिया। जैसे राजनीति में लोग लड़ते हैं, भले ही और किसी प्रान्तों में राजनैतिक पार्टी आपस में लड़े या न लड़े पर पश्चिम बंगाल में तृण मूल कांग्रेस और सी.पी.एम. तो कौन किसके कितने को मार सकते हैं इसी की प्रतियोगिता हो रही है।

मेरे पुत्र ने पूछा पिता जी उतरौला में हो या बंगाल में यह लोग आपस में लड़ते क्यों हैं? जवाब में मैने कहा बेटे यह मनुष्य नहीं लड़ रहे हैं, यह लड़ाई तो उतरौला में हिन्दू मुस्लिम की हो रही है और बंगाल में कांग्रेस+कम्युनिष्ट पार्टी की लड़ाई हो रही है। क्योंकि कोई भी मतवादी हो या राजनैतिक दल, मनुष्यों को पशु तो बना सकती है किन्तु मनुष्य बनाना इन लोगों की बसकी बात नहीं। क्यों कि एक सम्प्रदाय वाले दूसरे सम्प्रदाय वाले को तो अपनों में

मिला सकते हैं। और करोड़ों खर्च कर भी ईसाई अन्यों को अपनों में मिला रहे है। और इस्लाम भी पेट्रो डालर लगा कर इस कार्य को अंजाम देने में लगे हैं, परन्तु यह लोग मनुष्य नहीं बना सकते।

यही हाल प्रत्येक राजनैतिक पार्टी के साथ है एक पार्टी को छोड़ दुसरी पार्टी को पकड़ लेते हैं। अब कोई थैली लेकर जाय, या खाली हाथ जाय। पर याद रखना यह इन राजनैतिक पार्टियों द्वारा भी किसी को मनुष्य बनाना सम्भव नहीं। प्रत्येक देश में योजनायें बनती हैं, बड़े-बड़े बाँध बनते हैं, धरती के सिंचाई के लिए नहरें बनती हैं, पर्वतों को चीर कर झील बनाई जाती है। उसी पानी से विद्युत पैदा करते हैं, बड़े-बड़े कारखाने बनते हैं आदि। यह सब कुछ ठीक है और अच्छा है, परन्तु यह सब कुछ जिसके लिए बनाते है, वह मनुष्य कहां है? और मनुष्य बना कौन रहा है?

अगर मनुष्य नहीं बना तो इस बगीचे से लाभ कौन उठा सकता है? जहां तरह-तरह के फूल खिले हो, मखमल जैसे घास पर चाँदी जैसें फव्वारे लगे हों पास में मेज भी लगा हो खाना भी देशी व विदेशी लगे हो, पीने हेतु मधु, शर्बत भी। जिनके लिए यह कुछ व्यवस्था है कहीं वह गन्दगी में पड़े हों? कपड़ों में गन्दगी लगी हो? शरीर से पीप निकल रहा हो या खून से लत पत हो? बैठने के काबिल न हो? या मुख खोल नहीं पा सकते हों? और उसको भूख भी न हो फिर यह सब व्यवस्थायें और योजनायें किन के लिए हैं? किसी ने खूब कहा=मस्जिद तो बना ली शब भर में, ईमां की हरारत वालों ने, मन तो अपना पुराना पापी है, बरसों से नमाजी बन न सका।

अगर नमाजी नहीं, तो मस्जिद का क्या होगा? अगर देवता नहीं फिर मन्दिर का क्या काम? विश्व भर में आज यही हो रहा है, यदि मानव न बनें कोई। फिर यह कला कौशल, निर्माण और यह उन्नति किन के लिए है? आदि सृष्टि में परमात्मा ने अपने सन्तानों को उपदेश दिया, शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा: अरे तुम सब एक हो अमृत परमात्मा के पुत्र हो। फिर कहा=अज्येष्ठासों अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधु: सौभगाय।। अर्थात् तुम में कोई छोटा या बड़ा नहीं, तुम सब एक पिता के पुत्र हो मिलकर समृद्धि के लिए, सौभाग्य के लिए आगे बढ़ो, योजना बनाओं। यही थी वह परमात्मा की योजना मनुर्भव

की योजना। मानव बनने की योजना। किन्तु आज इस चका चौधं की दुनिया में मानव बन कर कोई राजी नहीं। कोई हिन्दू या मुसलमान, या ईसाई या फिर पूंजीवादी, समाजवादी, या फिर साम्यवादी बनना चाहते है। यह विचार मात्र वैदिक सिद्धान्त के प्रचारक आर्य समाज ही दुनिया वालों को दे सकता है। यद्यपि आर्य समाजी उसे अपने आचरण में न लावें वह अलग बात है, या आर्य कहलाने वालों के लिए शर्मनाक बात है।

किस बात की आजादी ?

*****

पिछले 1947 से तुम प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को हमारी इस पृथ्वी पर निरन्तर अपने हिसाब से आते रहते हो, पर हम तो तुम्हें अपनी भावनाओं से जोड़ कर ही देख पाते हैं।

अब से 59 वर्ष पहले जब तुम पहली बार आये थे, तो भारत के लोगों के मन में कितनी उमंग थी। लगभग दो शताब्दी की पराधीनता के पश्चात वह स्वाधीनता का पंहला ही दिन था। विदेशियों की दासत्व में रह कर हम भारतियों ने कितने कष्ट भोगे थे और अपनी पराधीनता की बेड़ियों को काटने के लिए हमने कितना संघर्ष किया था शायद तुम को याद भी होगा। हांलाकि तुम्हारे आने के पश्चात हम जो नई पीढ़ी देश में आये हैं। शायद हमें उस संघर्ष मय इतिहास का आभास भी नहीं। बल्कि बहुतों को तो उस युग की कथायें किसी स्वप्न लोक की कथायें मालूम होती होगी। तुम्हारे आगमन की प्रतिक्षा में कितनी राते बेचैनी में लोगों ने काटी, और अन्तिम समय तक सन्देह बना रहा उन लोगों के दिल में, कि ऐन वक्त कोई अडंगा न खडा हो जाये और अचानक तुम न आ पाओ। पर नहीं आखिर तुम आ ही गये, और पूरी शान के साथ आये, यहा तक कि, धूम, धड़ाके के साथ आए, हालांकि देश के विभाजन की टीस हरेक के दिल में चुभी होगी। उस समय लम्बे काफिलों पर काफिले पाकिस्तान से निकल कर भारत माँ की गोद में आने को छट-फटा रहे थे।

माँ का आँचल पाकिस्तान से आने वालों के खून से तर था, सब देशवासिओं की आँखें उनके दर्द से गीली थीं, कैसा विचित्र दृश्य रहा होगा, पांण्डुचेरी में बैठ कर ऋषि अरविन्द आंसू बहाते हुये कह रहे थे, ऐ माँ आज मैं बहुत ही खुश हूँ अनुशीलनी पार्टी को छोड़ कर मुझे छदम् वेश लेना पड़ा था दुश्मनों के हाथ से तुझे छुड़ाने का जो संकल्प लिया था आज वह संकल्प पूरा हुआ। पर ऐ माँ हमारे लोगों ने तुझे ही काट कर टुकड़ा बना डाला। और आज वही सिरदर्द बना। अगर तेरे साथ यह खिलवाड़ न करते तथा तुझे टुकड़ा

न बनाते न यह पाकिस्तान बनती और न यह 59 वर्ष बाद ही कारगिल में भारत माँ के सपूतों को शहीद होना पड़ता और न सीमाचीन को कारगिल के साथ जोड़ने का सुझाव अमरीका को ही देना पड़ता । अगर भारत माँ को टुकड़ा न करते तो भारत माँ के सपूत जो नियन्त्रण रेखा के निरीक्षण, उड़ान से करते समय विमान के बिगड़ जाने पर पैराशुट से प्राण रक्षार्थ शरण लेने को नीचे उतरे। दुर्भाग्य से वह भू-भाग का नाम ही पाकिस्तान हो चुकने हेतू पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा प्राण गवाना पड़ा । उस वीर को क्या पता था, कि मेरा विमान बिगड़ने वाला है पाकिस्तान की सरज़मीं पर और तू वहाँ शरण भी नहीं पा सकता ? तेरे चार वर्ष के पुत्र ही तेरा मुखाग्नि करेगा? यहीं तक ही नहीं छः भारतीय सैनिकों को किस प्रकार यातना दे दे कर मारा गया। किसी को सिगरेट के आग से दागा, और किसी की आँखे निकाल ली तथा किसी के मूलेन्द्रियों को काटा आदि।

और यह नर संहार आज भी जारी है और यह कब थमे कोई ठीक भी नहीं। सारे मुल्कों के विरोध करने पर भी पाकिस्तान मानने को तैयार ही नहीं। क्योंकि वह हिस्सा तो भारत जैसे अपवित्र स्थान से अंलग हो कर ही पाक बना है। क्योंकि यह नापाक थे, और सौभाग्य से पाक के प्रधानमंत्री भी मुशर्रफ परन्तु उनकी शराफत का पता तो विश्व प्रसिद्ध हो गया कि कहते कुछ और करते कुछ हैं।

जिस दिन उसका नामकरण हुआ उसी दिन से ही वहां के रहने वाले सभी भारतीयों को दुशमन समझने लगे थे। जिसका आधार ही कुरान है क्योंकि दुश्मनों को यातना दे-दे कर मारने का विधान कुरान में ही है। जो पिछले 1985 में चाँद मल चोपरा नामक वकील ने कलकत्ता उच्च न्यायालय में इन्हीं आयतों को इकट्ठा कर के प्रमाण दिया था। पर मैं आजादी लिख रहा हूँ । तो जिस दिन आजादी मिली भारत के लोगों की दोनों आँखों में आँसू थे। पर एक आँख में दर्द के आँसू थे और दूसरी में खुशी के आँसू। क्योंकि वर्षों साधना के पश्चात् तुम आये थे। और स्वतन्त्र भारत के प्रधानमन्त्री ने प्रथम बार लाल किले पर अपने देश का झंडा फहराया था कितना जन समुदाय उमड़ पड़ा था, उस अनोखे दृश्य को देखने के लिये । तुम्हें याद है न ? मैं तुम्हीं

से पूछता हूँ कि कितने सालों से लगातार तुम आते हो या आ रहे हो पर तुम्हारी आगवानी में देशवासियों के पलक अब वैसे क्यों नहीं बिछते? जैसे पहले बिछते थे? जिन्होंने पहले स्वतन्त्रता दिवस का दृश्य देखा है। वह इस परिवर्तन को देखकर चकित होते हैं। क्योंकि हमारे देश में आज भी ऐसे नामाकुल शैतान पैदा हो गये हैं। जो कहते हैं आजादी से पहले ही अंग्रेजी राज्य ही अच्छा था।

मेरे विचार से ऐसे लोगों ने आजादी के सही अर्थ को समझा नहीं। शायद वह नहीं जानते कि प्रत्येक अधिकार के साथ कुछ कर्त्तव्यों की श्रृंखला भी जुड़ी होती है। उन कर्त्तव्यों का पालन लोगों ने किया ही नहीं और उल्टा आजादी को ही कोसने लगे। जिन लोगों ने आजादी के लिए अपना खूंन तो क्या? पसीना की एक बूंद भी नहीं बहाई और अपने पूर्वजों द्वारा दिये गये बलिदानों की एवज़ में आजादी मुफ्त में विरासत में मिल गई। वह इस श्रृंखला और मर्यादा को क्या जानें भला?

भारत भर में बच्चों से लेकर बड़ों तक, या सभी नर नारिओं को पता है दो अक्टूबर गांधी जयन्ती है। पर गांधी जैसे लोगों को जिन्होंने अपने पास शरण दिया भारत भवन (INDIA HOUSE) में। मात्र गाँधी को ही नहीं अपितु अनेकों भारत माँ के सपूतों को तैयार किया। जैसा विपिन चन्द्र पाल, मदन लाल ढीघड़ा, बीर सावरकर, रुस्तम जी दुखो जी काम, साया जी गायकवाड़ तथा अनेको क्रान्तिकारियों को जन्म दिया। इतिहास के पन्ने पलटने पर भी वह आर्य समाज के कार्य कर्त्ता तथा ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त तथा ऋषि के स्वप्न साकार करने वाले दयानन्द के हाथ के बनाये गये शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा का नाम लोग जान नहीं पाये और जो जानते भी हैं उनके नाम परन्तु कहना गुनाह समझते । जिन के हाथों से एक भी मक्खी नहीं मरी, उन लोगों के नाम इतिहास में भरे पड़े हैं। अपने को जिन लोगों ने न्योछावर किया-इतिहास में उनके नाम ही नहीं। भारत के बच्चे-बच्चे जानते हैं नेहरू परिवार से तीन को प्रधान मंन्त्री बनाया गया शायद अब चौथा का नम्बर है। किन्तु तीनों भाईयों ने देश के खातिर अंग्रेजों को मार कर अपने प्राणों को बलि वेदी पर चढ़ाया आज की पीढ़ी तो जानती ही नहीं। वह चाफेकर परिवार को,

सच पूछिये तो आजादी अभिशाप नहीं, वरदान है। हे स्वतंन्त्रता दिवस, यह भी तो तुम्हीं अच्छी तरह जानते हो। यह सच है कि अंग्रेज चले गये और देश का शासन भारत वासियों पर आ गया। पर उनके हाथ में, जो शक्ल सूरत से, तो भारतवासी थे। किन्तु बोलचाल और दिमाग से मैकाले के मानस पुत्र थे। उसी का यह परिणाम हुआ कि अंग्रेज तो गये, पर अंग्रेजियत नहीं गई। इतना ही क्यों, जिस साम्प्रदायिकता के विष निवारण के लिये देश के नेताओं ने देश का विभाजन स्वीकार किया था। वहीं साम्प्रदायिकता का विष पहले से कहीं ज्यादा जन-जन पर हावी हो गया है। राष्ट्र में जिस एकता की कल्पना लोगों ने की थी, वह छिन्न-भिन्न हो गई। तथा विघटन-कारी शक्तियाँ आसमान तक चढ़ कर सारे देश को अपने ईशारे पर नचा रही हैं।

भारत के निर्माताओं ने देश के संविधान में सम्प्रदाय निरपेक्षता के आदर्श को अंकित किया था। अब वही सिद्धान्त आपके गले की हड्डी बन गया है। होना तो यह चाहिये था कि किसी भी सम्प्रदाय के नाम पर निर्मित किसी दल को राजनीतिक मान्यता न मिलती, पर हो गया उल्टा। इससे साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया गया। साम्प्रदायिकता को समाप्त करने से पहले साम्प्रदाय वाद को समाप्त करना होगा। क्योंकि जब तक यह सम्प्रदाय है, तब तक साम्प्रदायिकता समाप्त हो ही नहीं सकती। आज भारत में अल्पसंख्यक के नाम से जगह-जगह सेल बनाया जा रहा है। कोई मुसलमानों से पूछे कि ब्रिटेन में या अमरीका में जहां तुम्हारा पर्सनल लॉ नहीं है, और वहाँ बहु विवाह वर्जित है। तो भारत में ही पर्सनल लॉ के लिये आप लोग इतना शोर गुल ही क्यों मचा रहे हैं? इण्डोनेशिया आदि देशों में मुसलमान का खान-पान भारत के सनातनी हिन्दुओं जैसा है तथा प्रायः अरब देशों में सड़कें चौड़ी करने के लिए या इमारतें बनवाने के लिए न मालूम कितनी मस्जिदें और कितने ही कब्रिस्तानों तथा इमारतों को तोड़ा व हटाया गया। एवं सद्दाम हुसैन ने भी कहा था-ऐ भारत वासी मुसलमानों भारत में एक जीर्ण मस्जिद तोड़े जाने पर तुम इतना शोर मचा रहे हो, और न मालूम हमारी इस लड़ाई में अमरीका ने कितनी ही मस्जिदें तोड़ डाली और तुम सब भारतीय मुस्लिम निरब थे। आज भी पाकिस्तान व बंगला देश के दूरदर्शन व रेडियो द्वारा कितने बार परिवार

नियोजन के लिए दिन में कई-कई बार प्रचार किया जा रहा है। किन्तु भारतीय मुसलमान इसे मानने को ही तैयार नहीं। इसी सम्प्रदाय निरपेक्षता के आधार पर अल्पसंखक, बहुसंखक की उपेक्षा करके विशेषाधिकार मांगते हैं। इन्हें भारत में जितने अधिकार प्राप्त हैं, संसार के किसी भी देश में अल्पसंखक को प्राप्त नहीं है, भारत में इनकी मांगे कभी समाप्त नहीं होती।

इस प्रकार इस विघटन-कारी शक्तिओं ने अपने नाखून और दांतों को इतना पैना कर लिया है कि शायद तलवार भी उस के सामने फेल हो जाय। कहीं आदम सेना या लश्करे तोएवा तथा हिजबुल मुजोहेदीन व कहीं शिवसेना या बजरंग दल आदि काम कर रहे हैं। हे स्वतन्त्रता दिवस अब तुम ही बताओं कि हमें किस चीज से स्वतंन्त्रता दिलायी है? बीसवीं सदी में भी लोग जाति वर्ग सम्प्रदायवाद से उपर नहीं उठ पाये, सती प्रथा का प्रचार आज भी जोरों पर है। शायद स्वतन्त्रता दिवस मुझे उत्तर देकर कहेगा कि यह काम मेरा नहीं है। मैंने तो तुम्हें उन विदेशी अंग्रेजों से मुक्ति दिलायी। हाँ यह बात सही है, पर आपने तो उस समय अंग्रेजों से मुक्ति दिलाई। एक ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आने पर भारत गुलाम हुआ था, अंग्रेजों का और आज तो निमन्त्रण देकर ना जाने कितने ही इस्ट इण्डिया जैसी विदेशी कम्पनिओं तथा विशेष कर अंग्रेज व ईसाइयों को बुलाया जा रहा है। सोनिया गांधी के माध्यम से पोप जोन पोल को बुलाया गया। मोहन दास करमचंद गांधी 'नमक आन्दोलन' चलाये अंग्रेजो के विरोध में। क्योकि भारतीय पर नमक बनाने हेतु टैक्स लगाया था अंग्रेजों ने, और आज वही मोहन दास करमचंद गांधी के प्रान्त गुजरात में न मालुम कितने ही हजार वर्ग एकड जमीन उन विदेशी अंग्रेजों को दिया गया नमक बनाने को। मदर देरेसा जैसी ईसाई करण करने वाली महिला को भारत रत्न व सद्भावना पुरुस्कार दिया गया है। और हे स्वतन्त्रता दिवस तुम फिर भी कहोगे कि हम ने अंग्रेजों को भगाकर भारत को स्वतन्त्र किया?

मुझे आज भी सन्देह है कि तुमने हमें स्वतन्त्रता दिलाई होगी कभी? क्योंकि आज तक हमारी वेश भूषा एक नहीं, राष्ट्रीय भाषा को समस्त भारत में लागू नहीं करा पाये। दुर्भाग्य से पिछले दिनों भारत जैसे महान देश के प्रधानमंत्री रहे देवगौड़ा जी जैसों को भी अपनी राष्ट्र भाषा ही नहीं आती। उर्दू

को दूसरी राष्ट्रीय भाषा की मान्यता मिल रही है और इधर भारतीय मूलभाषा संस्कृत लुप्त होती जा रही है। एवं राष्ट्र को प्राय: राजनेताओं को राष्ट्रीयता के बारे में ही पता नहीं कि राष्ट्रीयता को सभी राजनेतागण जानते तो राष्ट्र में रहने वालों नागरिकों का कानून व आचार संहिता को भी एक ही रखते या बनाते। जाति व वर्ग विशेष हेतु कानून अलग नहीं होता। फिर न कश्मीर मसला आता और न कश्मीरियों का धारा 370 आता व नागालैण्ड वासिओं के लिये न 371 आता और न ही यह नागालैण्ड वासी ही अपने को भारत से अलग समझते तथा अन्यों प्रान्त के रहने वाले नागालैण्ड में अपने ही मुल्क में अपने को प्रवासी समझते।

हे स्वतन्त्रता दिवस आज मैं तुम से एक सच्ची बात पूछता हूँ, क्या तुम बताओगे? वंकिम चन्द्र चट्टो पाध्याय ने जो राष्ट्रीय गान लिखा था प्रत्येक 15 अगस्त में आकर क्या उसे ही तुम सुनते हो? या रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने जो अंग्रेजों को भारत का भाग्य विधाता कहा उसे ही सुनते हो? शायद भारत के लोग आज भी तुम्हें धोखा दे रहे हैं। क्योंकि यह लोग तुम्हें प्रत्येक वर्ष यही सुनाते हैं। पंजाब सिंध गुजरात मराठा आदि, पर तुमने आज तक भारत वासियों को यह क्यों नहीं पूछा? कि ऐ धोखे बाजों सिंध कहां है तुम्हारे पास, जो मुझे-सुना रहे हो? जहां तक मैं देख और सुनरहा हूं आज पिछले कई वर्षों 15 अगस्त तुम्हारे आगवानी में लोग तुम्हें यही सुनाते होंगे। तू चीज बड़ी हे मस्त-मस्त तू चीज बड़ी है मस्त। तुम्हें क्यों सुनना पड़ा यह सब? तो मेरे से सुनो। भारत के लोग तुम्हें धोखे से लाये, यहां के लोग श्याम जी कृष्ण वर्मा को धोखा दिया। वीर सावरकर को धोखा दिया एवं सुभाष चन्द्र बोस को धोखा देकर ही तुम्हें लाये थे और आज ऐसे ही लोगों के हाथ में बागडोर है जिन लोगों ने राष्ट्र के इन कर्णधारों को धोखा दिया है।

आज के वह राज नेता भारत के बागडोर को अपने हाथों लेना चाहते हैं - जिन्होंने सुभाष चन्द्र बोस को जापान का गुप्तचर बताया कुत्ता जैसा कार्टून बना कर जंजीर डाल कर अखबार में घसीटता हुआ सुभाष चन्द्र बोस को दिखाया था। मात्र इतना ही नहीं-अपितु भारत वर्ष में नारा लगाते रहे पाकिस्तान बनाना होगा फिर भारत स्वाधीन होगा। यह नारा उन लोगों का था

जो भारत में जन्मे महापुरुषों का चित्र अपने कार्यालय में नहीं लगाते। अपितु राशिया व चायना में जन्में लेनीन माँवसेतुंग होचीमीन आदि के चित्र से ही कार्यालय भरें हों। ऐ स्वतन्त्रता दिवस तुम बोलो ना, यह सब सच है या नहीं?

स्वतन्त्रता दिवस हम तुम्हीं से पूछते हैं, तुमने हमें कैसी आजादी दिलाई? जिन अंग्रेजों ने भारतवासिओं को सत्ता का लालच देकर अंग्रेज द्वारा ही राजनीति पार्टी कायम किया देश को 59 वर्ष तक चलाते रहे क्षेत्रफल में जितना बड़ा भारत मिला था क्या आज भी उतना बड़ा है?

हे स्वतन्त्रता दिवस तुम खामोश क्यों हो? आज मैं तुम्हीं से पूछना चाहता हूँ कि आखिर तुम कुछ तो बोलो, कि हमें किस बात की आजादी दिलाई है? हां-यह तो जरुर है-फूलन देवी जैसों को चुनाव लड़ने की आजादी मिली थी। मायावती को चन्द्रशेखर जैसे क्रान्तिकारी को राष्ट्रद्रोही, आतंकवादी कहने की आजादी तो जरुर मिली है। राबड़ी देवी जैसी अंगूठाटेक महिला को मुख्यमंत्री बनने की आजादी तो अवश्य मिली है।

परमात्मा का एक ही उपदेश अपनी सन्तानों के लिए पर्याप्त है

*****

सृष्टि रचाने वाले परमात्मा ने असंख्य जीव उत्पन्न किये हैं उन स जीवों में मानव को ही सबसे उत्कृष्ट प्राणी बताया, जिसका मूल कारण मानव को दो प्रकार का ज्ञान दिया है, अन्य जीव जन्तु में मात्र सामान्य ज्ञान है किन्तु मानव को सामान्य व नैमित्तिक दोनों ज्ञान दिया है। यही कारण है कि सभी जिम्मेदारी मानव पर ही है। क्योंकि मानव के पास दो प्रकार का ज्ञान होने से कर्म का दायित्व बढ़ गया। बाकि जितनी भी योनियाँ हैं मात्र भोग ही है। उनके लिए कर्म नहीं है, परन्तु मानव कर्म व भोग दोनों को लेकर चलता है।

यही कारण मानव कहलाने के अधिकारी हम सभी बने हैं। अगर हम मानव कहलाने वाले अपने दायित्वों का निर्वाह न करें या नैमित्तिक ज्ञान का पालन न करें तो मानव में और पशु में कोई भी अन्तर नहीं रह जायेगा।

यही कारण बना मानव को सीखना पड़ता है पशुओं को सीखना नहीं पड़ता। जैसे एक नवजात शिशु को तालाब में डाल दें तो, वह डूब जायेगा पर पशु के बच्चे को पानी में डालें तो वह तैरकर दूसरे पार निकल जायेगा। किन्तु मानव के बच्चों को जब तक तैरना नहीं सिखाया जाता वह पानी में नहीं तैर सकता और डूब जायेगा। मानव ज्ञानवान कहलाने का हकदार बना तथा सभी प्रकार के प्रयास मानव मात्र के लिये हैं।

मानव के लिए ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यह चारों हैं। पशु केवल काम तथा अर्थ से सम्बन्ध रखता है, न धर्म को जानता है और न मोक्ष प्राप्त कर सकता है। यही कारण है सभी प्राणियों में मानव को ही उत्कृष्ट प्राणी कहा गया।

अब मानव उत्कृष्ट होकर या कहलाकर निकृष्ट तथा पतित न बने, इस कारण मानवों के पिता सृष्टिकर्ता ने अपनी सन्तानों को सारा उपदेश दिया तथा

सचेत किया, कि तुम लोग मेरी सन्तान हो तो गुण भी मेरे ही धारण करो पशुओं के नहीं। अर्थात् चेतावनी देते हुए पिता ने कहा-

उलु कायातुं शुशुलू कयातुंमहि श्यातुं कोकयातुम,
सुपर्णयंतु गृघ्रयातु दृष देव प्रमृण रक्ष इन्द्र।। ऋ. 7/104/22

पिता ने अपने सन्तानों को सचेत किया - उल्लू की चाल को छोड़ो, भेड़िये की चाल को छोड़ो, चकवा-चकवी की चाल को छोड़ो, गरुड़ की चाल को छोड़ो, गिद्ध की वृत्ति को छोड़ो। हे मानव तू इन दुष्टनाशक वृत्तियों को छोड़, वरना जैसा सिल पर रगड़ लगने से पत्थर चूर्ण हो जाता है, तू भी पशुवृत्ति से वैसा ही चूर्ण होकर पतित हो जायेगा।

परमपिता परमात्मा ने अपने सन्तानों से उन पशुओं की वृत्तिओं को दर्शाते हुए बताया कि ओ मेरे अमृत पुत्रों यह पशुओं जैसा अवगुण तुम लोगों को छूने न पाय। इन सभी अवगुणों से ऊपर उठो और पशुओं का नाम भी परमात्मा ने दर्शाया व उन पशुओं की प्रवृत्ति, स्वभाव तथा चलन को याद दिलाते हुए कहा कि यह आदतें मानव में नहीं होनी चाहिये।

पहला नाम उल्लू का बताया कि तू उल्लू मत बन अर्थात् उल्लू की चाल को छोड़ क्योंकि उसे प्रकाश नहीं भाता और अंधेरे को पसन्द करता है तथा उल्लू चाहता है कि सूरज न निकले, यही कारण है कि वह दिन में नहीं देखता।

परमात्मा ने अपने सन्तानों को यही उपदेश दिया कि उल्लू की भांति अंधेरे में चलने वाला न बन, क्योंकि जब तेरे पिता प्रकाश पुंज हैं तो उसकी सन्तानों में भी यही गुण होना चाहिये क्योंकि अंधेरे में कोई अच्छा काम करने पर भी तुझ पर लोग सन्देह करेंगे और अंधेरे में चलना खतरे से खाली नहीं है। अंधेरे में चलने पर हमेशा टकराने की संभावना रहती है। अतः तू उल्लू न बन।

दूसरा नाम परमात्मा ने भेड़िया का लिया और कहा ऐ मानव तू भेड़िया न बन अर्थात् भेड़िये के वृत्ति तुम मानवों में न आने पावे क्योंकि उसमें क्रोध, आक्रमण तथा अपहरण जैसे दुर्गुणों से वह ग्रसित है तथा कई बार

मानवों के बच्चे को उठा लेता है, मार भी देता है और अपना सदृश्य भी बना लेता है अतः तू ईश्वर पुत्र या ईश्वर के अमृत पुत्र कहलाने वाला है। फिर तुझमें यह बुराई क्यों हो? क्या तू बुरी आदतों को लेकर भी अमृत पुत्र बनना चाहता है?

तीसरा नाम ईश्वर ने कुत्ते का लिया और कहा तू कुत्ते की चाल को छोड़ दे क्योंकि उसमें अपने स्वजाति को देखकर भौंकने व काटने की वृत्ति है। अगर तुझमें यह बुराई आ जाये तो समाज की गति रूक जायेगी, समाज का नाश हो जायेगा। कारण समाज की उन्नति में तुझे ही प्रयास करना है। अगर कुत्तों की आदत तुझमें आ जाये फिर तू भी टुकड़ों के पीछे भागता रहेगा क्योंकि कुत्ता भी जिधर टुकड़ा देखता है उधर ही दौड़ता है। यह अवगुण अगर तुझमें आ जाये तो मानवता पर कुठाराघात है। जबकि कुत्ता बड़ा ही वफादार जानवर है, किन्तु उसकी जो वृत्ति है उसने उसकी वफादारी को पीछे छोड़ दिया।

फिर परमात्मा ने चकवा-चकवी पक्षी का नाम लिया और अपनी सन्तानों को उपदेश दिया की तेरे अन्दर इस पक्षी जैसा अवगुण न आने पावे जो अपने बच्चों की परवाह न कर मात्र अपनी इच्छापूर्ति में लगा रहता है और मेढक जैसा उछल कूद व मस्ती लेता रहता है। तुझमें यह अवगुण न आने पावे-कारण तू सामाजिक प्राणी है। समाज की उन्नति का दायित्व तेरे ऊपर है। अतः सभी प्रकार के व्यसनों से तुझे ऊपर उठना है, देवत्व को प्राप्त करना है।

आगे नाम गरुड़ पक्षी का लेकर परमात्मा ने कहा कि उसे खूब घमण्ड है ऊंची उड़ान भरने का और विषधर सांप उसका भोजन है, उसे विष को हज़म करने का घमण्ड है। यह पक्षी इसी गर्व में ही चूर रहता है। तुम मानव होने हेतु तुझमें गर्व नहीं होना चाहिए क्योंकि यह अवगुण है तथा मानवता विरोधी भी। **जिसने गर्व किया है, मिट गए उनके वंश, उन तीनों कुल तुम याद करो, रावण, कौरव, कंस।**

छठा नाम ईश ने गिद्ध का लिया और कहा कि यह लोभी व लालची है। दूसरों की धन पर दृष्टि गड़ी रहती है। अन्यों का मांस नोचने की आदत

है, कहीं भी पड़ा टुकड़ा इसे दिख जाता है। परमात्मा ने कहा **मागृधः कस्य सिद्धनम** किसी के धन का लालच मत कर यह लोभ मानवता को ले डूबता है। **लोभ पापस्य कारणम् = पाप का कारण ही लोभ है, तू लोभी मत बन।**

इन लोभियों ने आर्य समाज नामी संस्था को डुबोने में लगे है। जबकि ' ाश्व में वेद प्रचार कार्य ही आर्य समाज का काम है और अधिकारी ही वेद रूद्ध कार्य करें। कहीं गुरुकुलों की जमीन बेची गई, किसी ने सार्वदेशिक पर व ब्जा किया, कहीं प्रान्तीय सभा पर काबिज हैं। किसी ने कुलपति पद को चिपक लिया। कोई सुनामी लहर के नाम जमा रूपयों को उड़ाया। फिर कहीं देश देशान्तरों से आर्यों के नाम इकट्ठा कर कई एकड़ जमीन व्यक्तिगत लिया किसी ने। परमात्मा के उपदेश तो पीछे रह गया। काश अगर परमात्मा के दिये गये इसी एक ही वेद मन्त्र को आचरण में लाते तो मानव जीवन सफल के लिए एक ही वेद मन्त्र काफी है।

तथाकथित आर्य समाजी बनाम रट्टू तोता

*****

रट्टू तोता वाला प्रवाद बहुत पुराना है, एक व्यक्ति तोता को खूब रटाया था शिकारी आयेगा जाल बिछायेगा, दाना डालेगा, पर तुम लोभ से फंसना मत्। सभी तोते मिलकर यह रट लगाते रहे, पर तोते तो पक्षी हैं, मानव जैसी बात तो हैं नहीं? एक दिन शिकारी आया, जाल बिछाया, और दाना भी डाल दिया, अब तोते सब दाने देख कर अपनी रसना को मार नहीं पाये, और सब के सब उन दानों को चुगने में त्वरित गति से भाग कर उदर पूर्ति में एक दूसरे को मात देने लगे।

शिकारी तो जाल बिछा कर ही दाना डाला था, एक, एक कर सभी तोते जाल में ही फंस गये।

कारण तोता तो कोई मानव नहीं? कि साधारण ज्ञान तथा नैमित्तिक ज्ञान दोनों हो? फिर मानव में और पशु में अन्तर क्या रह जायेगा? अतः मानव और पशु में क्या भेद है, इस की व्याख्या आर्य समाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द ने आर्य समाजियों को तोते जैसा ही रटाया था,

आर्य समाज के संस्थापक देव दयानन्द ने अपनी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मानवता का पाठ पढ़ाते हुये, समग्र आर्य जनों को जन्म से ले कर मृत्यु पर्यन्त क्या करना चाहिये, और क्या नहीं करना चाहिये, कब करना चाहिये, और कब नहीं । खाने, पीने, उठने, बैठने, पढ़ने, लिखने से ले कर मानव जीवन का कोई ऐसा विषय नहीं, जिस पर स्वामी जी ने प्रकाश न डाला हो।

विशेष कर ऋषि दयानन्द मानव मात्र को वेदों के साथ जोड़ना चाहा और वेदों को ही आधार मान कर सब को वेदोक्त धर्म को जीवन में उतारने का उपदेश दिया, तथा वेदों से ही ईश्वर का पाना सम्भव है बताया, अन्यत्र किसी भी ग्रन्थ में परमात्मा का पाना सम्भव नहीं कहा, तथा प्रमाण दिये। ऋषि दयानन्द मानव मात्र को ईश्वर के साथ सम्बन्ध जोड़ने का भी उपदेश

दिया, यहां तक कि आर्य समाज के दस नियमों में पांच बार सत्य का ही उच्चारण किया और पहले नियम में सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है लिखा।

परमात्मा को पदार्थ विद्या का आदि मूल माना है, ऋषि ने यह मानकर आर्य समाज के दूसरे नियम में उस परमेश्वर के नामों का परिचय दिया। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता हैं।

उस परमात्मा के साथ अपना नाता कभी भी न तोड़ने का उपदेश दिया, मात्र ऋषि दयानन्द इस उपदेश से परमात्मा के साथ आर्यो को अपना नाता बनाये रखने को कहा । जिससे प्रत्येक आर्य जन हर बुराई से बच सके, क्योंकि परमात्मा के साथ जिसका अटूट सम्बन्ध बनता है, वह चोरी चुगली झूठ तथा अन्याय, अनाचार, अत्याचार, अविचारों से बचता रहता है, ईर्ष्या, द्वेष, घमण्ड आदि दुर्गुणों से भी ऊपर उठता है, सभी प्रकार के ऐष्णाओं से भी अपने को मुक्त रखने का प्रयास करता है। क्योंकि उसके मन में सदासर्वदा परमात्मा का भय रहता है, कि कोई देखे या न देखे परमात्मा देख रहा है, यहाँ जो भावना है या धारणा है, उसे कूट-कूट कर ऋषि दयानन्द ने आर्य जनों में तोते जैसा रटाया है।

वेद से सभी प्रमाणों को इकट्ठा कर आर्य जनों के सामने प्रस्तुत किया है, तथा ईश्वर पर अटूट श्रद्धा रखने का उपदेश दिया, तथा अनेक बार विष पान कर भी स्वयं को तैयार किया। यहाँ तक कि मृत्यु शैया में पड़े ईश्वर आस्था व ईश्वर विश्वास को देख कर गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे ईश्वर की सत्ता को झुठलाने वाले भी आस्थावान हो गये, जो एक ऐतिहासिक प्रमाण है।

तीसरा नियम में वेद सब सत्य विद्या का पुस्तक है, जिसे पढ़ना-पढ़ाना व सुनना-सुनाना आर्यो का परम धर्म लिखा, और वेद ही सब सत्य विद्याओं का पुस्तक क्यों ? वेद से ही सभी प्रमाण दे कर ऋग्वेदादिभाष्यभुमिका पुस्तक लिखकर आर्य जनों को परिश्रम न करना न पड़े, अपने उपर सभी मुसीबतों को

लिया, जैसे किसी नरेश का तलवार चलाना, कहीं ईंट व पत्थर से लहु लहान होना किसी का पान में विष देना और दयानन्द को बलि चढ़ाने तक की मुसीबतों को अपने ऊपर लिया, ताकि आर्य जनों को किसी भी परेशानी का सामना करना न पड़े। अर्थात् ऋषि दयानन्द ने मात्र आर्य जनों को सही और सच्चा रास्ता बताने के लिए जिन विपत्तियों का सामना किया, मात्र उसे ही लिखा जाय तो, एक मोटी पुस्तक बन जायगी।

यहां तक कि ऋषि दयानन्द उस अंग्रेजी काल में डंके की चोट से कुरान तथा बाइबिल पर टिपण्णी की, और अनेक पादरियों को शास्त्रार्थ में परास्त किया, फिर उन्हें मात दे कर वैदिक धर्मी बनाया था। यह परम्परा उस दयानन्द काल से लेकर अबतक चली आ रही थी जो 1983 से मैं आर्य समाज में आ कर देखा स्व. अमर स्वामी जी को स्व. ओमप्रकाश खतौली को, सव. पं. शान्ति प्रकाश जी को, स्व आचार्य विश्व बन्धु जी को, कितने विद्वानों का *नाम लिखूं ? बहुत बड़ी कतार हैं विद्वानों की, वेद के एकेश्वर वाद से कुरान* छोड़ अनेक कुरान वेत्ताओं ने सत्य सनातन वैदिक धर्म को स्वीकारा है, जिसका एक अंग मैंभी हूँ ।

मेरे पास इन 24 वर्षों का अनेक प्रमाण है जो इस्लाम जगत् के विद्वानों के पास ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश में किये गये प्रश्नों का कोई जवाब ही नहीं है, प्रमाण के लिए, कुरान में अल्लाह ने कहा - व मकारू व मकाराल्लाहो वल्ला हू खैरुल माकेरीन-सुरा-इमरान-आयात 54 तथा सुरा अनफाल, आयात 30 अर्थ=मकर करते है वह लोग, मैं भी मकर करता हूँ और मैं अच्छा मकर करता हूं, अब देखें मकर मानी धोखा-जिसे मक्कार कहा जाता, अब अल्लाह भी मानव के साथ धोखा करता है, क्या यह ईश्वर का काम हो सकता है? यही कारण है कि, ईश्वर तथा अल्लाह में भेद है, जिसका प्रमाण दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में वेद और कुरान की तुलना की है। ठीक उसी प्रकार वेद व वाईबिल को सामने रक्खा, तथा सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम चार समूल्लास में प्रमाण दिया है। इस सत्यार्थ के जवाब में मौलवी सना उल्लाहक ने हक प्रकाश लिखा, जिसका जवाब पं. चमुपति जी ने चौदहवीं का चांद लिखा, आज तक इस्लाम जगत के विद्वानों से जवाब नहीं

मिल पाया, जानकारी के लिए, यह पुस्तक चौदहवीं का चाँद Out of Print हो गया था, 1989 में स्व. प्रो. उत्तम चन्द्र जी शरर ने मुझे पढ़ने को दिया, उसे पढ़कर मैंने सार्वदेशिक सभा प्रधान स्व. स्वामी आनन्दबोध जी को कहा आप आनन्द सुमन, अमरेश आदि, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी व पं. चमुपति की नकल उतार रहे हैं, आप उनको छाप रहे हैं, जबकि खजाना आपके पास मौजूद है। अर्थात वह किताब मैंने उनको दिया। मैं सार्वदेशिक का प्रचारक था स्वामी जी ने मेरी बात मानली और पं. शिवराज जी से उर्दू व हिन्दी दोनों में ही सार्वदेशिक प्रकाशन से प्रकाशित किया गया, मुझे भी 25 किताबें दी गई।

और एक जानकारी मेरा कार्य क्रम था आजमगढ़ आर्य समाज श्री अक्षय वर मुनि जी के समाज में कई मौलाना मुझे सुनने को आते रहे, उसमें मौलाना मंजूर अहमद थे, मेरे से प्रभावित हो कर मिलने को आये, काफी वार्ता के वाद मैंने उनको चौदहवीं का चाँद पुस्तक भेट किया। दो महिना के बाद उनका पत्र आया, आप ने मेरी आँखें खोलदी, मैं अपना नाम ज्ञान प्रकाश रख लिया है आप हक के लिये दुआ कीजिये।

पुनः 20 दिन के बाद मेरा कार्यक्रम फैजाबाद के गोंसाई गंज में था मैंने उसे वहा बुलाया, तीन दिन हम लोगों के साथ रहा, उसने कहा मैं संस्कृत पढ़ना चाहता हूं उस कार्यक्रम में आचार्य वसुमित्र शास्त्री जी अयोद्धागुरुकुल के कुलपति मौजुद थे, मैने उनसे प्रार्थना की । आचार्य जी मौलाना ज्ञान प्रकाश को अपने साथ ले गये, पर आर्य समाजियों को मैं क्या कहूँ? दो मास भी गुरूकुल में उसे रहने नहीं दिया, उसने मुझे लिखा। फिर में आचार्य चन्द्र देव जी के पास फरुखा बाद गुरुकुल में भेजा और आज वह उच्च माध्यमिक विद्यालय में संस्कृत के मास्टर हैं। मेरे पास उनके सारे पत्र मौजूद हैं, इस प्रकार कई कार्य मैंने किये।

आर्य जनो याद रखना मैंने यह काम निष्काम भाव और बिना किसी लोभ लालच के किया न कि किसी गुरूकुल या समाज का अधिकारी बनने की ईच्छा लेकर।

अब मेरा प्रश्न होगा कि दयानन्द के काल से अब तक सत्यार्थ प्रकाश के चार सम्मुल्लासों में विभिन्न मत, मतान्तरों पर ऋषि द्वारा की गई समीक्षा का जवाब उन मत मतान्तरों के विद्वानों के पास नहीं है, जैसा कुरान सुरा कहाफ, आयात 86 में अल्लाह ने सूरज को कीचड़ वाला तालाब में डूबता है बताया है, यह क्यों और कैसे क्या कोई बुद्धि परख आदमी इस को मान लेंगें? ठीक इसी प्रकार बुद्धि विरुद्ध वातों को ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम चार समुल्लासों में दर्शाया है। और बात जिन मत मतान्तर वालों की है लोगों के पास इसका कोई जवांब ही नहीं है। और न कयामत तक जवाब दे सकते हैं।

पर आज क्या कारण बना कि विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में उस ऋषि कृत सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्त्तन लाने की बात की जा रही है? वह भी एक सिद्धान्त विहीन वैदिक मर्यादा के अनभिज्ञों के द्वारा? कुछ दयानन्द के हत्यारे भी दयानन्द द्वारा दिये गये वैदिक मर्यादा की हत्या करने में तुले हुये हैं। खुशहाल चन्द जैसे एक व्यापारी ने भी वैदिक सार्वदेशिक में इसका समर्थन किया, यही अग्निवेश के खिलाफ खुशहाल चन्द जी ने ऋषि सिद्धान्त रक्षक में मुझे छापने को भेजाथा, जो मेरे फाइल में आज भी लगे हैं।

मैं बताना चाहूंगा ऋषि दयानन्द ने तो तोते जैसा आर्य जनों को रटाया था परमात्मा से डरना, परमात्मा सर्वव्यापक है, कोई न देखे परमात्मा देख रहा है। निष्काम भाव से काम करों संध्या उपासना ध्यान परमात्मा का सदा करते रहना। यज्ञादि परोपकार से अपना नहीं अपितु प्राणी मात्र का कल्याण करना जिससे तुम लोग देवत्व को प्राप्त करो व मोक्ष के भागी बने आदि। जैस तोते को रटाया गया था और फिर वही तोता जाल में फंस गया, ठीक आज आर्य समाजी कहलाने वाले भी वह रट्टू तोते जैसे अपनों को सिद्ध करने में लगे है। दर असल बात यह है कि गलत आदमी जहां कहीं भी होंगे वह तो अपना काम करेंगे उनको वैदिक सिद्धान्त से क्या लेना है। आज सिखों को सन्तुष्ट करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश में दयानन्द की बातों को हटाना चाहते हैं। कल ईसाई व मुसलमानों को सन्तुष्ट करने के लिए, कुरान व बाइबिल की बातों को

हटाने की बात करेंगे, हिन्दू विरोधी होने हेतु यह सत्यार्थ प्रकाश में 11वां समुल्लास पर कुछ नहीं कहेंगे, जब कि बाबा तुलसी दास ने झूठ का सहारा लिया मात्र ईसाई व मुसलमानों को जैसा का तैसा जवाब देने के लिये। जैसा इस्लाम की मान्यता है पैगम्बरे इसलाम ने अंगुली से चाँद को टुकड़ा किया पौराणिकों ने जवाब दिया हनुमान जी सुरज को खा गये।

इस्लाम का मानना है कबर में सजा के इसलिये राजाये इकरा नाम के साँप को छोड़ दिया जायगाा जो मुर्दा को डंसकर 70 गज जमीन के नीचे गाढ़ देगा, जिसका नाखुन 12 क्रोस का है, अब जवाब में कुम्भ का मूंछ 24 क्रोस का है कहा मात्र नेहला पर देहला चलाने को, वरना विशेष कर आज हिन्दुओं को बत्ती जलाकर खोजना पड़ता अस्तु।

फिर देखें कुरान, गुरुग्रन्थ, चारवाक्य, शंकर का अद्धैतवाद व बाईबिलादि पर ऋषि दयानन्द ने जो समीक्षा किया है, उस पर अंगुली उठाने की हिम्मत 1875 से ले कर अब तक किसी भी मत् मतान्तरों की विद्वानों ने नहीं की, और न आर्य जगत में इतने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वान जन्में उन लोगों की भी हिम्मत नहीं हुई, कि सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि की बातों को परिवर्त्तन करना चाहिये?

अचानक एक पाखण्डी सत्यानाशी ने आपना उल्लू सीधा कर आर्यजनों के खिलाफ सिखों को भड़काकर सत्यार्थ प्रकाश का परिवर्त्तन करना चाह रहे हैं, क्या भगत सिंह के परिवार का कोई सत्यार्थ प्रकाश नामी ग्रन्थ को नहीं पढ़ाथा? फिर उन परिवार वालों ने सत्यार्थ प्रकाश में गुरुग्रन्थ पर दयानन्द के विचारों को क्यों और कैसे स्वीकारा था? सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध सिंध जैसे प्रान्तों में मुसलमानों के प्रयास करने पर भी नहीं लग पाया था, हैदराबाद निजाम का भी प्रयास विफल हो गया था। आज अग्निवेश रूपी नवाब अपने को आर्य समाजी प्रचार कर भी सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्त्तन चाह रहे हैं, जो काम उस समय नहीं हुआ वह आज होने की बात कर रहे हैं। दरअसल भ्रष्ट लोग जहां भी होंगे, वह अपना रंगदारी तो दिखायेंगे ही वरना कौन जानेगा उसे? कल 24 अगस्त 2006 को लोक सभा में सांसद साधु यादव कुर्सी लेकर

दूसरे साांसद को मारने को दौड़े । यह उनके लिये आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि कुछ दिन पहले उनके जीजा लालु प्रसाद यादव जी ने लोक सभा में महिला बिल को फाड़ा था, साधु जी ने तो मात्र मारने को दौडे थे, दरअसल यह लोग नाम से साधु है वृत्ति में साधुता नहीं, ऐसे विचार वाले जहां रहेंगे लोक सभा हो, राज्य सभा हो, या घर परिवार में सब जगह उधम ही मचायेंगे। कारण जो छः हजार के वेतन योग्य नहीं उनको अगर 16 हजार मिले तो वह पैसों की गर्मी को कहां दिखायेंगे भला?

यही हाल अग्निवेश का है नाम के सन्यासी हैं न त्याग है, और न ऐषणाओं से अलग हो पाए, आज वही अग्निवेश रूपी शिकारी समग्र आर्य समाज में जाल बिछाया दाना डाला, आज आर्य कहलाने वाले तोते व मैंना उसी दाने को खाने के लिए जाल में फंसते जा रहे हैं।

कुछ लोग पहले से फंसे हैं कुछ लोग अभी फंस रहें हैं मैं किन का किन का नाम लिखूं? ऋषि दयानन्द जिन-जिन कामों को मना किया उसे ही करने के लिए दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्त्तन करना चाहते हैं कि न रहे बाँस और न बजे बाँसुरी वाली बात हो जाये।

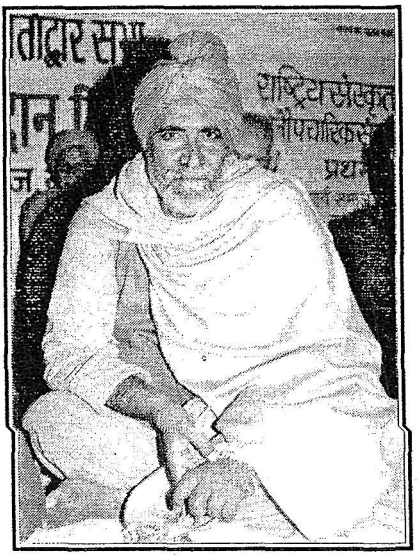

पूज्य स्वामी शिवानन्द जी जो कि स्वामी शक्तिवेश जी के रूप में मुझे मिले हैं। अपने आशीर्वाद व प्रोत्साहन से मुझे निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहते हैं।

स्व. पूज्य आर्यमुनि जी (सीताराम आर्य) का पितृ तुल्य सदा स्नेह मिलता रहा है। आप सदैव भी प्रेरणा देते रहते थे।

आचार्य श्री भवभूति जी ने मुझे अपने बड़े भाई का सम्मान दिया है। वह निरन्तर मेरे परिवार की उन्नति के लिए हमेशा मुझे प्रोत्साहित करते रहते हैं।

श्री रघुवर कुशल जी तथा एमस्टरडम आर्य समाज के प्रधान श्री राजेन्द्र जी इन दोनों महानुभावों के प्रभाव से मैं यूरोप के कई देशों में वैदिक धर्म का प्रचार कर पाया हूँ।

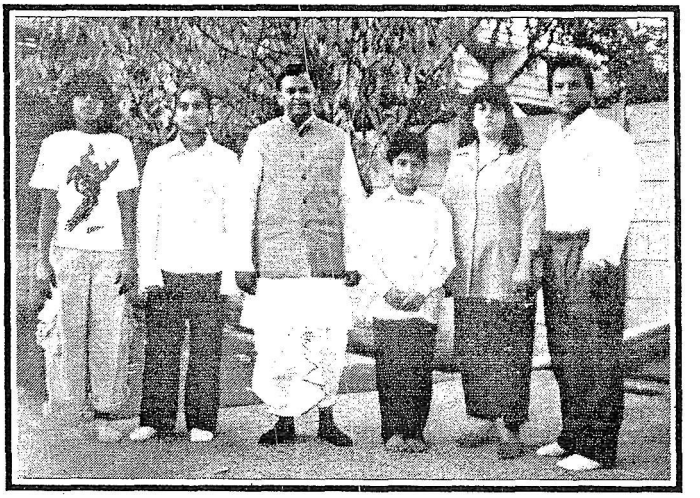

श्री मुकेश बिहारी आर्य परिवार आचार्य श्री नरदेव जी से सम्बन्धित। श्री नरदेव जी तथा यह परिवार ऋषि मिशन के लिए समर्पित है।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण कमांक 5343
दयानन्द महिला महा